9-3

बृहद्यवनजातकम्

॥ श्रीः ॥

बृहद्यवनजातकम्

मुरादाबादनिवासि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत-

हिन्दीटीकासमेतम्

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, प्रकाशन

लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण-बम्बई

प्रस्तावना

सब संसारमें ज्योतिष शास्त्रका चमत्कार प्रसिद्ध है, बड़े २ महाविद्वान् महर्षियोंने इस शास्त्रके अनेक ग्रंथ निर्माण किये हैं। यह एक ऐसा शास्त्र है कि, जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालोंके वृत्तान्त जाने जाते हैं, यदि पूर्ण ज्योतिषी हो तो कैसा भी कुतर्की हो उसको अपनी विद्यासे विश्वास करा सकता है। जबतक इस देशमें ज्योतिषके सिद्धांतग्रंथ लब्ध होते थे और पूर्ण पंडित इस विद्याके पाये जाते थे तबतक जो कुछ वे गणित द्वारा फल कथन करते थे उसमें किसी प्रकारका फेरफार नहीं होता था, कालक्रमसे सिद्धांत ग्रंथोंका लोप होने लगा गुरुमुखसे विद्या उपार्जन करनेमें आलस्य आया सिद्धान्त ग्रंथोंको छिपानेकी परिपाटी चली, शिष्योंने नम्रता त्यागी और दीर्घ काल परिश्रम न करके कार्यवाही मात्रसे वही अपनेको कृतकृत्य मानने लगे तबसे ज्योतिष शास्त्र में कुछ न्यूनतासी आगई और मनुष्योंको भी कुछ कुछ विराग होने लगा तथा कोई २ आक्षेप भी करने लगे, परंतु "सबै दिन नाहिं बरोबर जात" इस वाक्यके अनुसार अंग्रेजी सरकारके राज्यमें कुछ २ फिर विद्याकी वृद्धिके यत्न किये जाने लगे और यंत्रालयोंसे अनेक ग्रंथ प्रकाशित होने लगे तबसे प्राचीन ग्रंथोंकी खोज होने लगी और उनका प्रकाश होने लगा जितने ग्रंथ चाहिये उतने प्रकाशित नहीं हुए हैं तथापि उपयोगी ग्रंथ प्रायः छप चुके हैं मैं आज जिस ग्रंथके विषयमें लिख रहा हूं वह यवनजातक का छोटा सा ग्रंथ छप चुका है परंतु यह उससे बहुत बड़ा है और इसके फल बहुत चमत्कार के हैं इसके अनुसार जन्मपत्रका फल कहनेसे सुननेवाला मोहित हो जाता है एक एक भावमें सात सात विचारोंका कथन किया है जो प्रति हमको ५०

वर्षकी लिखी पं० नारायण दास से प्राप्त हुई उसी प्रतिको यथासंभव शुद्ध कर टीका निर्माण किया है इतना मैं विश्वासके साथ कहता हूं कि, जन्म-कुण्डलीका फल इस ग्रंथमें वहुत उत्तम प्रकारसे कथन किया है (वर्षफल कथनके विषयमें मेरे टीका किये वर्षयोगसमूह ग्रंथसे वर्षफलका वहुत अच्छा फल विदित होता है) यह ग्रंथ कब निर्मित हुआ इसका निर्णय करना दुरूह है परंतु ग्रंथकी उत्तमतामें कोई संदेह नहीं है । इस ग्रंथका सब प्रकार स्वत्व और अधिकार जगत्प्रसिद्ध वैश्यवंश उजागर "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयाध्यक्ष सेठजी खेमराज श्रीकृष्णदासजीको समर्पण कर दिया है. अंतमें पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, यदि कहीं भूल हुई हो तो उसे सुधार लें कारण कि, सर्वज्ञ परमेश्वर ही है ।।

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र,
(दीनदार पुरा) मुरादाबाद

श्री :

बृहद्यवनजातक-विषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका ।

श्रीगणेशाय नमः

बृहद्यवनजातकम्

हिन्दीटीकासमेतम्

द्वादशभावेषु ग्रहभवनेशसहितफलानि लिख्यन्ते । तत्रादौ तनुभवनम् । अमुकाख्यममुकदेवममुकग्रहयुतममुकग्रहावलोकितं न वेति

दोहा—कृष्णचरणपंकज अमल, प्रेमसहित हिय लाय ।
यवनप्रोक्त शुभ ग्रंथको, भाषा लिखत बनाय ।।

अर्थ बारह भावोंका ग्रहसंबंधी फल और भवनोंके स्वामीका फल लिखते हैं । आदिमें तनुभाव है, उसका फल देवता, ग्रहयोग, ग्रहदृष्टि तथा स्वामीकी दृष्टि वा योगसे कहना चाहिये ।।

तंत्र विलोकनीयानि

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जतिर्वयसः प्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ।।१।।

रूप, वर्णका निर्णय, चिह्न, जाति, अवस्थाप्रमाण सुख, दुःख, साहस यह संपूर्ण विचार लग्न अर्थात् तनुभावसे करना चाहिये ।।१।।

लग्नफलम्

मेषोदये जन्म यदा भवेच्च स्वपित्तरोगं स्वजनापमानम् ।
दुष्टैर्वियोगं कलहं च दुःखं शस्त्राभिघातं च धनक्षयं च ।।१।।

यदि मेष लग्नमें जन्म हो तो पित्तका रोग, अपने जनोंसे अपमान, दुष्टोंसे वियोग, कलह, दुःख, शस्त्रसे आघात और धनक्षय होता है ।।१।।

वृषोदये श्वेततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधपरः कृतघ्नः ।
सुमन्दबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकः सदैव ।।२।।

यदि वृष लग्नमें मनुष्यका जन्म हो तो वह श्वेतवर्ण कफप्रकृति, क्रोधी, कृतघ्नी, मंदबुद्धि, स्थिरतायुक्त, दूसरोंसे पराजित और स्त्रीका भृत्य होता है ।।२।।

तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरः स्त्रीवित्तचिन्तापरिपीडिताङ्गः ।
दूतः प्रसन्नः प्रियवाग्विनीतः समृद्धियोगी च विचक्षणश्च ।।३।।

मिथुन लग्नमें जन्म हो तो पुरुष गौरवर्ण, स्त्री धन चिन्तासे पीडित-शरीर दूत, प्रसन्न, प्रियवचन बोलनेवाला, नम्र समृद्धिमान्, योगी और चतुर होता है ।।३।।

कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः पुष्टतनुः प्रगल्भः ।
जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिः शुचिःक्षमी धर्मरुचिः सुखी स्यात् ।।४।।

जो कर्कमें जन्म हो तो गोरा शरीर, पित्त अधिक, पुष्टशरीर, वाचाल, जलमें घुसकर स्नानमें प्रीति करनेवाला, बुद्धिमान्, पवित्र, क्षमावान्, धर्म-रुचि और सुखी होता है ।।४।।

सिंहोदये पाण्डुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः ।
प्रियामिषोऽरण्यचरः सुतीक्ष्णः शूरःप्रगल्भः सुतरां नरो हि ।।५।।

सिंहमें जन्म हो तो वह मनुष्य पाण्डुशरीर, पित्त और वातसे पीडित शरीरवाला, मांसप्रिय, तीक्ष्णस्वभाव, शूर और प्रगल्भ होता है ।।५।।

कन्याविलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यः सुखकान्तिमांश्च ।।
श्लेष्मार्दितः स्त्रीविजनः सुभीरुर्मायाधिकः कामकदर्थिताङ्गः ।।६।।

कन्यालग्नमें जन्म हो तो वह मनुष्य कफ पित्तसे युक्त, सुखी, कांति-मान्, श्लेष्माके विकारसे पीडित, स्त्रीवियोगी, भीरु मायावान्, कामसे पीडित अंगवाला होता है ।।६।।

तुलाविलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्मान्वितः सत्यपरः सदैव ।
पुण्यप्रियः पार्थिवमानयुक्तः सुरार्चने तत्पर एव कल्पः ।।७।।

तुलामें जन्म हो तो वह मनुष्य श्लेष्मासे युक्त, सत्यवादी होता है,

पुण्यप्रिय, राजाका माननीय, देवताओंके अर्चनमें तत्पर और समर्थ होता है ॥७॥

लग्नेऽष्टसे कोपपरो न सत्यो भवेन्मनुष्यो नृपपूजिताङ्गः ।
गुणान्वितः शास्त्रकथानुरक्तः प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम् ॥८॥

वृश्चिक लग्नमें जन्म हो तो वह मनुष्य क्रोधी, असत्यवादी, राजासे पूजित, गुणवान्, शास्त्रकथामें अनुरक्त (धर्मवादी) नित्य शत्रुनाशक होता है ॥८॥

चापोदये राज्ययुतो मनुष्यः कार्यप्रधृष्टो द्विजदेवभक्तः ।
तुरङ्गयुक्तः सहृदः प्रयुक्तस्तुरङ्गजङ्घश्च भवेत्सदैव ॥९॥

जो धन लग्नमें जन्म हो तो राज्ययुक्त, कार्यमें ढीठ, द्विज देवताओंका भक्त, घोडोंसे युक्त, मित्रोंसे प्रयुक्त, अश्वकी जंघाओंके तुल्य जंघावाला होता है ॥९॥

मृगोदये तोषरतः सुतीव्रो भीरुः सदा पापरतश्च धूर्तः ।
श्लेष्मानिलाक्ष्यां परिपीडिताङ्गः सुदीर्घगात्रः परवञ्चकश्च ॥१०॥

मकर लग्नमें जन्म हो तो वह मनुष्य संतोषी, तीव्रस्वभाव, भीरु, सदा पापमें प्रीति करनेवाला, धूर्त, कफ वातसे पीडित, दीर्घ शरीर, दूसरे को वंचित करनेवाला होता है ॥१०॥

घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकः स्तेयनिवेशदक्षः ।
सुस्निग्धशत्रुप्रमदास्वभीष्टः सिद्धानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥११॥

कुंभ लग्नमें जन्म हो तो स्थिरस्वभाव, अधिक वातवाला, परद्रव्य हरण करनेमें चतुर, स्निग्धशत्रु, स्त्रीजनोंका प्यारा, सिद्धोंमें अनुरक्त और कुटुंबप्रिय होता है ॥११॥

मीनोदये पापरतो धनाढ्यो भवेन्मनुष्यः सुरतानुकूलः ।
सुपण्डितः स्थूलतनुः प्रचण्डः पित्ताधिकः कीर्तिसमन्वितश्च ॥१२॥

मीन लग्नमें जन्म हो तो वह पुरुष पापरत, धनी और सुरतमें अनुकूल होता है, श्रेष्ठ पंडित, स्थूल शरीर, प्रचंड स्वभाव, अधिक पित्तवाला, कीर्तियुक्त होता है ॥१२॥ इति तनुभावे लग्नफलम् ॥

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

लग्नेऽर्केऽल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतो
मानी लोचनरुक्सुकर्कशतनुः शूरोऽक्षमी निर्घृणः ।
फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहे निशान्धः पुमान्
दारिद्योपहतो विनष्टतनयो जातस्तुलायां भवेत् ।।१।।

लग्नमें सूर्य हो तो थोडे केशवाला, कार्य करनेमें आलसी, क्रोधी, प्रचंड उन्नत, अभिमानी, नेत्ररोगी, कर्कशशरीर, शूर, अक्षमावान्, दयारहित होवे। यदि लग्नमें कर्कका सूर्य हो तो फुल्लाक्ष होता है और मेषका हो तो स्थितिका हरनेवाला होता है, सिंहका सूर्य हो तो रतोंधी होवे, तुलाका हो तो दरिद्री और पुत्रहीन होता है ।।१।।

चंद्रफलम्

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्यश्चन्द्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ।
उन्मत्तनीचबधिरो विकलश्च मूकः शेषे पुमान् भवति हीनतनुविशेषात् ।।२।।

जो कर्क वृष और मेष राशिका चंद्रमा लग्नमें हो तो वह मनुष्य चतुर रूपवान् धन और भोग गुणोंसे प्रधान होता है। यदि वह चंद्रमा उक्त राशियोंसे अन्य राशिका हो तो उन्मत्त नीच बहिरा विकल और गूंगा तथा हीनशरीर होता है ।।२।।

भौमफलम्

अतिमतिभ्रमतां च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहससंगतम् ।
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च ।।३।।

जो लग्नमें मंगल हो तो बुद्धिमें महाभ्रम हो तथा शरीरमें क्षत हो और वह पुरुष बड़ा साहसी होता है गमनागमनमें सदा रत रहता है ।।३।।

बुधफलम्

शान्तो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ।
विद्वान्कलावान्विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे ।।४।।

जो लग्नमें बुध हो तो शांत, विनीत, उदार, सदाचारयुक्त, धैर्यवान्, विद्वान्, कलाओंका जाननेवाला, बहुत पुत्रयुक्त होता है ।।४।।

गुरुफलम्

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ।
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते देवगुरौ बलाढ्ये ।।५।।

जो बलवान् बृहस्पति लग्नमें हो तो वह पुरुष विद्यावान्, राजाओंको प्रिय, बुद्धिमान्, कृतज्ञ अत्यंत उदार और सुंदर शरीरवाला होता है ।।५।।

भृगुफलम्

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवः पुमान् ।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावमुपागते ।।६।।

जो लग्नमें शुक्र हो तो वह पुरुष अनेक कलाओंमें चतुर, निर्मल उक्तियोंका करनेवाला, सुंदर स्त्रीके साथ कामसुखके अनुभवसे युक्त, पृथ्वीपति करके मान और धनसे युक्त होता है ।।६।।

शनिफलम्

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनौ स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगते विलग्ने ।
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषर्क्षसंस्थे सरुजं दरिद्रम् ।।७।।

जो लग्नमें उच्च या स्वमूलत्रिकोणका शनैश्चर हो तो वह पुरुषको देश तथा पुरका अधीश्वर करता है। यदि वह उक्त राशियोंसे अन्य राशियोंमें स्थित हो तो रोगी और दरिद्री करता है ।।७।।

राहुफलम्

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवञ्चकम् ।
शीर्षव्यथां कामरसेन युक्तं करोति वादैर्विजयं सरोगम् ।।८।।

लग्नमें राहु हो तो उस पुरुषकी खोटी मति, दुष्ट स्वभाव हो, अपने मनुष्योंका वंचक, शिरव्यथासे युक्त, कामरसमें लिप्त, विवादमें जीतनेवाला और रोगी होता है ।।८।।

केतुफलम्

केतुर्यदा लग्नगः क्लेशकर्ता सरोगाद्विभोगाद्भयं व्यग्रता च ।
कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरेऽपि बाधा व्यथा मातुलस्य ।।९

जो लग्नमें केतु स्थित हो तो क्लेश करनेवाला, रोगी, भोगसे भयभीत और व्यग्रता करता है, स्त्री आदिकी चिन्ता, महा उद्वेग, शरीरमें बाधा, तथा मामाको पीडा होती है ।।९।। इति तनुभावे ग्रहफलम् ।

अथ तनुभवनेशफलम्

तनुपतिस्तनुगो मदनानुगो गतरुजं कुरुते बहुजीवितम् ।
अतिबलो नृपतेः कुलमन्त्रिणं सुखविलासयुतं सधनं सदा ।।१।।

जो जन्मलग्नका स्वामी जन्मलग्नमेंही स्थित हो वा सप्तममें हो तो रोगरहित चिर जीवन करता है, अति बलवान् हो तो राजाका कुलमंत्री, सुखविलास और धनयुक्त करता है ।।१।।

तनुपतिर्धनभावगतो भवेद्धनयुतं पृथुदीर्घशरीरिणम् ।
विलघुजीवितमन्त्रकुटुम्बिनं विविधधर्मयुतं कुरुते नरम् ।।२।।

यदि लग्नेश धनस्थानमें प्राप्त हो तो धनी, विस्तारयुक्त, दीर्घ शरीर, दीर्घायु, मंत्रयुक्त, कुटुम्ब और अनेक धर्मयुक्त मनुष्यको करता है ।।२।।

तनुपतिः सहजे सहजप्रदो भवति मित्रयुतोऽपि पराक्रमम् ।
बलहतश्च सदा न पवित्रतां शुभवचः शुभदृष्टिवशान्नृणाम् ।।३।।

जो लग्नेश तीसरे घरमें हो तो सहजकी वृद्धि करता है, मित्रयुक्त हो तो पराक्रम देता है, बलसे हीन हो तो अपवित्रता और शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो शुभवचन बोलनेवाला होता है ।।३।।

सुखगते तनुते तनुपे सुखं विविधभक्ष्यविलाससुपूजितम् ।
नृपतिपूज्यतमं जननीसुखं गजरथाश्वसुखं सुरसाशिनम् ।।४।।

जो लग्नेश सुखस्थानमें हो तो सुख करता है तथा मनुष्यको अनेक भक्ष्य और विलाससे युक्त करता है, राजाओंमें पूज्य हो, माताका सुख हो, हाथी घोड़ोंका सुख और अच्छे पदार्थ खानेवाला हो ।।४।।

तनुपतिः सुतगस्तनुते सुतान्विनयधर्मयुतान्बहुजीवितान् ।
विदितमिश्रखलः शुभकर्मणां भवति गानकलासु रतो नरः ।।५।।

लग्नेश पंचम घरमें हो तो विनय और धर्मसे युत, दीर्घजीवी पुत्र उसके होते हैं, जैसे ग्रहके साथ हो वैसा फल कहना, अच्छा स्वरवाला अच्छे कर्म और गानकलामें निरत होता है ।।५।।

रिपुगतस्तनुपः सरिपुं नरं सहजमायुसुतं सुखमातुलम् ।
पशु कृतं जननीसुखसभृतं कृपणमेव धनैर्विविधैर्युतम् ।।६।।

लग्नेश छठे स्थानमें हो तो उसके शत्रु हों, आयुवान् हो, पुत्र और मामाका सुख हो, पशु और मातासे सुख हो अनेक धनोंसे युक्त मनुष्य कृपण होता है ।।६।।

प्रथमलग्नपतिर्मनुजः स्त्रियं सुखधनैः शुभशीलविलासिनम् ।
सविनयं वनितोपयुतं च हि सकलरूपयुतं कुरुते सदा ।।७।।

लग्नेश सप्तम हो तो मनुष्य स्त्री धनका सुख पावे, अच्छे शील और विलाससे युक्त, विनयवान्, सकल रूपवान् करता है ।।७।।

प्रथमभावपतिर्मृतिगो मृतिं विदधते कृपणं धनवञ्चकम् ।
विविधकष्टयुतं शुभदृष्टितो भवति मानवपुः कृतवान् सुधीः ।।८।।

जो लग्नेश अष्टम हो तो मृत्यु हो वह मनुष्य कृपण और धनवंचक हो, तथा अनेक कष्ट हों और अच्छे ग्रहोंकी दृष्टि हो तो मान बड़ाई युक्त बुद्धिमान् होता है ।।८।।

तनुपस्तिनुते तपसा युतं सहजमित्रवदान्यविदेशकृत् ।
सुखसुशीलनिरेकयशोनिधिर्नृपतिपूज्यतमो मनुजो नृणाम् ।।९।।

जो लग्नेश नवम हो तो तपस्वी, भाई मित्रोंसे युक्त, प्रवासी, सुख शीलका स्थान, यशस्वी, राजोंमें पूज्य, मनुष्योंमें प्रतिष्ठित होता है ।।९।।

दशमधामगते तनुनायके जनकमातृसुखं नृपतेः समम् ।
सकलभोगसुखं शुभकर्मणां कविवरं गुरुपूजनकं वरम् ।।१०।।

जो लग्नेश दशम घरमें हो तो माता और पिताका सुख हो राजाकी समान हो, संपूर्ण भोगोंका सुख हो तथा शुभकर्मोंका कर्ता और गुरुपूजन करनेवाला होता है ।।१०।।

सुबहुजीवित आयगते नरस्तनुपतौ शुभभावसमन्विते ।
गजरथाश्वसकोशनृपात्सुखं विविधकीर्तिविवेकविचारणः ।।११।।

लग्नेश ग्यारहवें स्थानमें हो तो पुरुष दीर्घजीवी हो और तनुपति शुभभावसे संयुक्त हो तो हाथी, घोड़े धनका राजासे सुख हो, अनेक प्रकारकी कीर्ति और विवेक विचारवान् हो ।।११।।

तनुपतिर्व्ययगः कटुवाक्पुमान्खलसमागमदाहकरो घृणी ।
व्ययकरः सहजः परदेशगः सहजगोत्ररिपुर्ह्यरिसंयुतः ॥१२॥

जो लग्नेश बारहवें स्थानमें हो तो मनुष्य कटुभाषी, दुष्ट समागमवाला, दाहयुक्त, घृणी होता है, खर्च करनेवाला, स्वभावसे परदेशगामी, भाई गोत्रवालोंका रिपु और शत्रुयुक्त हो ॥१२॥

इति तनुभावपतिफलम्

अथ दृष्टेः फलम्

रविदृष्टिफलम्

तनुगृहे यदि सूर्यनिरीक्षिते भ्रमति देशविदेशमसौ सदा ।
सुकृतभाग्यफलं सुकृतक्षयं गृहसुखं च करोति निपीडितम् ॥१॥

यदि तनुस्थानको सूर्य देखता हो तो मनुष्य देश विदेशमें भ्रमण करता रहे, सुकृत भाग्य फल हो, सुकृतका क्षय हो गृहसंबंधी सुख हो पीडा भी हो ॥१॥

चंद्रदृष्टिफलम्

तनुगृहे यदि चन्द्रनिरीक्षिते विकलतां च करोति नरस्य हि ।
तदनु मार्गगते च जलं सदा सरलता सुकलाक्रयशोभितः ॥२॥

तनुस्थानको यदि चंद्रमा देखे तो मनुष्यके शरीरमें विकलता होती है और मार्गगमन, सरलता, सुंदरकला और क्रयवृत्ति होती है ॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

आद्यभावसदने कुजेक्षिते पित्तकोपग्रहणीरुजः सदा ।
अङ्घ्रिनेत्रविकलं करं नरं जीवितोऽपि तनयादिनाशनम् ॥३॥

जो लग्नको मंगल देखता हो तो पित्तका कोप और ग्रहणी रोग भी हो, चरण और नेत्रमें विकलता हो जीवित रहे तो उस पुरुषके पुत्र आदि नष्ट हो जाते हैं ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

तनुगृहे यदि चन्द्रसुतेक्षिते वणिजराजकुले पुरुषोन्नतिः ।
स्वजनसौख्ययुतः प्रसवः स्त्रियस्तदनु जीवचिरायुकरो भवेत् ।।४।।

जो लग्नको बुध देखता हो तो व्यापारमें या राजकुलमें पुरुषकी उन्नति होती है, स्वजनोंमें सुख हो कन्याका जन्म हो और संतान चिरायु हो ।।४।।

गुरुदृष्टिफलम्

तनुगृहे यदि देवपुरोहिते गृहसुखं प्रचुरं खलु भाग्यवान् ।
सकलवित्तगृहे ग्रहसंबले व्ययकरश्च चिरायुयुतो भवेत् ।।५।।

यदि वृहस्पति लग्नको देखता हो तो पुरुषको गृहसंबंधी सुख हो और वह भाग्यवान् हो और ग्रहोंसे युक्त अर्थात् वलवान ग्रह हो तो वह व्यय करनेवाला और दीर्घायु होता है ।।५।।

भृगुदृष्टिफलम्

संपूर्णदृष्टिर्यदि जन्मलग्ने शुक्रो यदा स्यात्तनुरुत्तमा च ।
नानार्थसंभोगकलत्रसौख्यं सौन्दर्यरूपं खलु भाग्ययुक्तः ।।६।।

जो शुक्र लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता हो तो शरीर उत्तम होता है अनेक अर्थोंका संभोग, स्त्रीसुख सुंदर रूप और वह निश्चयसे भाग्यवान् होता है ।।६।।

शनिदृष्टिफलम्

तनुगृहे यदि मन्दनिरीक्षिते तनुसुखं न करोति नरः सदा ।
अनिलपीडितवातरुजो भवेन्न च गुणाधिक आलयकृद्भवेत् ।।७।।

जो शनि शरीरस्थानको देखता हो तो शरीरमें सुख नहीं होता, अति-वातसे पीडित वातरोगी हो, गुणी अधिक न हो और स्थान वनानेवाला हो ।।७।। इति तनुभावोपरि सर्वग्रहदृष्टिफलानि ।।

अथ तनोग्रहवर्षसंख्याफलम्

सप्तविंशति चन्द्रमाः सुखकरं सूर्यस्तिथिः पीडनं
भौमो बाण अरिष्टकालकदश कीर्ति बुधो यच्छति ।
प्रजास्वष्टमवत्सरे सुरगुरुर्दैत्येश्वरः सप्तभूः
दारान्यः परतः शराकितमसारिष्टं करोति ध्रुवम् ।।८।।

तनुस्थानपर ग्रहोंका संख्याफल कहते हैं—चंद्रमाकी २७ वर्षकी अवस्था सुखकी करनेवाली, सूर्यकी १५ वर्ष पीडाकारक है, मङ्गलकी पांच वर्ष अरिष्ट करती है, वुधकी दश वर्ष कीर्ति देती है, गुरुकी आठ वर्ष संतानदाता, शुक्रकी सात वर्ष स्त्रीसुख और शनि राहुकी पांच वर्ष अरिष्ट करती है ॥८॥ इति तनुभावे वर्षफलम् ॥

अथ विचार :

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ।
कुल नृपालो विपुलायुरेवाभयेन युक्तोऽरिकुलस्य हन्ता ॥१॥

यदि लग्नमें सव ग्रहोंकी दृष्टि हो तो लीलायुक्त विलाससे सहित वलवान् हो तथा कुलमें राजा हो, दीर्घजीवी, भयरहित और शत्रुकुलका नाश करनेवाला होता है ॥१॥

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वन्ति जातं नृपतिं विनीतम् ।
पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितान्तं बहुभक्षकं च ॥२॥

जिसके जन्मकालमें लग्नमें तीन शुभग्रह स्थित होंय वह नम्रतासे युक्त राजा होता है और यदि लग्नमें तीन पापग्रह स्थित होवें तो दुःख दरिद्र शोकसे युक्त और निरंतर बहुत भोजन करनेवाला होता है ॥२॥

लग्नाद्द्यूनषडष्टकेऽपि च शुभाः पापैर्न युक्तेक्षिताः
मन्त्री दण्डपतिः क्षितेरधिपतिः स्त्रीणां बहूनां पतिः ।
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौन्दर्यसौख्यान्वितः
सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा ॥३॥

जो लग्नसे सातवें, छठे, आठवें शुभग्रह स्थित हो और पाप ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न हों तो वह पुरुष मंत्री, दंडपति, वा भूमिपति, बहुत स्त्रियोंका पति दीर्घायु, रोगहीन, भयरहित, सुंदरता और सुखसे युक्त, उत्तम शीलसे युक्त, सदा प्रसन्न रहता है यह यवनेश्वरने कहा है ॥३॥

मेषे शशाङ्कः कलशे शनिश्च भानुर्धनुःस्थश्च भृगुर्मृगस्थः ।
परस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः ॥४॥

मेषमें चंद्रमा, कुंभमें शनि, धनुषमें सूर्य और मकर राशिमें शुक्र हो तो वह मनुष्य दूसरेका धन नहीं भोगता और अपने भुजाओंके बलसे उपार्जन कर भोगता है ॥४॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः ।
नरो दरिद्रो नितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥५॥

जो केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें पापग्रह स्थित हो और धनस्थानमें भी पापग्रह हों तो वह मनुष्य महादरिद्री और अपने कुलमें उत्पन्न हुओंको भयंकर होता है ॥५॥

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः ।
नरस्तपस्वी विजितेन्द्रियश्च स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः ॥६॥

बृहस्पति पांचवें वा लग्नमें हो, दशम भावमें चंद्रमा हो तो वह मनुष्य तपस्वी, इन्द्रियोंका जीतनेवाला और राजसी बुद्धिसे युक्त होता है ॥६॥

कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः
सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुले श्रेष्ठताम् ।
नूनं याति नरो विचारचतुरश्चौदार्यजातादरो
नित्यानन्दमयो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥७॥

कन्या वा तुलामें बृहस्पति हो, मेष वा वृषका शुक्र हो, बुध वृश्चिक में हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य कुलमें श्रेष्ठ, विचारमें चतुर, उदारता, आदरयुक्त, नित्य आनंदसहित गुणोंमें श्रेष्ठ, निष्ठावान् और धनी होता है ॥७॥

षष्ठे ससौरौ भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौरपरो नितान्तम् ।
कुकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात्परान्नपाणिः कुगुणस्थितश्च ॥८॥

जो छठे भावमें शनैश्चर करके सहित बुध और मंगल स्थित हों तो वह पुरुष महाचोर होता है विशेषसे कुकर्मकी सामर्थ्य विधिसे दूसरेके अन्नका ग्रहण करनेवाला और अवगुणोंसे युक्त होता है ॥८॥

प्रसूतिकाले किल यस्य जन्तोः कर्केऽर्कजश्चेन्मकरे महीजः ।
चौर्यप्रसंगोद्भवचंडदंडशाखादिदण्डाश्च भवंति नूनम् ॥९॥

जिसके जन्म समयमें कर्कके शनि मकरके मंगल हों तो उसको चोरीके प्रसंगसे दंड मिले और शाखादि दंड उसको अवश्य होते हैं ॥९॥

कुम्भे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः ।
कुचेष्टितःस्यात्पुरुषो नितांतं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य ॥१०॥

जिसके जन्मसमयमें कुंभ, मीन, मिथुन, धनुषके, पाप ग्रह पड़े हों तो वह पुरुष अत्यन्त वुरी चेष्टावाला हो और निश्चयसे उसकी वज्रसे मृत्यु हो ॥१०॥

यस्य प्रसूतौ किल नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च ।
तीर्थान्यनेकानि भवंति तस्य नरस्य सम्यङमतिसंयुतश्च ॥११॥

जिसके जन्मकालमें अष्टम भावमें शुभग्रह स्थित हो और शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो उस मनुष्यको अनेक तीर्थोंका दर्शन हो और वह श्रेष्ठ वुद्धिसे युक्त हो ॥११॥

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केन्द्रस्थचन्द्रेण निरीक्षिते च ।
राजान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ॥१२॥

जो लग्नमें वुधका द्रेष्काण हो और केन्द्रस्थानमें स्थित चंद्रमा देखता हो तो वह मनुष्य राजकुलमें उत्पन्न हुआ भी अवश्य नीच कर्मोंका करनेवाल होता है ॥१२॥

भानुर्द्वितीये भवने शनिश्च निशीथिनीशो गगनाश्रितश्च ।
भूनन्दने चैव मदे तदानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरश्च ॥१३॥

सूर्य और शनि दूसरे स्थानमें हों चन्द्रमा दशम स्थानमें हो; मंगल सप्तम स्थानमें हो तो मनुष्य हीनकलेवर होता है ॥१३॥

पापांतराले च भवेत्कलावान्किलार्कसूनुर्मदनालयस्थः ।
कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥१४॥

जो पाप ग्रहके अंतरालमें चंद्रमा हो, शनि सप्तम हो तो उस मनुष्यका शरीर श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्म रोगसे व्याकुल हो ॥१४॥

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे ।
एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ॥१५॥

जो चंद्रमा सूर्यके नवांशकमें स्थित हो, सूर्य चंद्रमाके नवांशमें हो और ये दोनों एकत्र स्थित हों तो मनुष्य अवश्य लक्ष्मीसे हीन होता है ॥१५॥

व्ययेऽरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्चराः स्युः ।
बलान्वितास्ते त्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥१६॥

जो बारहवें, छठे, अष्टम, दूसरे घरमें चंद्रमा, मङ्गल, सूर्य, शनि स्थित हों और वे बलिष्ठ हों तो मनुष्य वातकी अधिकतासे तेज करके हीन नेत्रोंवाला होता है ॥१६॥

धनव्ययस्थानगताश्च शुक्रो वक्रोऽथवा कर्णरुजं करोति ।
नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनीन्द्रैः ॥१७॥

जो शुक्र वा मङ्गल धन वा व्यय स्थानमें हो तो कर्णरोग होता है, जो चंद्रमा भी वहीं स्थित हो तो नेत्ररोग करता है ऐसा मुनींद्र कहते हैं ॥१७॥

यदि भवंति हि कार्श्यतनुर्भवेत्तनुगता रवि राहुकुजार्कजाः ।
रुधिरपाण्डुपराः परतापदाः शुभतमा गददानकरा विदुः ॥१८॥

जो लग्नमें सूर्य, राहु, मंगल और शनि हों तो शरीर कृश होता है, रुधिर पाण्डुरोग हो, परतापदायक हो शुभग्रहोंसे युक्त हों तो भी रोग करते हैं ॥१८॥

तनुगतं खलखेचरमन्दिरं त्रिदशपूज्यशशाङ्कसमन्वितम् ।
शिरसि घातगदानिलशूलयुग्भवति नातिबलो जठराग्निना ॥१९॥

जो पाप ग्रहकी राशि लग्नमें हो और उसीमें बृहस्पति और चंद्रमा हों तो शिरमें आघातरोग, वातशूल होता है और जठराग्निसे अधिक बली नहीं होता है ॥१९॥

गुरुशशांकबुधास्तु जितास्तनौ वपुषि पुष्टिकराः शुभकांतिदाः ।
गदविनाशकराः कथिता बुधैरतिखलाः कृशतापकराः परम् ॥२०॥

जो गुरु, चंद्रमा, बुध तनुस्थानमें हों तो शरीरमें पुष्टि और कांति हो, और रोगका नाश हो और जो क्रूर ग्रह हों तो कृशता और ताप करनेवाले होवें ॥२०॥

एते हि योगाः कथिता मुनीन्द्रैः सांद्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ।
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन ॥२१॥

यह योग मुनियोंने कहे हैं जो ग्रह वलसे युक्त हो उसका फल उसके पाक समयमें निर्मल बुद्धियुक्त पुरुष कहें ॥२१॥

इति भावविवरणं समाप्तम्

अथ द्वितीयं धनभवनम्

अमुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतममुकदृष्टचा चात्र
विलोकितं तथा स्वस्वामिनाद् दृष्टं वा युतं न वेति ॥

भावके नाम, देवता ग्रहोंका योग तथा दृष्टि और अपने स्वामीकी दृष्टि वा योग आदिसे भावफल कहना चाहिये ॥

तत्र विलोकनीयानि

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशेऽपि च संग्रहश्च ।
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥१॥

सुवर्णादि धातु वेंचना, सोना रत्नादिकोंके, खजानेमें संग्रह यह सब वस्तु बुद्धिमानोंको धनस्थानमें देखना चाहिये ॥१॥

अथ धनभावे लग्नफलम्

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यं धनैश्च पूर्णं विविधैः प्रसूतैः ।
भाग्याधिकं भूरिकुटुंबयुक्तं चतुष्पदाढ्यं बहुपंडितज्ञम् ॥१॥

धनस्थानमें मेष लग्न हो तो मनुष्य धनसे पूर्ण अनेक संतान वाले होते हैं, भाग्य अधिक, अधिक कुटुंववाला, चौपायोंसे पूर्ण तथा बहुत पंडितज्ञ होता है ॥१॥

वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रयासेन धनं सदैव ।
अनाभिघातश्च चतुष्पदाढ्यं तथा हिरण्यं मणिमुक्तकार्थम् ॥२॥

धनभावमें वृष लग्न हो तो मनुष्योंको कृषिके प्रयाससे सदा धनकी प्राप्ति होती है, तथा अनाघात, चतुष्पदोंकी प्राप्ति, हिरण्य मणि और मुक्ताकी प्राप्ति होती है ॥२॥

तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं लभेत्स्त्रीजननश्च नित्यम् ।
रूप्यं तथा काञ्चनजं प्रभूतं दयाधिकं पुष्टिभिरेव सख्यः ॥३॥

यदि धनस्थानमें मिथुन लग्न हो तो मनुष्यको धन प्राप्त होता है कन्या संतानवाला हो, चांदी, सोना अधिक होता है दया अधिक तथा प्रीतिमान् होता है ।।३।।

चतुर्थराशिर्धनगो मनुष्यो धनं लभेद् वृक्षजमेव नित्यम् ।
जायोद्भवं सत्सुखमिष्टभोज्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम् ।।४।।

जो धनस्थानमें कर्क लग्न हो तो मनुष्यको नित्य वृक्षोंके संबंधसे धनकी प्राप्ति होती है, तथा स्त्रीसे प्राप्त इष्ट भोज्य और सुखको भोगता है और नीतिसे सञ्चित तथा पुत्रोंकी प्रीति करनेवाला होता है ।।४।।

सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनान्तपारं नृजनोत्तमांशम् ।
सर्वोपकारप्रवणं प्रभूतं स्वविक्रमोपर्जितमेव नित्यम् ।।५।।

सिंह लग्न धन स्थानमें हो तो मनुष्यको धनकी प्राप्ति, मनुष्योंसे उत्तम धन पानेवाला, सबका उपकार करनेवाला, अपने पराक्रमसे नित्य धन उपार्जन करने वाला होता है ।।५।।

कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेः सकाशात् ।
हिरण्यरूप्ये मणिमुक्तजातं गजाश्वनानाविधवित्तजं च ।।६।।

कन्या लग्न यदि धनमें हो तो राजासे धनकी प्राप्ति होती है, हिरण्य, चांदी, मणि, मोती, हाथी, घोड़ोंसे अनेक धन प्राप्त होते हैं ।।६।।

तुले धनस्थे बहुपुण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम् ।
पाषाणजं मृण्मयभूमिजातं सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ।।७।।

धनस्थानमें तुला लग्न हो तो पुण्यसे बहुतसा धन मनुष्यको प्राप्त होता है, तथा पत्थर, मृत्तिका भूमिसे उत्पन्न और अन्नसे प्राप्त धन कर्मके द्वारा उपलब्ध होता है ।।७।।

धनेऽलिलग्ने प्रभवे च यस्य स्वधर्मशीलं प्रकरोति नित्यम् ।
विलासिनीकामपरः सदैव विचित्रवाक्यं द्विजदेवभक्तम् ।।८।।

जिसके धनस्थानमें वृश्चिक लग्न हो वह मनुष्य धर्मशील, स्त्रियोंमें आसक्त, विचित्र वचन बोलनेवाला, देव द्विजोंका भक्त होता है ।।८।।

धनुर्धरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेत्स्थैर्यविधानजातम् ।
चतुष्पदाढ्यं विविधं यशश्च रणोद्भवं धर्मविधानलब्धम् ।।९।।

धनस्थानमें धनलग्न हो तो उस मनुष्यको धनुष बाणादि कर्तव्यसे धन मिले और चौपायोंसे आढच हो तथा धर्मविधानसे प्राप्त युद्धोद्भव, अनेक प्रकारका धन होवे ॥९॥

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रपञ्चैर्विविधैरुपायैः ।
निजेच्छयाऽथो वशकृन्नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेशमङ्गात् ॥१०॥

धनस्थानमें मकर लग्न हो तो वह मनुष्य अनेक उपाय और प्रपंचसे धन प्राप्त करे, अपनी इच्छासे राजोंको प्रसन्न करे, कृषिक्रिया और विदेशमें धन प्राप्त करे ॥१०॥

घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम् ।
जलोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोऽर्थं च परोपकारैः ॥११॥

जो धनस्थानमें कुंभ लग्न हो तो वह मनुष्य फल, पुष्प और जलसे उत्पन्न द्रव्योंके द्वारा धन एकत्र करता है, साधु महात्माओंका सत्कार करनेवाला, परोपकारमें धनव्यय करता है ॥११॥

मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यों धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः ।
विद्याप्रभावान्निधिसङ्गमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितं च ॥१२॥

जो धनस्थानमें मीन लग्न हो तो वह मनुष्य नियम उपवासादि पूजापाठसे धनकी प्राप्ति करे, विद्याके प्रभावसे वा निधिके लाभ से धन पावे, तथा माता और पितासे सम्यक् सञ्चित किये हुए धनकी प्राप्ति होवे ॥१२॥

इति धनभावे लग्नफलम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ।
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणिर्द्रविणे यदि संस्थितः ॥१॥

जो धनस्थानमें सूर्य हो तो वह मनुष्य धन, पुत्र तथा उत्तम वाहनसे रहित, हतबुद्धि, सुजनोंसे मित्रता त्यागनेवाला, पराये घरमें निवास करता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधौ द्वितीये ।
क्षीणे स्खलद्वाग्विधनोऽल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम् ॥२॥

जो धनस्थानमें पूर्ण चंद्रमा हो तो मनुष्य सुख, पुत्र और द्रव्यसे युक्त होता है और नम्र होता है। यदि क्षीण चंद्रमा हो तो स्खलितवाणी, निर्धन, अल्पबुद्धि होता है, बलकी न्यूनाधिकतामें फलका भी न्यूनाधिकत्व जानना ॥२॥

भौमफलम्

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयाऽतिविहीनताम् ।
तनुभृतां विदधाति विरोधितां धननिकेतनगोऽवनिनन्दनः ॥३॥

जो धनस्थानमें मंगल हो तो मनुष्य धनहीन, कुत्सित मनुष्योंके आश्रयवाला, बुद्धिहीन, कृपारहित मनुष्योंका विरोधी होता है ॥३॥

बुधफलम्

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहासुखः ।
विपुलकान्तिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने ॥४॥

जो धनस्थानमें बुध हो तो मनुष्य उत्तम शीलयुक्त, गुरुसे प्रीति करनेवाला, कुशलतासे प्राप्त बड़े सुखवाला, विपुलकान्तिमान् और उन्नतिसे युक्त होता है ॥४॥

गुरुफलम्

सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरो नितरां गरीयान् ।
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवन्द्ये द्रविणोपयाते ॥५॥

जिसके धनस्थानमें बृहस्पति हो वह मनुष्य श्रेष्ठ रूप, विद्या गुण और यशयुक्त, वैरहीन, अत्यंत गंभीर स्वभाव, त्यागी, सुशील, धनसे पूर्ण होता है॥५॥

भृगुफलम्

सदन्नपानाभिरतं नितान्तं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम् ।
विचित्रविद्यं मनुजं विदध्याद्धनोपपन्नो भृगुनन्दनोऽयम् ॥६॥

जिसके धनस्थानमें शुक्र हो वह मनुष्य उत्तम अन्न और पान करनेमें अत्यंत अनुरक्त तथा अच्छे वस्त्र आभूषण धन सवारीसे युक्त और विचित्र विद्यावान् होता है ॥६॥

शनिफलम्

अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात् ।
देशान्तरे वाहनराजमान्यो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥७॥

जो धनस्थानमें शनि हो तो वह मनुष्य व्यसनोंसे अभिभूत और सुजनोंसे त्यक्त हो, पीछे देशांतरमें वाहन और राजमान्यताको प्राप्त होता है ॥७॥

राहुफलम्

धनगते रविचन्द्रविमर्दने मुखरतांकितभावयुतो भवेत् ।
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां स्वसुहृदां न करोति वचोग्रहम् ॥८॥

जो धनस्थानमें राहु हो तो वह पुरुष मुखरतासे अंकित भावसे युक्त हो तथा धनका नाश करनेवाला दरिद्री हो और अपने मित्रोंका कथन न माने ॥८॥

केतुफलम्

धने केतुगे धान्यनाशं धनं च कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद् द्रव्यचिन्ता ।
मुखे रोगता सन्ततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहे च सौख्यम् ॥९॥

जो धनस्थानमें केतु हो तो धन और धान्यका नाश कुटुंबसे विरोध, राजासे धनकी चिन्ता और मुखमें निरन्तर रोग हो, जो केतु अपनी राशिमें वा शुभग्रहकी राशिमें स्थित हो तो सुख होता है ॥९॥

इति धनभावे ग्रहफलम्

अथ धनभवनेशफलम्

द्रव्याधिपे लग्नगते धनी स्याद्व्यापारवृत्तिः कृपणोऽतिभोगी ।
सुखान्वितो भूपतिसत्कृतो भवेत्सुकर्मकृत्सुन्दरनेत्रपत्नी ॥१॥

जो द्रव्येश लग्नमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य धनवान्, व्यापारवृत्तिवाला, कृपण, अतिभोगी और सुखी हो, तथा राजोंसे माननीय, सुकर्म करनेवाला हो, स्त्रीके सुंदर नेत्र हों ॥१॥

द्रव्याधिपे द्रव्यगते धनी स्यात्पुमान्भवेल्लाभयुतोऽपि मंत्री ।
कुटुम्बयुक्तो मणिरत्नभोगी विभूषितो भोगयुतो जितेन्द्रियः ॥२॥

यदि धनेश धनस्थानमें हो तो वह मनुष्य धनी, लाभवान्, मंत्री, कुटुंबसे युक्त, मणि रत्नभोगी, विभूषित, भोगी और जितेन्द्रिय होता है ।।२।।

धनाधिपे भ्रातृगते खलः स्यात्सोद्वेगयुग्भ्रातृसुखेन हीनः ।
सूर्योद्भवे भ्रातृगते विरोधी चौरः कुजे चार्कसुते विबन्धुः ।।३।।

जो धनेश तीसरे स्थानमें हो तो वह मनुष्य खल, उद्वेगयुक्त और भाइयोंके सुखसे हीन होता है, जो सूर्य हो तो भाइयोंसे वैर करे, मंगल हो तो चोर हो और जो शनि हो तो बंधुसे हीन हो ।।३।।

धनाधिपे तुर्यगते धनी स्यान्मातुर्गुरोर्लब्ध धनः सतेजाः ।
आयुष्यवान्सौम्यखगैः सदैव क्रूरैर्दरिद्रो बहुरोगभाक्स्यात् ।।४।।

जो धनेश चौथे स्थानमें हो तो वह पुरुष धनी हो, माता और गुरुजनोंसे द्रव्य मिले, तेजस्वी, दीर्घायु हो, सौम्य ग्रहोंसे युक्त दृष्ट होनेसे यह फल है और यदि क्रूरग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य दरिद्री और अनेक रोगोंसे युक्त होता है ।।४।।

धनाधिपे पंचमगे सुतानां सौख्यं भवेल्लाभसमन्वितं च ।
सौम्यैरुदारः कृपणः खलैश्च दुःखान्वितं दुष्टसुतं विदध्यात् ।।५।।

जो धनेश पंचम हो तो पुत्रोंके लाभसे युक्त सुख सव होता है, सौम्य ग्रहसे युत वा दृष्ट हो तो उदार और क्रूरग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो कृपण होता है, तथा उसकी संतान दुःखसे युक्त दुष्ट स्वभाववाला होता है ।।५।।

धनाधिपे षष्ठगृहे रिपुघ्नं सदा नरं सञ्चयकारकं च ।
बलाभिभूतैः खचरैः शुभैश्च पापैर्दरिद्रः सरिपुः खलः स्यात् ।।६।।

जो धनेश छठे घरमें वलवान् शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शत्रुका नाश हो, वह मनुष्य सदा धन संचय करे, और पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो दरिद्री, शत्रुओंसे युक्त और खल होता है ।।६।।

धनाधिपे सप्तमगे सुरूपं चिन्तान्वितं संग्रहणी धनी स्यात् ।
भार्याविलासेन युतः सुताढ्यः क्रूरान्विते हीनसुतो नरः स्यात् ।।७।।

जो धनेश सप्तम हो तो वह मनुष्य रूपवान्, चितायुक्त, संग्रहणी रोगवाला, धनी होता है, भार्याके विलाससे युक्त, पुत्रवान्, होता है, क्रूरग्रह होनेसे पुत्रहीन होता है ।।७।।

धनाधिपो मृत्युगतः करोति मनाक्कलिं घातकरं स्वदेहे ।
उत्पन्नभुग्भोगयुतं सुरूपं धनाधिपं भावयुतं पुमांसम् ।।८।।

जो धनेश अष्टम हो तो थोड़ा कलह करनेवाला और आत्मघाती होता है तथा स्वयं उत्पन्न करके खानेवाला, भोगवान्, रूपवान्, धन और भावसम्पन्न होता है ।।८।।

धर्माश्रिते द्रव्यपतौ स दाता प्रसिद्धभाग्यः सबलो व्रती स्यात् ।
पुण्ये रतिः सौम्ययुतः खलेन हीनो दरिद्रः कृपणः खलः स्यात् ।।९।।

जो धनस्थानका स्वामी नवम घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य दाता, प्रसिद्ध भाग्यवान्, बली, व्रती होता है, पुण्यमें प्रीति करनेवाला होता है यह सौम्य ग्रहोंसे युक्तका फल है। क्रूरग्रहसे युक्त हो तो हीन, दरिद्र, और कृपण होता है ।।९।।

द्रव्याधिनाथो दशमे यदि स्यान्नरेन्द्रमान्यः सुभगो यशस्वी ।
मातुः पितुर्भक्तियुतः सुभोगी खलेऽन्यथा स्यात्पितृमातृवैरी ।।१०।।

जो दशम घरमें धनेश हो तो वह मनुष्य राजमान्य, सुरूपवान् और यशस्वी होता है, माता पिताकी भक्तिवाला, भोगी होता है। दुष्ट ग्रहोंसे माता पिताका द्रोही होता है ।।१०।।

लाभाश्रितो द्रव्यपतिः श्रियः पतिर्मन्त्री नृपस्य व्यवहारदक्षः ।
व्यापारयुक्तः पुरुषो यशस्वी लाभान्वितो भोग्यपरः सुखी च ।।११।।

जो धनेश ग्यारहवें हो तो वह पुरुष लक्ष्मीका पति, राजाका मन्त्री होता है, व्यवहारमें निपुण, व्यापारयुक्त, यशस्वी, लाभवान्, भोग्यपर और सुखयुक्त होता है ।।११।।

विदेशगो दुष्टमना व्ययाश्रितो द्रव्याधिपः पापरतो जडात्मा ।
कापालिको म्लेच्छजनाभिसक्तः क्रूरोऽतिचौरोबलवान्नरः स्यात्।।१२

जो धनेश बारहवें हो तो वह मनुष्य विदेश जानेवाला, दुष्टमन, द्रव्यका स्वामी, पापी जडात्मा, कपाली म्लेच्छजनोंकी संगति करनेवाला, क्रूर, चोर और बली होता है ।।१२।। इति धनभावे भवनेशफलम् ।

अथ धनभावे दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

धनगृहे सति भास्करवीक्षिते पितृधनः पितृनाशकरश्च हि ।
स्वपराक्रमजीविचतुष्पदात्सुखकरोऽपि च गुह्यनिपीडनम् ॥१॥

धनस्थानमें यदि सूर्यकी दृष्टि हो तो पिताका धन प्राप्त हो और पिताका नाशक है, अपने पराक्रमसे जीविका करनेवाला, चौपायोंसे सुखी, गुह्य स्थानमें पीडायुक्त होता है ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

कुटुम्बभावे यदि चन्द्रदृष्टिः कुटुम्बसौख्यं ह्यतुलं करोति ।
स्ववंशवृद्धिं स्वशरीरपीडां जलाद्भयं लोहभयं समाष्टके ॥२॥

धनस्थानपर यदि चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो कुटुम्बका महान् सुख होता है, अपने वंशकी वृद्धि करनेवाला, शरीरमें पीडा हो, आठवें वर्षमें जल या लोहेसे भय हो ॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

कुटुम्बगेहे यदि भौमदृष्टिः कुटुम्बसौख्यं न भवेन्नरस्य हि ।
द्रव्यस्य प्राप्तेर्विलयो दिनेदिने गुदोदरे व्याधिरुगर्दितः स्यात् ॥३॥

धनस्थानमें यदि मंगलकी दृष्टि हो तो मनुष्यको कुटुंबका सुख न हो, दिन दिन द्रव्यकी प्राप्ति न्यून हो, गुदा और उदरमें व्याधिसे पीडा होय ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

धनगृहे सति चन्द्रसुतेक्षिते धनसुखं ह्यतुलं च भवेत्सदा
तदनु भाग्ययुतो बहुजीवितः सकल भोगविलासयुतो नरः ॥४॥

धनस्थानको यदि बुध देखता हो तो उस मनुष्यको सदा धनका सुख हो और वह मनुष्य भाग्यवान्, चिरंजीवी, संपूर्ण भोग विलाससे युक्त होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

धनगृहेऽमरपूजितवीक्षिते धनचयं प्रकरोति नरः सदा ।
बहुलभाग्ययुतः शुभबुद्धिमान्स्वजनपूर्णसुखं प्रकरोति हि ॥५॥

जो बृहस्पति धनस्थानको देखता हो तो वह मनुष्य अधिक धन संचय करे, महाभाग्यसे युक्त बुद्धिमान्, अपने जनोंको पूर्ण सुख करनेवाला होता है ।।५।।

भृगुदृष्टिफलम्

धनगृहे सति शुक्रनिरीक्षिते धनसुखं च करोति दिनेदिने ।
स्वजनसौख्यकरो नितरां सदा श्रमकरः स्वजनारिविनाशकः ।।६।।

जो धनस्थानको शुक्र देखता हो तो दिनोंदिन धनसे सुखकी वृद्धि होती है, वह मनुष्य अपने कुटुम्बको प्रसन्न करनेवाला, श्रमी, अपने हितकारियोंके शत्रुका नाश करता है ।।६।।

शनिदृष्टिफलम्

धनगृहे सति मन्दनिरीक्षिते धनविनाशकरस्वजनो रिपुः ।
तदनु वर्षत्रयोदशकष्टकृत्सलिलतो भयमप्यथ वायुजम् ।।७।।

धनस्थानको यदि शनि देखता हो तो धनका नाश करे, उस मनुष्यके कुटुम्बी शत्रुता करें, तेरहवें वर्षमें जल अथवा वायुसे उस मनुष्यको कष्ट हो ।।७।।

राहुदृष्टिफलम्

कुटुम्बभावे यदि राहुदृष्टिः कुटुम्बसौख्यं न करोति पुंसाम् ।
जलाद्भयं चैव चतुर्दशेऽब्दे तथाऽष्टमे वर्ष उपैति मृत्युम् ।।८।।

धनस्थानमें यदि राहुकी दृष्टि हो तो उस पुरुषको कुटुम्बका सुख न हो, चौदहवें वर्षमें जलसे भय तथा अष्टम वर्षमें मृत्यु हो यही केतुका भी फल है ।।८।। इति दृष्टिफलम् ।

अथ धनभावे ग्रहाणां वर्षसंख्या

अत्याष्टवर्षहानी रविमीनो धनेन्दुमाब्दे प्रपीडितमसृग् नवाब्दे स्वनाशं षट्त्रिंशकैर्धनकीर्तिं विदधे गुरुमाब्दे भूपमानमुशना हि खषष्टिलक्ष्मीम् ।। १ ।।

सूर्यकी दशा १७ वर्ष हानि करे, चन्द्रमाकी २७ धनप्राप्ति, मंगलकी ९ दुःख रुधिरविकार करे, बुधकी ३६ धनलाभ, बृहस्पति २७ राज्यमान, शुक्रकी ६० वर्ष लक्ष्मीकी प्राप्ति हो ।।१।। इति वर्षसंख्या ।।

अथ विचारः

भानुभूतनयभानुतनूजैश्चेद्धनस्य भवनं युतदृष्टम् ।
जायते हि मनुजो धनहीनः किं पुनः कृशशशीक्षितयुक्तम् ॥१॥

सूर्य, मंगल, शनि यह तीनोंही धन स्थानको देखते हों तो मनुष्य धनहीन हो और हीन चन्द्रमा युक्त वा देखता हो तो अवश्य निर्धन हो ॥१॥

धनालयस्थौ किल मङ्गलेन्दू इन्द्वीक्षितो मन्दविलोकितश्च ।
शनिर्धनस्थानगतः करोति धनाभिवृद्धिं हि बुधेन दृष्टः ॥२॥

यदि धनस्थानमें मंगल और चंद्रमा स्थित हों वा चन्द्रमा और शनि देखता हो वा शनि धनस्थानमें हो और बुध देखता हो तो धनकी वृद्धि करता है ॥२॥

धने दिनेशोऽतिधनानि नूनं करोति मन्देन च वीक्षितो वा ।
शुभाभिधाना धनभावसंस्था नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ॥३॥

यदि धनस्थान में सूर्य हो और शनि उसको देखता हो तो निश्चय धनकी प्राप्ति हो और जो धनभावमें शुभग्रह स्थित हों तो अनेक प्रकारका धन प्राप्त करते हैं ॥३॥

गीर्वाणवन्द्यो द्रविणोपयातः सौम्येक्षितः स्याद्द्रविणं करोति ।
सौम्येन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात् ॥४॥

जो बृहस्पति धनस्थानमें हो और उसको सौम्य ग्रह देखता हो तो धनकी प्राप्ति करता है और जो धनभावमें प्राप्त वुधको शभग्रह देखता हो तो धनकी हानि करता है ॥४॥

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशाङ्कोऽपि धनादिकानाम् ।
पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबन्धनं च ॥५॥

धनस्थानमें निर्बल चंद्रमा स्थित हो और उसपर बुधकी दृष्टि हो तो पहलेके संग्रह किये हुए धनादिका नाश हो और आगे उसको धनकी प्राप्ति न हो ॥५॥

वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः ।
स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्ताप्तिकरो नराणाम् ॥६॥

जो धनस्थानमें शुक्र हो और उसे बुध देखता हो तो धनकी प्राप्ति होती है। यदि शुक्र शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो बहुतसे धनकी प्राप्ति होती है ॥६॥

अत्र धने पापदृष्टयाधिकत्वाद्धनहानिः,
सौम्याधिकदृष्टया भवेद्धनप्राप्तिः ॥

धनस्थानमें पाप ग्रहोंकी दृष्टि अधिक हो तो धनकी हानि होती है और सौम्यग्रहोंकी दृष्टि अधिक हो तो धनप्राप्ति होती है।

इति धनभावविवरणम्।

अथ तृतीयभावं सहजम्।

अमुकाख्यममुकदवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना दृष्टं
वा न दृष्टमन्यैः शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं युतं न वेति ॥

सहज अर्थात् तीसरे स्थानका विचार–कौन ग्रह और उसका स्वामी वा कौन शुभाशुभ ग्रह देखते हैं यह सब विचारना चाहिये ॥

तत्र विलोकनीयम्

सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च।
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥१॥

तीसरे स्थानमें सगे भाई, दासवर्ग, पराक्रम, उपजीवी जनोंका विचार भले प्रकार करना चाहिये ॥१॥

सहजभावे लग्नफलम्

तृतीयसंस्थे प्रथमे च राशौ मित्रं द्विजातेश्च भवेन्मनुष्यः।
परोपकारप्रवणः शुचिश्च प्रभूतविद्यो नृपपूजिताङ्गः ॥१॥

यदि तीसरे स्थानमें मेष लग्न हो तो वह मनुष्य द्विजका मित्र हो तथा परोपकारमें चतुर, पवित्र, विद्यावान्, राजोंसे पूजित होता है ॥१॥

वृषे तृतीये लभते मनुष्यो मित्रं नरेन्द्रं प्रचुरं प्रतापम्।
सुवित्तदं भूरियशोनिधानं शूरं कविं ब्राह्मणवित्तरक्षम् ॥२॥

तीसरे स्थानमें वृष हो तो मनुष्य प्रतापी हो तथा दानी, यशस्वी शूर, कवि, ब्राह्मण और धनकी रक्षा करनेवाला राजा मित्र होता है ॥२॥

तृतीयसंस्थे मिथुने च लग्ने करोति मर्त्यं वरयानयुक्तम् ।
स्त्रीवल्लभं सर्वमुदारचेष्टं कुलाधिकं पूज्यतमं नृपाणाम् ॥३॥

तीसरे स्थानमें मिथुन लग्न हो तो मनुष्य सुंदरयानसंयुक्त, स्त्री जनोंका प्रिय, सब प्रकारसे उदार चेष्टावान्, कुलमें अधिक, राजोंमें पूज्यतम होता है ॥३॥

कुलीरराशौ सहजे प्रयाते मित्रं लभेत्सद्गुणवल्लभत्वम् ।
कृषीवलं धर्मकथानुरक्तं सदा सुशीलं सुमहत्प्रतिष्ठम् ॥४॥

यदि तीसरे स्थानमें कर्क लग्न हो तो सद्गुणोंमें प्रेम हो तथा कृषि-कर्मकर्ता, धर्मकथामें अनुरक्त, सदा शीलवान् और बड़ी प्रतिष्ठासे युक्त मित्र होता है ॥४॥

सिंहे तृतीये लभते मनुष्यः शूद्रं कुमित्रं परवित्तलुब्धम् ।
वधात्मकं पापकथानुरक्तं सदार्थयुक्तं जनगर्हितं च ॥५॥

तीसरे स्थानमें सिंह लग्न हो तो शूद्र, पराये धनका लोभी, हिंसक, पापकथामें अनुरक्त, सदा स्वार्थमें तत्पर तथा मनुष्योंसे निन्दित कुमित्र होता है ॥५॥

तृतीयभावे किल कन्यकाख्ये शास्त्रानुरक्तं मधुजं सुशीलम् ।
नाना सुहृत्संस्थितमल्पकोपं प्रियातिथिं देवगुरुप्रभक्तम् ॥६॥

तीसरे स्थानमें कन्या लग्न हो तो मनुष्य शास्त्रमें अनुरक्त, सुशील होता है, अनेक मित्रवाला, थोड़े क्रोधवाला, अतिथिप्रिय, देवता और गुरुजनोंका भक्त होता है ॥६॥

तृतीयसंस्थे हि तुलाभिधाने मैत्री भवेन्पापरतैर्मनुष्यैः ।
त्यागात्मकस्तोककथानुरक्तः सार्द्धं च भृत्यैश्च सुतार्थयुक्तः ॥७॥

तीसरे स्थानमें तुलालग्न हो तो उसकी पापी मनुष्योंसे मित्रता होती है, वह त्यागी, बालकोंकी कथामें अनुरक्त तथा दास, पुत्र, धनसे युक्त होता है ॥७॥

अलौ तृतीये भवने नरस्य मैत्री सदा पापयुतैर्नरेन्द्रैः ।
म्लेच्छैः कृतघ्नैः कलहानुरक्तैर्लज्जाविहीनैर्मनुजैर्हि रौद्रैः ॥८॥

यदि तीसरे घरमें वृश्चिक हो तो पापयुक्त राजोंके साथ तथा म्लेच्छ, कृतघ्न, कलहप्रिय, निर्लज्ज और रौद्र स्वभाववाले मनुष्योंसे मैत्री हो ।।८।।

चापे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्रीं सुशूरैर्नृपसेवकैश्च ।
वित्तेश्वरैर्धर्मपरैः प्रसन्नैः कृपानुरक्तैर्बहुकोविदैश्च ।।९।।

धनलग्न तीसरे स्थानमें हो तो मनुष्यकी मैत्री शूर तथा राजसेवकोंसे हो और धनी, धर्मात्मा, प्रसन्नचित्त, कृपावान् और श्रेष्ठ पंडित जनोंसे मित्रता हो ।।९।।

मृगस्तृतीये च नरस्य यस्य करोति सौख्यं सततं सुखाढचम् ।
नित्यं सुहृद्देवगुरुप्रसक्तं महाधनं पण्डितमप्रमेयम् ।।१०।।

जिस मनुष्यके तीसरे स्थानमें मकर लग्न हो उसको निरंतर सुख होता है। वह सदा मित्र देव गुरुमें प्रेमी, महाधनी, पंडित अप्रमेय होता है ।।१०।।

कुम्भे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्रीं व्रतज्ञैर्बहुकीर्तियुक्तैः ।
क्षमाधिकैः सत्यपरैः सुशीलैर्गीतप्रियैः साधपरैः खलैश्च ।।११।।

तीसरे स्थानमें कुंभ लग्न हो तो उस मनुष्यकी मित्रता व्रतके जाननेवाले, विस्तृत कीर्तियुक्त, क्षमावान्, सत्यवादी, सुशील, गीतप्रिय, साधु मनुष्योंसे हो और खलोंसे भी होती है ।।११।।

तृतीयभावे स्थितमीनराशौ नरं प्रसूते बहुवित्तयुक्तम् ।
पुत्रान्वितं पुण्य धनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम् ।।१२।।

जो तीसरे घरमें मीन लग्न हो तो मनुष्य वहुत धनी होता है और पुत्रवान्, पुण्यधनोंसे युक्त, अतिथिप्रिय, सव मनुष्योंको मंगल दायक होता है ।।१२।। इति सहजे लग्नफलम् ।।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढचः सुकर्मयुक्तोऽनुचरान्वितश्च ।
मितानुजःस्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिनाथे सहजेऽधिसंस्थे ।।१।।

जो तीसरे स्थानमें सूर्य हो तो मनुष्य प्रिय बोलनेवाला, धन वाहनसे युक्त, सुकर्मयुक्त, अनुचरोंसे युक्त, थोड़े भाइयोंवाला और बली होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

हिंस्रःसगर्वः कृपणोऽल्पबुद्धिर्भवेन्नरो बंधुजनाश्रयश्च ।
दयामयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजप्रसूतौ ॥२॥

जो तीसरे चन्द्रमा हो तो मनुष्य हिंसक, सगर्व, कृपण, अल्पबुद्धि, बंधुजनोंके आश्रयवाला, दया और आमयसे रहित होता है ॥२॥

भौमफलम्

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैः कथारतश्चारुपराक्रमश्च ।
धनानि च भ्रातृसुखातिहानिर्भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥३॥

जिसके तीसरे भावमें मङ्गल स्थित हो उसको राजाकी प्रसन्नतासे उत्तम सुख हो, कथामें प्रीति हो तथा उत्तम पराक्रमी, धनवान् और भाइयोंके सुखसे हीन होता है ॥३॥

बुधफलम्

साहसी च परिवारजनाढ्यश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवः कुशलवान् हितकर्ता शीतभानुतनुजेऽनुजसंस्थे ॥४॥

जिसके तीसरे स्थानमें बुध हो वह मनुष्य साहसी, अपने जनोंसे युक्त चित्तशुद्धिसे हीन, सौख्यरहित, चतुर, हितकारी होता है ॥४॥

गुरुफलम्

सौजन्यहन्ता कृपणः कृतघ्नः कान्तासुतप्रीतिविवर्जितश्च ।
नरोऽग्निमान्द्याबलतासमेतः पराक्रमे शुक्रपुरोहितेऽस्मिन् ॥५॥

जो तीसरे स्थानमें गुरु हो तो सुजनतासे हीन, कृपण, कृतघ्नी, स्त्री तथा पुत्रकी प्रीतिसे रहित और मन्दाग्नि रोग करके बलसे हीन होता है ॥५॥

भृगुफलम्

सहजगे सहजैः परिवारितो भृगुसुते पुरुषापुरुषैर्नतः ।
स्वजनबंधुविबंधनतां गतः सततमाशुगतिर्गतिविक्रमः ॥६॥

जो तीसरे स्थानमें शुक्र हो तो कुटुम्बसे प्रीति करनेवाला पुरुषा-

पुरुषों (स्त्री पुरुषों) से नत अपने कुटुम्बी वंधुओंसे विवंधताको प्राप्त हुआ सदा शीघ्रगति विक्रमवाला तथा पराक्रमी होवा है ॥६॥

शनिफलम्

राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ।
पालको भवति भूरिजनानां मानवो रविसुतेऽनुजसंस्थे ॥७॥

जिसके तीसरे शनि हो वह मनुष्य राजाका माननीय, शुभ वाहनसे युक्त, बहुत ग्रामोंका अधिपति, पराक्रमी वहुतसे जनोंका पालक होता है ॥७॥

राहुफलम्

न सिंहो न नागो भुजाविक्रमेण प्रतापीह सिंहीसुते तत्समत्वम् ।
तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रभावेऽपि भाग्यं कुतो यत्र केतुः ॥८॥

जिसके तीसरे राहु हो उस मनुष्यका बाहुपराक्रम सिंह और हाथीसे भी अधिक होता है और वह प्रतापी तथा जगत्को अपना वंधु माननेवाला हो, प्रतापसे भी भाग्य कहां ? जहां केतु हो ॥८॥

केतुफलम्

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनस्यापि लाभं भयं मित्रतोऽपि ।
करोतीह नाशं सदा बाहुपीडां भयोद्वेगतां मानवोद्वेगतां च ॥९॥

जो तीसरे केतु हो तो शत्रुका नाश, विवाद, धनका लाभ, मित्र पक्षसे भय, हानि, भुजामें पीडा, भयसे तथा मनुष्योंसे उद्वेग हो ॥९॥

इति ग्रहफलम् ।

अथ सहजभवनेशफलम्

सहजपतौ लग्नगते स्त्रीस्वादलंपटः स्वजनभेदः ।
सेवां करोति मित्रैर्भवेत्कटुकरः पण्डितः पुरुषः ॥१॥

जो तीसरे स्थानका स्वामी लग्नमें हो तो वह पुरुष स्त्रीलम्पट, अपने पुरुषोंमें भेद रखनेवाला, सेवा करनेवाला, मित्रोंसे कटुभाषी और पंडित होता है ॥१॥

यदि धनगे सहजेशे भिक्षुर्धनाल्पजीवितः पुरुषः ।
बन्धुविरोधी क्रूरैः सौम्यैः पुनरीश्वरः खचरैः ।।२।।

यदि सहजपति धनस्थानमें हो तो वह भिक्षुक, धनसे रहित, थोड़ा जीवनेवाला, बंधुविरोधी होता है, क्रूर, ग्रहका फल है, सौम्य ग्रह हो तो अधिपति होता है ।।२।।

सहजगते सहजपतौ नृपमन्त्री सौहृदेऽतिनिपुणश्च ।
गुरुपूजननिरतो वै नृपतो लाभं परं नरं कुरुते ।।३।।

जिसके सहजपति तीसरे ही स्थानमें हो वह मनुष्य नृपमंत्री, मित्रतामें कुशल, गुरुपूजनमें तत्पर, राजासे परम लाभवाला होता है ।।३।।

भ्रातृपतौ तुर्यगते पितृमोदसुखमुदयकृत्तेषाम् ।
मातुर्वैरकरश्च पापैः पित्रर्थभक्षकः पुरुषः ।।४।।

जो तृतीयाधिपति चौथे हो तो पितासे हर्ष और सुख हो तथा उनका उदय करे, मातासे वैर करनेवाला, हो, यदि पापग्रह हो तो पिताका धन भोगनेवाला होता है ।।४।।

सहजपे सुतगे बहुबान्धवैः सुतसहोदरपालधनी सुखी ।
विषयसुक्परकार्यकरः क्षमी ललितमूर्तिरसौ चिरजीवितः ।।५।।

जो तीसरे स्थानका स्वामी पांचवें हो तो वह वहुत बंधुवाला, पुत्र और सहोदरका पालक धनी सुखी होता है, विषयभोगी, परकार्यकर्ता, क्षमावान् सुंदरमूर्ति चिरजीवी होता है ।।५।।

रिपुगते सहजाधिपतौ भवेन्नयनरोमयुतो रिपुमान् भवेत् ।
सहजसज्जनतोऽपि च दुष्टता क्रययुतोऽथ रुजा परिपीडितः ।।६।।

यदि तृतीयाधिपति शत्रुस्थानमें हो तो नेत्ररोगी और रिपुवाला होता है, भाई और सुजनोंसे दुष्टतावाला, क्रयविक्रयसे युक्त तथा रोगसे पीडित होता है ।।६।।

युवतिवैरकृदल्पपराक्रमी सहजभावपतौ मदगे नरः ।
सुभगसुंदररूपवतीसतीयुवतिपापगृहेषु रतो भवेत् ।।७।।

तीसरेका अधिपति सप्तममें हो तो स्त्रीसे वैर, थोड़े पराक्रमवाला हो। स्त्री सुभग सुंदर रूपवती हो, पापग्रह हों तो युवतियोंमें रत हो ।।७।।

सहजपेऽष्टमगे सरुषो नरो मृतसहोदरमित्रजनः खलैः ।
शुभखगः शुभताधनयुग्भवेत्स्वयमपि प्रचुरामयवान्भवेत् ॥८॥

सहजपति अष्टम हो तो वह मनुष्य क्रोधी हो। खल ग्रह हो तो सहोदर और मित्रजनसे हीन हो और जो शुभग्रह हों तो शुभता धनयुक्तता हो तथा स्वयं प्रचुर रोगवाला होता है ॥८॥

सहजभावपतौ नवमस्थिते सहजवर्गरतोऽपि वनाश्रयः ।
भवति बालयुतोऽथ पराक्रमी शुभमतिः खलखेटगृहेऽन्यथा ॥९॥

जो सहजपति नवम हो तो भ्रातृवर्गमें अनुराग करनेवाला हो तो भी वनमें निवास करे तथा पुत्रवान् पराक्रमी और शुभमति हो यह शुभग्रहका फल है, खलग्रहोंका इसके विपरीत जानना ॥९॥

सहजपे दशमे च नृपात्सुखं पितृजनैः कुलवृद्धजनाश्रयः ।
बहुसुभाग्ययुतो नयनोत्सवो भवति मित्रयुतोऽतितरां शुचिः ॥१०॥

सहजपति दशममें हो तो राजासे सुख पितृजन और कुलमें वृद्धजनोंके आश्रयवाला, वहुत भाग्यवान्, उत्सववाला मित्रयुक्त बलवान् अति पवित्र होता है ॥१०॥

सहजपे शुभलाभपराक्रमी भगवत सुतबंधुभिरन्वितः ।
नृपतिनाभिमतो विजयी नरो बहुलभोगयुतो निपुणः सदा ॥११॥

सहजपति ग्यारहवें हो तो शुभ लाभ पराक्रमी सुत बंधुओंसे युक्त हो राजासे मान्य हो विजयी अनेक भोगोंसे युक्त सदा चतुर हो ॥११॥

व्ययगते सहजे व्ययवाञ्छुचिर्निजसुहृद्रिपुरल्पपराक्रमी ।
शुभसमागमतोपि शुभं भवेत्खलखगैर्जननीनृपतेर्भयम् ॥१२॥

सहजपति बारहवें हो तो खर्च करनेवाला तथा पवित्र हो और अपने सुहृद् भी शत्रु होवें, अल्प पराक्रमवाला हो, अच्छे समागमसे शुभ हो, यदि खलग्रह हों तो माता और राजासे भय हो ॥१२॥

इति सहजभवनेशफलम्

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

तृतीयगेहे रविवीक्षिते च सहोदरं पूर्वसुखं विनश्यति ।
पराक्रमे वाऽभिभवः स्वभाग्ये नृपाद्भयं चैव न संशयोऽत्र ॥१॥

जो तीसरे स्थानको सूर्य देखता हो तो भाइयोंका सुख उस पुरुषको न हो, पराक्रममें तिरस्कार और अपने भाग्यमें राजासे भय हो इसमें संदेह नहीं ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

सहजगे यदि चन्द्रविलोकिते भगिनिजन्मकरो न पराक्रमी ।
प्रथमपूर्वधनेन सुखं धनं तदनु चोत्तरगे सकलार्थदः ॥२॥

सहज स्थानको यदि चन्द्रमा देखता हो तो भगिनीका जन्म हो अर्थात् छोटी बहिन उत्पन्न होय, पराक्रमी न हो और पहले पूर्वधनके द्वारा सुखपूर्वक धनकी वृद्धि हो पीछे सब अर्थकी प्राप्ति होती है ॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

तृतीयभावे यदि भौमदृष्टिः पराक्रमे सिद्धिमुपैति नूनम् ।
देशांतरे राजगृहे च मान्यं सहोदराणां च विनाशनं स्यात् ॥३॥

तीसरे घरमें यदि मंगलकी दृष्टि हो तो पराक्रममें अवश्य सिद्धि हो, देशान्तर तथा राजघरमें मान्य और सहोदरोंका विनाश हो ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

सहजगे द्विजराजसुतेक्षिते सहजसौख्ययुतश्च नरः सदा ।
वणिजकर्मरतोऽत्र विचक्षणो नरवरः खलु तीर्थकरोद्यमी ॥४॥

जो तीसरे घरको बुध देखे तो वह मनुष्य भाइयोंसे सुख पावै, वणिजकर्ममें रत और चतुर, तीर्थकारी तथा उद्यमी होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

सुरगुरुर्यदि विक्रमसोक्षते सहजसौख्ययुतः पुरुषो भवेत् ।
पितृधनं पितृवर्जितगर्वितः स्वजनबन्धुरतोऽथ च कीर्तिमान् ॥५॥

तीसरे घरको बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष सहजभावके सुखसे

युक्त होता है, पिताका धन पानेवाला, पितासे हीन, गर्वित, स्वजन बंधुओंमें रत यशस्वी होता है ।।५।।

भृगुदृष्टिफलम्

सहजगे सति भार्गववीक्षिते सहजसौख्ययुतश्च नरः सदा ।
तदनु पुष्टियुतः किल कन्यकाजनिविदेशगतो नृपपूजितः ।।६।।

सहज स्थानको यदि शुक्र देखता हो तो मनुष्यका सहज भावका सुख होता है और वह पुष्ट शरीरवाला, कन्याको उत्पन्न करनेवाला तथा विदेश जानेमें राजोंसे पूजित होता है ।।६।।

शनिदृष्टिफलम्

यदि पराक्रमगं शनिवीक्षितं बहुपराक्रमवान्बलवान्भवेत् ।
सहजपक्षसुसौख्यविनाशकः फलविपाकदशासु फलं नहि ।।७।।

यदि तीसरे स्थानमें शनिकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य बड़ा पराक्रमी बली होता है तथा सहजपक्षसे सुख न हो, परिपाक अवस्थामें फल न हो ।७।।

राहुदृष्टिफलम्

तृतीयगे राहुनिरीक्षिते च पराक्रमात्सिद्धिमुपैति नूनम् ।
नानार्थसौख्यं बहुपुत्रदुःखं चौराग्निसर्पाश्च राजतो भयम् ।।८।।

जो तीसरे स्थानमें राहुकी दृष्टि हो तो वह अवश्य पराक्रमसे सिद्धिको प्राप्त होता है, अनेक अर्थोंसे सुख, बहुत पुत्रोंका दुःख, चोर अग्नि सर्प तथा राजासे भय न हो ।।८।। इति सहजभावे दृष्टिफलम् ।।

सहजभावे वर्षसंख्या

सूर्यो धनं नखमिते सहजे विधुश्च त्र्यब्देऽनुजक्षितिसुतोनुजभुच्च विश्वे । ज्ञोर्कब्दवित्तविलयं गुरुतोभ्रनेत्रैर्मित्राप्तरत्ननखतः प्रकरोति च तीर्थाम् ।। १ ।।

सूर्यका फल २० वर्ष सुख करे, चन्द्रमा ३ वर्ष सुख करे, मंगल १३ वर्ष कुछ करे, बुध १२ में धनकी प्राप्ति, गुरु २० वर्ष, मित्रप्राप्ति शुक्र २० वर्ष तीर्थकी प्राप्ति कराता है ।।१।।

अथ विचारः

पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रतिलोकितं च ।
भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेवम् ॥२॥

जो सहजपति पाप ग्रहोंके साथ पाप स्थानमें प्राप्त हो वा देखा गया हो तो सहजसुखकी प्राप्ति न हो इसके अभावमें अर्थात् विपरीततामें सुखकी प्राप्ति हो ॥२॥

नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिक्षोणिसुतानुदृष्टाः ।
तावन्मिताः स्युः सहजा भगिन्यश्चान्येक्षिता वै परिकल्पनीयाः ॥३॥

जो सहज स्थानमें नवांशकके ग्रह स्थित हों तथा चन्द्रमा और मंगल देखते हों तो जितने ग्रह हों उतनेही सगे भाई बहन हों वा जितने ग्रह देखते हों उतने जानना ॥३॥

कुजेन दृष्टे रविजे तनूजा नश्यन्ति जाताः सहजा हि तस्य
दृष्टे च तस्मिन्गुरु भार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ॥४॥

जो मंगल शनिको देखे तो उत्पन्न हुए भ्रातादि नष्ट हों और गुरु भार्गव देखते हों तो भाइयोंका अवश्यही कुशल हो ॥४॥

सौम्येन भूमीतनयेन दृष्टः करोति दृष्टिं रविजोऽनुजानाम् ।
शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥५॥

सौम्यग्रह तथा मंगल शनिको देखते हों तो भाइयोंकी उत्तम दृष्टि हो और चन्द्रवर्गमें मंगलकी दृष्टि हो तो भाई रोगसे युक्त होते हैं ॥५॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेह एवानुजजीवितस्य ।
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समानः ॥६॥

जो सूर्य पुण्यस्थानमें वा अपने घरमें स्थित हो तो उसके अनुजोंके जीवनमें संदेह हो। कदाचित् एक हो, वह चिरजीवी और राजाके समान होता है ॥६॥

चन्द्रमाः पापयुक्तश्च सहजस्थो यदा भवेत् ।
भ्रातृनाशककरो योगो यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥७॥

जो चन्द्रमा पापयुक्त सहज स्थानमें हो तो यह भ्रातृनाशक योग होता है यदि शुभ ग्रह न देखते हों तो ॥७॥

यदि खलैः सहजे च खला ग्रहाः शुभग्रहैः सहिताश्च विलोकिताः ।
नहि भवन्ति सहोदरबान्धवा बहुविधाग्रजपक्षविघातयुक् ॥८॥

जो सहज स्थानमें खलग्रह शुभ ग्रहोंसे युक्त वा देखे जाते हों तो उसके सहोदर और बांधव न होवें तथा बहुत प्रकारसे बड़े भाइयोंके पक्षके विघातसे युक्त होता है ॥८॥

शुभनिजेशयुतेक्षितमग्निभं भवति ज्येष्ठसहोदरसौख्यभाक् ।
स्वपतिना न युतं शुभनेक्षितं न सुखमन्यसहोदरजं तदा ॥९॥

जो सहज स्थान अपने स्वामी शुभ ग्रहसे युक्त वा देखा गया हो तो ज्येष्ठ सहोदरका सुखभोगी होता है और जो अपने स्वामीसे युक्त तथा शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो सहोदरोंका किया सुख नहीं होता ॥९॥

यदि खलाः प्रबलाः खलमध्यगं खलयुतेक्षितमग्रजहं तदा ।
नहि कनिष्ठसहोदरजं सुखं भवति ज्येष्ठसुखं न तु जायते ॥१०॥

जो क्रूरग्रह प्रबल हों और उक्तभाव पापग्रहोंके मध्यमें स्थित हों तथा पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो बड़े भाईका नाशक हो तथा छोटे सहोदर भाईसे भी सुख न हो, ज्येष्ठसे सुख हो ॥१०॥

प्रथमजातशिशुस्तरणिग्रहस्तदनु हन्ति शिशुं लघुकर्मजः ।
धरणिजो लघुबालकघातकृद्बहुखला यदि हन्ति च भार्गवात् ॥११॥

प्रथम उत्पन्न पुत्रको सूर्य नष्ट करता है पीछे उत्पन्न लघु बालकको शनि घातक है, मङ्गल लघुबालकका घातक है बहुत खल हों तो शुक्रसे संतान पीडित हो ॥११॥

रविराहू भ्रातृहणौ चन्द्रे च भगिनीसुखम् ।
शन्याररराहवः षष्ठे भ्रातृनाशकरो गुरुः ॥१२॥

रवि और राहु भाईको मारते हैं चन्द्रके सहित होनेसे भगिनीका सुख होता है जो छठे स्थानमें शनि भौम या राहु हों तो भ्राताके नाश करनेवाले हैं तथा गुरुके साथ भी यही फल है ॥१२॥

इति सहजभावविवरणं संपूर्णम् ॥

अथ चतुर्थं सुखभवनम्

अमुकाख्यममुकदेवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना दृष्टं वा
न दृष्टं तथाऽन्यैः शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं युतं न वेति ।

चौथे भवनका विवरण यह है कि अमुक देवता अमुक ग्रह अपने स्वामी तथा अन्य शुभाशुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट है या नहीं है इसका निर्णय देखना चाहिये ॥

तत्र विलोकनीयानि

सुहृद्गृहं ग्रामचतुष्पदं वा क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे ।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धिर्नियमेन तेषाम् ॥१॥

सुहृदों गृह, ग्राम, चौपायें, क्षेत्र, उद्यम यह सब चौथे घरसे देखना चाहिये। शुभग्रहोंसे देखा गया हो वा शुभयोग हो तो इतने बातोंकी यह वृद्धि करता है ॥१॥

मेषे सुखस्थे लभते सुखं च चतुष्पदेभ्योऽथ विलासिनीभ्यः ।
भोगैर्विचित्रैः प्रचुरान्नपानैः पराक्रमोपार्जितसर्वभोगैः ॥१॥

सुखस्थानमें मेष लग्न हो तो चौपायोंसे और स्त्रियोंसे सुख हो, विचित्र भोग, बहुतसे अन्नपान तथा पराक्रमसे उपार्जित सर्व भोंगोसे सुख प्राप्त होता है ॥१॥

वृषे सुखस्थे लभते सुखानि नरोऽतिमान्यो विविधैश्चमान्यैः ।
शौर्येण भूपालनिषेवणेन विप्रोपचारैर्नियमैर्व्रतैश्च ॥२॥

सुखस्थानमें वृष हो तो सुखकी प्राप्ति तथा मान्यता और धन बहुत मिले। शूरतासे, राजाके सेवनसे, ब्राह्मण उपचारसे धन मिले। नियम और व्रत करनेवाला होता है तथा इन्हीं कृत्योंसे धन मिलता है ॥२॥

तृतीयराशौ सुखभे सुखानि लभेन्मनुष्यः प्रमदाकृतानि ।
जलावगाहैर्वनसेवया च प्रभूतपुष्पाम्बरसेवकांश्च ॥३॥

जो मिथुन लग्न चौथे घरमें हो तो पुरुष स्त्रियोंसे सुखको प्राप्त होता है जलका अवगाहन, वनसेवा, बहुतसे पुष्प अम्बर और सेवकको पाता है ॥३॥

कुलीरराशौ हि यदा सुखस्थे नरं सुरूपं सुभगं सुशीलम् ।
स्त्रीसंमतं सर्वगुणैः समेतं विद्याविनीतं जनवल्लभं च ॥४॥

जो चौथे घरमें कर्क लग्न हो तो वह मनुष्य स्वरूपवान् सुभग सुशील होता है, स्त्रीसम्मत, सब गुणोंसे युक्त, विद्यासे विनीत और जनोंका प्यारा होता है ।।४।।

सिंहे सुखस्थे न सुखं मनुष्यः प्राप्नोति योऽसौ प्रचुरः प्रकोपात् ।
कन्याप्रसूतिं कुटिलप्रसङ्गं नरो भवेच्छीलविवर्जितश्च ।।५।।

सुख स्थानमें सिंह लग्न हो तो मनुष्योंको सुख नहीं होता है और वह मनुष्य क्रोधी होता है कन्याकी प्रसूति कुटिल संगवाला होता है तथा मनुष्य शीलसे वर्जित होता है ।५।।

कुमित्रसङ्गं धनसंश्रयं च कन्यागृहे दुर्मतिमान्मनुष्यः ।
पैशून्यसङ्गाल्लभते सुखानि चौर्येण युद्धेन च मोहनेन ।।६।।

जो कन्या लग्न चौथे घरमें हो तो कुमित्रका संग, दुर्बुद्धि और उन्हींसे धनका आश्रय हो, चुगली करनेवालोंकी संगतिसे सुख होवे, चौर्य युद्ध और मोहनकर्म करे ।।६।।

तुले सुखस्थे च नरस्य यस्य करोति सौख्यं शुभकर्मदक्षम् ।
विद्याविनीतं सततं सुखाढ्यं प्रसन्नचित्तं विभवैः समेतम् ।।७।।

जिसके चतुर्थ भवनमें तुला हो वह सुखी हो, शुभ कर्ममें चतुर विद्यासे नम्र, सदा सुखी, प्रसन्नचित्त ऐश्वर्यसे युक्त होता है ।।७।।

अलौ चतुर्थे च यदा भवेत्तं सुतीक्ष्णभावं परभीतियुक्तम् ।
प्रभूतसेवं गतवीर्यदक्षं परैः सुरक्षं च गुणैर्विहीनम् ।।८।।

जो चौथे स्थानमें वृश्चिक हो तो वह मनुष्य तीक्ष्ण स्वभाववाला तथा भययुक्त हो प्रभूतसेवी वीर्यहीन चतुर दूसरोंसे रक्षित गुणविहीन होता है ।।८।।

चापे सुखस्थे लभते मनुष्यः सुखं सदा संगरसेवनं च ।
सत्कीर्तिरेवं हरिसेवनं च सद्भावसम्पन्नतयान्वितश्च ।।९।।

धन लग्न चौथे घरमें हो तो मनुष्यको सुख और सदा युद्धसे प्रसन्नता हो, कीर्तिमान् हरिसेवाविचक्षण सद्भावसम्पन्न होता है ।।९।।

मृगे सुखस्थे सुखभाङ्मनुष्यः सदा भवेत्तापनिवेशनेन ।
उद्यानवापीतटसंगमेन मित्रोपचारैः सुरतप्रधानैः ।।१०।।

सुख स्थानमें मकर लग्न हो तो मनुष्य सुखभागी और मानसी चिन्तावाला होता है उद्यान बावड़ी तट संगम मित्रोंके उपचार तथा सुरत में प्रधानतासे सुख पाता है ॥१०॥

घटे सुखस्थे प्रमदानिधानात्प्राप्नोति सौख्यं विविधं मनुष्यः ।
मिष्टान्नपानैः फलशाकपत्रैर्विदग्धवाक्यैः कटुसाह्यकारी ॥११॥

सुख स्थानमें कुंभ हो तो मनुष्य स्त्रीसे अनेक सुख पाता है, मिष्टान्नपान, फल शाकपत्रभोजी, चतुरवाक्यवाला, कटु सहायकारी होता है ॥११॥

मीने सुखस्थे तु सुखं मनुष्यः प्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण ।
शनैश्चरे देवसमुद्भवैश्च यानैः सुवस्त्रैः सुधनैर्विचित्रैः ॥१२॥

मीनलग्न सुख स्थानमें हो तो मनुष्य जलके आश्रयसे सुख पाता है। यदि शनैश्चर हो तो देवसे प्राप्त यान वस्त्र और विचित्र धनको प्राप्त होता है ॥१२॥ इति सुखभावे लग्नम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

सौख्येन यानेन हिते रतस्य नितांतसत्प्रेमयुतप्रवृत्तिः ।
चलन्निवासं कुरुते मनुष्यः पातालशाले नलिनीविलासी ॥१॥

जो चौथे घरमें सूर्य हो तो वह पुरुष सुखयुक्त सवारीमें अत्यन्त प्रेमपूर्वक प्रवृत्त होता है तथा चलायमान निवासवाला भी होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान्पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तम् ॥२॥

जो चौथे घरमें चंद्रमा हो तो जलके आश्रयसे धन मिले तथा अंगना वाहन और पुत्रोंसे सुखकी प्राप्ति हो और द्विजदेवोंका भक्त होता है ॥२॥

भौमफलम्

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासात्कलेवरे रुग्बलताबलित्वम् ।
प्रसूतिकाले किल मङ्गलेऽस्मिन् रसातलस्थे फलमुक्तमाद्यैः ॥३॥

मङ्गल चौथे हो तो सुहृद, वाहन, प्रवाससे दुःख हो कलेवरमें रोग होता है तथा बली भी होता है ।।३।।

बुधफलम्

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मंदवादकुशलं च सुशीलम् ।
मानवं किल करोति सुलीलं शीतदीधितिसुतः सुखसंस्थः ।।४।।

जो जन्मसमय चौथे घरमें बुध हो तो पुत्रका सुख, बहुतसे मित्रवाला, मंद वादमें कुशल, उत्तम लीलाओंसे युक्त सुशील होता है ।।४।।

गुरुफलम्

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकंपासमुपात्तसंपत् स्वर्गाधिपे मंत्रिणि भूतलस्थे ।।५।।

जो जन्मकालमें चौथे गुरु हो तो सत्पुरुषोंसे माननीय, प्रसन्नचित्त, राजमान्य, सम्पत्तिमान् होता है तथा अनेक प्रकारसे धन वाहनकी प्राप्ति होती है ।।५।।

भृगुफलम्

मित्रक्षेत्रे ग्रामसद्वाहनानां नाना सौख्यं वंदनं देवतानाम् ।
नित्यानन्दं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितश्चेत् ।।६।।

मित्रक्षेत्रमें शुक्र प्राप्त हो तो ग्राम और अच्छे वाहनोंका सुख प्राप्त हो, देवताओंकी पूजा करनेवाला हो मनुष्योंको नित्य आनंद करे यह चौथे भावमें शुक्रका फल जानना ।।६।।

शनिफलम्

पित्तेन विक्षीणबलं कुशीलं शीलेन युक्तं कुरुते मनुष्यम् ।
मालिन्यभावं मनसस्तनोति रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ।।७।।

जो चतुर्थ घरमें शनि हो तो पित्तसे क्षीणबल हो कुशील भी शीलवान् हो तथा चित्तमें कुछ मनकी मलीनता होती है ।।७।।

राहुफलम्

चतुर्थे भवने चैव मित्रभ्रातृविनाशकृत् ।
पितुर्मातुः क्लेशकारी राहौ सति सुनिश्चितम् ।।८।।

जो चौथे घरमें राहु हो तो मित्र भ्राताका सुख न हो, पिता माताको क्लेश हो यह निश्चय है ॥८॥

केतुफलम्

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्धर्मतः पितृतो नाशमेति ।
शिखी बंधुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे स्थिरत्वं न कुर्यात्सदा व्यग्रतां च ।।९।।

जो चौथे घरमें केतु हो तो माताका सुख न हो, धर्मसे सुहृद्से पितासे दुःख हो और बंधुहीन हो, उच्चका हो और अपने घरका हो तो सुख हो अन्यथा स्थिरता न हो सदा व्यग्रता हो ॥९॥

इति सुखभावे ग्रहफलम् ।

अथ सुखभवनेशफलम्

सुखपतौ सुखवाहनभोगवांस्तनुगते तनुते धवलं यशः ।
जनकमातृसुखौघकरं परं सुभगलाभयुतं निरुजं वपुः ।।१।।

यदि सुखेश शरीरके स्थान (प्रथम घर) में प्राप्त हो तो सुख वाहन भोगवाला करता है तथा विपुल यशवाला करता है, माता पितासे सुख और लाभवान् तथा रोगहीन शरीरवाला होता है ॥१॥

सुखपतौ धनगे खलखेचरैः पितृविरोधकरः कृपणः शुचिः ।
शुभखगैः पितृभक्तिधनाश्रयः शुभयुतः श्रुतिशास्त्रविशारदः ।।२।।

जो सुखेश धन स्थानमें प्राप्त हो और वह क्रूर ग्रहोंके साथ हो तो पितासे विरोध करनेवाला तथा कृपण और पवित्र होवे । यदि शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो पिताकी भक्तिवाला धनवान्, शुभयुक्त सव शास्त्रमें पंडित हो ।।२।।

सुखपतौ सहजालयगे क्षमो पितृसुहृज्जननीकलिकारकः ।
रथमहीवृषभादिसुखान्वितः शुभखगैर्बहुमित्रयुतो नरः ।।३।।

जो सुखपति तीसरे घरमें प्राप्त हो तो क्षमावान्, पिता सुहृद् मातासे कलह करनेवाला हो, रथ भूमि वृषभादिका सुख हो, जो अच्छे ग्रहोंके साथ हो तो उस मनुष्यके वहुत मित्र होते हैं ।।३।।

सुखपतौ सुखगे सुखसन्निधौ नृपसमो धनवान् बहुसेवकः ।
पितृसुखं बहुलं जनमान्यता रथगजाश्वशुभैः सुखभाङ्नरः ।।४।।

जो सुखेश सुखभवनमें प्राप्त हो तो वह पुरुष राजाके समान धनी वहुत सेवकोंवाला हो, पितासे अधिक सुखवान् हो, जनमान्यता, रथ, हाथी, घोड़ेकी सवारी करके सुखभागी होता है ।।४।।

सुखपतौ बहुजीवितवान्नरः सुतगते सुतयुक्तसुधीर्नरः ।
शुभवशात्सुखभोगधनान्वितः श्रुतिधरोऽतिपवित्रविलेखकः ।।५।।

जो सुखेश पुत्रघरमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य दीर्घजीवी पुत्रवान् बुद्धिवान् होता है, शुभग्रह हों तो सुखभोग धनसे युक्त शास्त्रधारी पवित्र और लेखक होता है ।।५।।

भवति मातृपतौ रिपुगे नरो रिपुयुतोऽपि अनर्थविनाशकः ।
खलखगोऽपि कलङ्कितमातुलो भवति सौम्यखगैर्धनसंचयी ।।६।।

जो सुखेश छठे घरमें हो तो शत्रु बहुत हों तथापि अनर्थका विनाश करनेवाला होता है, जो दुष्ट ग्रहोंसे युक्त हो वा खलग्रह हों तो मामासे दुःख, सौम्ययुक्त होनेसे धनसंचय होता है ।।६।।

मदनगेऽम्बुपतौ च सुराकृतिर्धनयुतो युवतीजनवल्लभः ।
स्मरयुतः सुभगः शुभखेचरैः खलखगेऽतिखलःकठिनः पुमान् ।।७।।

जो सुखेश सातवें घरमें हो तो देवतुल्य आकृतिवाला, धनवान, स्त्रीजनोंका प्यारा होता है, शुभग्रहोंसे युक्त होनेसे कामयुक्त सुभग होता है और खल ग्रहोंसे युक्त होनेसे पुरुष कठिन स्वभाव और दुष्ट होता है ।।७।।

मृतिगते सरुजोऽम्बुपतौ नरः सुखयुतः पितृभ्रातृसुखाल्पकः ।
भवति वाहननाशकरः शुभे खलखगेऽतिसमागमनाशकः ।।८।।

जो सुखेश अष्टम हो तो सुखसे युक्त हो पिता भ्राताके पक्षसे थोड़ा सुख हो, शुभ ग्रहोंसे युक्त होनेसे वाहननाशक और दुष्ट ग्रह होनेसे समागमनाशक है ।।८।।

नवमगे सुखपे बहुभाग्यवान्पितृधनार्थसुहृन्मनुजाधिपः ।
भवति तीर्थकरो व्रतवान्क्षमी सुनयनः परदेशसुखी नरः ।।९।।

सुखपति नवम स्थानमें हो तो भाग्यवान् पिताके धनसे प्रसन्न हो, मित्र और मनुष्योंमें अधिपति तीर्थ करनेवाला व्रतवान् क्षमावान् सुनेत्र परदेश जानेमें सुखी हो ।।९।।

गगनगे सुखपे गृहिणीसुखं जनकमातृ करो धलभुक्क्षमी ।
सुनयनः परतो नृपसम्मतः खलखगैर्विपरीतफलं वदेत् ।।१०।।

जो सुखेश दशम घरमें हो तो स्त्रीका सुख हो, माता पितासे भाग्य प्राप्त हो क्षमावान् सुनेत्र नृपसम्मत हो जो खलग्रहोंसे संयुक्त हो तो इससे विपरीत फल जानना ।।१०।।

भवगतेन्दुपतौ पितृपालको विविधलब्धियुतः शुभकृत्सदा ।
पितरि मातरि भक्तियुतो नरः प्रचुरजीवितरोगविवर्जितः ।।११।।

जो सुखेश ग्यारहवें हो तो वह मनुष्य पितृपालक अनेक धनकी प्राप्ति वाला सुखकारी माता पिताकी भक्तिवाला चिरजीवी रोगरहित हो ।।११।।

व्ययगते सुखपे पितृनाशको यदि विदेशगतो जनको भवेत् ।
भवति दुष्टखगैर्युतजातकः शुभखगैः पितृसौख्यकरः सदा ।।१२।।

जो सुखेश बारहवें हो तो पिताका नाश करै यदि दुष्ट ग्रहोंसे युक्त हो तौ पिता परदेशमें हो और शुभग्रहोंसे युक्त होनेसे पिताको सुख करनेवाला होता है ।।१२।। इति सुखभवनाधिफलम् ।

अथ सुखभावे ग्रहदृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

विलोकिते चापि चतुर्थगेहे सूर्यः करोत्येव हि मातृपीडाम् ।
बन्धुक्षयं चैव यशः सुखं च लाभार्थदं पुण्ययशः सदैव ।।१।।

जो चौथे घरमें सूर्यकी दृष्टि हो तो माताको पीडा करता है, वंधुक्षय यश सुख मिले, लाभप्राप्ति और सदा पुण्य और यश मिले ।।१।।

चन्द्रदृष्टिफलम्

तुरीयगे शीतकरे च दृष्टे बन्धुक्षयं चैव यशः सुखं च ।
लाभार्थदं पुण्ययशः सवायुः पित्रादिलोकान्न करोति सौख्यम् ।।२।।

चौथे स्थानमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो वंधुक्षय होवे तथा यश और सुख हो, लाभ हो, पुण्य यश मिले, वातयुक्त हो पिता और लोकोंसे सुख न मिले ।।२।।

भौमदृष्टिफलम्

तुर्यभावगृह अरिवीक्षिते मातृकष्टमथ तुर्यवर्षके ।
भूपतेर्भवति भूमितः सुखं दर्शनेन च रिपुर्विनश्यति ॥३॥

यदि चौथे घरको मंगल देखता हो तो चौथे वर्ष माताको कष्ट हो, उस मनुष्यको राजाके द्वारा भूमिसे सुख हो और उसके देखनेसे शत्रुनाश हो ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

बुधेक्षिते यद्यथ तुर्यभावे मातुश्च सौख्यं प्रचुरं करोति ।
राज्यादिसौख्यं धनवर्धनं च पितुर्धनं चैव हि कामलुब्धः ॥४॥

यदि चौथे घरपर बुधकी दृष्टि हो तो मातासे महासुख मिले, राज्यादिसे सुख धनकी वृद्धि पिताका धन बढ़ानेवाला कामलुब्ध पुरुष होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

हिबुकसद्मनि चार्यनिरीक्षिते जनकमातृसुखं त्वतुलं भवेत् ।
गजरथाश्वयुतोऽथ च पंडितः स्वजनवर्गभवं त्वतुलं यशः ॥५॥

जो चौथे घरको गुरु देखता हो तो पिता मातासे बहुत सुख मिले, हाथी रथ घोड़ोंसे युक्त वह मनुष्य पंडित होता है और अपने सुजनोंसे उसको बड़े यशकी प्राप्ति होती है ॥५॥

भृगुदृष्टिफलम्

संपूर्णदृष्टिर्यदि तुर्यभावे शुक्रस्तदा मातृसुखं करोति ।
कर्माधिको द्रव्ययुत्तो नरः स्याद्यशश्च सौख्यं बहुवाहनोत्थम् ॥६॥

यदि चौथे घरको शुक्र पूर्णदृष्टिसे देखता हो तो माताको सुख करता है वह पुरुष कर्ममें तत्पर द्रव्यवान् यश और वाहनका सुख करनेवाला होता है ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

तुर्यभावभवने शनीक्षिते तातमातृमरणं भवेन्नृणाम् ।
जन्मतो हि खलु तुर्यवर्षके षोडशेऽथ गदतो महद्भयम् ॥७॥

यदि चौथे घरमें शनिकी दृष्टि हो तो माता पिताका अनिष्ट करता है, जन्मसे चौथे और सोलहवें वर्षमें रोगसे महाभय होता है ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

चतुर्थगेहे तमसा निरीक्षिते मातुः सुखं नैव करोति तस्य।
कर्मोदयं म्लेच्छकुलाज्जयं च व्यथोदरे स्याच्च नरस्य दारुणा ॥८॥

जो चौथे घरमें राहुकी दृष्टि हो तो माताका सुख नहीं करता है; कर्मका उदय, म्लेच्छकुलसे विजय हो और उस मनुष्यके उदरमें दारुण पीडा रहे ॥८॥ इति सुखभावे ग्रहदृष्टिफलम् ॥

अथ ग्रहवर्षसंख्या

तुर्ये रविर्मनुमिते कलहं हि चन्द्रो द्विव्यब्दपुत्रमसृगष्टसहोदरार्तिम्।
ज्ञो वित्तहा यमयमैर्गुरुराकृतौ स्वं शुक्राऽम्बुजे सुखमथो कुजवच्छ-निश्च ॥१॥

सूर्यकी चतुर्थ घरमें १४ वर्षतक अवधि क्लेशकारक, चन्द्रमा २२ वर्ष पुत्रप्राप्ति, मंगल ८ वर्ष सहोदरपीडा, बुध २२ वर्ष धन नाश, गुरु २२ वर्ष धनप्राप्ति, शुक्र ४ वर्ष सुख करता है मंगलकी समान शनि हानि करता है ॥१॥

अथ विचारः

अखिलः सुखभावगता यदा जननिसौख्यकरा भवन्ति ते।
शुभविलोकनतः खलु पीडनं जठरवातगदं रविजोऽब्रवीत् ॥१॥

जो सब ग्रह सुखभावमें प्राप्त हों तो माताको सुख करनेवाले होते हैं, शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो भी यही फल है। अशुभ ग्रहोंसे पीडा, पेटमें वातरोग हो यह शनिका फल कहा है ॥१॥

हिबुकगाः खलु सौम्यखगा यदा हृदयरोगकराः परतापदाः।
नृपतिभीतिकरा अतिदुःखदाः पवनगुल्मकराश्च जलार्तिदाः ॥२॥

जो सौम्यग्रह चतुर्थभावमें हों तो हृदयके रोग करनेवाले, दूसरोंको ताप देनेवाले होते हैं तथा राजभयदायक, अतिदुःखदायक, पवनका गुल्म करनेवाले जलसे दुःख करते हैं ॥२॥

सुखगृहं यदि भौमयुतं तथा खलखगैः सहजेऽपि स एव चेत् ।
भवति वह्निकृतो जठरे गदो ज्वरसमीरणवह्निगदव्यथा ॥३॥

जो सुखस्थानमें केवल मंगल हो और सहज स्थानमें दुष्ट ग्रहोंसे युक्त हो तो उदरमें अग्निव्यथा हो और ज्वरवात वह्निकृत रोगोंकी व्यथा हो ॥३॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः ।
राहुश्च सहजे स्थाने तस्य माता न जीवति ॥४॥

जो लग्नमें जीव (वृहस्पति), धनमें शनि, सहजस्थानमें राहु हो तो उसकी माता नहीं जीती ॥४॥

लग्ने पापो व्यये पापो धने सौम्योपि संस्थितः ।
सप्तमे भवने पापः परिवारक्षयंकरः ॥५॥

लग्न और बारहवें पापग्रह हो, धनमें सौम्यग्रह हो, सातवें घरमें पापग्रह हो तो परिवारका क्षय करनेवाला होता है ॥५॥

सौम्यदृष्टयधिकत्वात्तु मातुर्धनसुखं भवेत् ।
पापदृग्धिकत्वात्तु मातृकष्टं सुखं नहि ॥६॥

जो अधिक सौम्य ग्रह चौथे घरको देखते हों तो मातासे धनका सुख मिले और अधिक क्रूरग्रहोंकी दृष्टि हो तो माताको कष्ट हो स्वप्नमें भी सुख न हो ॥६॥ इति सुखभावविवरणं संपूर्णम् ॥

अथ सुतभवनं पञ्चमम्

अमुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना दृष्टं वा न दृष्टम् ।

पांचवें घरसे देवता ग्रहयोग तथा स्वामीकी दृष्टिवशसे फलका विचार किया जाता है सो पूर्ववत् देखें ॥

तत्र विलोकनीयानि

बुद्धिप्रबन्धात्मजमन्त्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः । परिचिन्तनीयाः ॥१॥

वुद्धि प्रवंध पुत्र मंत्र विद्या विनय गर्भस्थिति नीतिसंस्था यह सब वार्ता पांचवें घरसे ज्योतिपियोंको विचारनी चाहिये ॥१॥

तत्र लग्नफलम्

मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रायेण पुत्रान्विधनांस्तथा च।
सुरात्सुखं नित्यकृता मुदः स्युः पापानुरक्तः कुलवित्तयुक्तः ॥१॥

जो पांचवें मेष लग्न हो तो उस मनुष्यके बहुधा धनहीन पुत्र होते हैं देवताओंसे सुख कर्मकर्ता पापमें प्रीति कुलके धनसे युक्त होवे ॥१॥

वृषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्राप्नोति कन्याः सुभगाः सुरूपाः।
अपत्यहीना बहुकांतियुक्ताः सदानुरक्ता निजभर्तृधर्मे ॥२॥

जो पांचवें वृषलग्न हो तो मनुष्य सुभग स्वरूपवान् कन्याओंको प्राप्त होता है और वे कन्या सन्तानहीन बहुत कांतियुक्त और सदा अपने स्वामीके धर्ममें युक्त रहती हैं ॥२॥

तृतीयराशौ सुतगे मनुष्यः प्राप्नोति पत्या निजसौख्यधर्मान्।
गीतानि सद्गानि गुणाधिकानि प्रभासमेतानि बलाधिकानि ॥३॥

जो पांचवें मिथुनराशि हो तो मनुष्य स्वामीसे सुखधर्मको प्राप्त होता है, सद्गीतवाला गुणवान् प्रतापी अधिक बली होता है ॥३॥

कर्कः सुतस्थो जनयेन्मनुष्यं शीतस्वभावं जलकेलिरक्तम्।
पुत्रान्वितं प्राप्तियशोधिकं च स्त्रीवल्लभं कामरतेन युक्तम् ॥४॥

जो पांचवें घरमें कर्क लग्न हो तो मनुष्य शीतल स्वभाव, जल विहारसे अनुरक्त हो, पुत्रसे युक्त, प्राप्ति और यशमें उत्तम, स्त्रीका प्यारा, काममें रत होता है ॥४॥

सिंहः सुतस्थो जनयेन्मनुष्यान्क्रूरस्वभावान्नयनीतिहीनान्।
मांसप्रियान्स्त्रीजनकान्सुतीव्रान्विदेशभाजः क्षुधया समेतान् ॥५॥

जो पांचवें घरमें सिंह लग्न हो तो उस मनुष्यके पुत्र क्रूर स्वभाव, नय और नीतीसे हीन, मांसप्रिय, स्त्रीजनक, तीव्रस्वभाव, विदेशभाजी और क्षुधायुक्त होते हैं ॥५॥

कन्या यदा पञ्चमगा तदा स्यात्कन्या नराणां तनयाविहीनौ।
पतिप्रिया पुण्यपरा प्रगल्भा प्रशांतपापा प्रियभूषणा च ॥६॥

जो पांचवें घरमें कन्या लग्न हो तो मनुष्योंके संतानसे हीन कन्या हो

और वह पतिप्रिया पुण्यपरायणा, बहुत बोलनेवाली, पापरहित, भूषणोंमें प्रीतिवाली होती है ।।६।।

तुला यदा पञ्चमगा नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि ।
भवत्यपत्यानि सुरूपकाणि क्रियासमेतानि शुभेक्षितानि ।।७।।

जो पांचवें घरमें तुला लग्न हो तो सुशील, मनोहर, रूपवान्, क्रियावान् और शुभ दृष्टिवाले पुत्र उस मनुष्यके उत्पन्न होते हैं ।।७।।

कीटे सुतस्थे जनयेत्तु योनौ पुत्रान्मनुष्यः सुभगान्सुशीलान् ।
अज्ञातदोषान्प्रणयेन युक्तान्सक्तश्च धर्मे सततं मनुष्यः ।।८।।

जो वृश्चिक पञ्चम घरमें हो तो मनुष्य सुन्दर शीलवान् अज्ञात दोप (दोषरहित) प्रणयसे युक्त पुत्रोंको उत्पन्न करता है और आप सदा धर्ममें आसक्त रहता है।।८।।

चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रांश्च पापान्कुमतीन्कुरूपान् ।
गंभीरचेष्टान्मतिसत्ययुक्तान्पुत्रान्मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धान् ।।९।।

धनुष लग्न पञ्चम घरमें हो तो उसके पुत्र पापी दुष्ट बुद्धिवाले, कुरूप, गंभीर चेष्टा धन्य मतिसे युक्त प्रसिद्ध होते हैं ।।९।।

मृगे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः सुतान्विचित्रान् हयलुब्धलक्षान् ।
धानुष्कचर्यान् हतशत्रुपक्षान्सेवाप्रियान्पार्थिवमानयुक्तान् ।।१०।।

मकर लग्न पञ्चम घरमें हो तो उस मनुष्यके विचित्र घोड़ेपर चढ़नेवाला, लक्ष्यसाधक, धनुर्धारी, शत्रुनाशक, सेवाप्रिय राजमान्य पुत्र होते हैं ।।१०।।

कुंभे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः प्रसन्नमूर्तीन्धनधान्ययुक्तान् ।
नष्टात्मजान्भूरिगुणैरुपेतान्कुपुत्रतः कष्टमथ प्रयाति ।।११।।

पांचवें घरमें कुंभलग्न हो तो उसके प्रसन्नमूर्ति, धन धान्ययुक्त, संतानसे हीन, अनेक गुणोंसे युक्त पुत्र होते हैं कुपुत्रोंसे कष्ट होता है ।।११।।

मीने सुतस्थे सति हास्ययुक्तान्पुत्रान्मनुष्यो लभते सुवर्यान् ।।
रोगैर्वियुक्तान्सुतरां सुरूपान्सुहास्यतास्त्रीसहता सदैव ।।१२।।

पांचवें मीनलग्न हो तो उस मनुष्यके श्रेष्ठ रोगरहित स्वरूपवान् पुत्र उत्पन्न होते हैं वह हास्ययुक्त स्त्रीके वचन सहनेवाला होता है ।।१२।।

इति पंचमभावे लग्नफलम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तिं सौख्येन युक्तं विविधार्थयुक्तम् ।
भ्रांतस्वांतं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनुस्थाने भानुमान्वर्त्तमानः ॥१॥

जो पञ्चम सूर्य हो तो थोड़ी सन्तान, शैल दुर्गेशकी भक्तिसे युक्त, सुखयुक्त और अनेक पदार्थोंसे युक्त तथा उस मनुष्यका चित्त सदा भ्रान्त रहता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः ।
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे ॥२॥

जिसके पञ्चम चन्द्रमा हो वह जितेन्द्रिय, सत्यवादी, शरणागत साधु, धन और पुत्रोंसे प्राप्त समस्त सुखवाला, संग्रह करनेमें तत्पर सुशील होता है ॥२॥

भौमफलम्

कफानिलव्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ।
मतिर्विलोमा विपुलो जयश्च प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥३॥

जिसके पञ्चम मंगल हो वह वात कफसे व्याकुल हो, स्त्री मित्र पुत्रोंसे सुख न मिले, बुद्धिमें विलोमता रहे और विपुल जय होवे ॥३॥

बुधफलम्

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मित्रवादकुशलं च सुशीलम् ।
मानवं किल करोति सुरूपं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः ॥४॥

पंचम बुध हो तो पुत्रोंके सौख्यसे युक्त, बहुतसे मित्र, मित्रवादमें कुशल, सुशील सुरूप मनुष्य होता है इसमें सन्देह नहीं ॥४॥

गुरुफलम्

सन्मंत्रपुत्रोत्तममंत्रशस्त्रसुखानि नानाधनवाहनानि ।
बृहस्पतिः कोमलवाग्विलासं नरं करोत्यात्मजभावसंस्थः ॥५॥

जो पञ्चम गुरु हो तो उत्तम पुत्र मन्त्र शस्त्र सुख अनेक प्रकारके धन वाहनोंकी प्राप्ति हो, कोमल वाणीके विलाससे युक्त, वह पुरुष गंभीर होता है॥५॥

भृगुफलम्

सुकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ।
सुरपतिर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥६॥

जिसके पंचम शुक्र हो वह संपूर्ण काव्य कलासे युवत, पुत्र वाहन धनसे युक्त सुरपति गुरुसे भी गौरवका पानेवाला होता है अर्थात् उसका सब मान करते हैं ॥६॥

शनिफलम्

सुजर्जरक्षीणतरं वपुश्च धनेन हीनत्वमनङ्गहीनम् ।
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रे स्थितः पुत्रभयं करोति ॥७॥

जिसके पंचम शनि हो उसका अति जर्जर क्षीण शरीर हो, धनसे हीन कामहीन हो और पुत्रोंको भी भय करनेवाला है ॥७॥

राहुफलम्

सुते सद्मनि स्याद्यदा सैंहिकेयः सुतेच्छा चिरं चित्तसंतापनीया ।
भवेत्कुक्षिपीडा मृतिः क्षुत्प्रबोधाद्यदि स्यादयं स्वीयवर्गेण दृष्टः ॥८॥

जो राहु पंचम हो तो वहुत कालतक पुत्रकी प्राप्तिमें चिन्ता रहे, कोखमें पीडा होवे और वह यदि राहु अपने वर्गसे देखा गया हो तो क्षुधासे उस पुरुषकी मृत्यु हो ॥८॥

केतुफलम्

यदा पञ्चमे जन्मतो यस्य केतुः स्वकीयोदरे वातघातादिकष्टम् ।
स्वबुद्धिव्यथा सन्ततिस्वल्पपुत्रः सदाधेनुलाभादियुक्तो भवेच्च ॥९॥

जिसके केतु पंचम हो उसके उदरमें वातघातादिका कष्ट रहे, बुद्धिमें विकलता होवे, थोड़ी सन्तान और धेनुलाभादिसे युक्त हो ॥९॥

इति ग्रहफलम्

अथ सुतभवनेशफलम्

लग्ने गते सन्ततिपे सुतानां सुखं सुविद्यारतिमन्त्रसिद्धिः ।
शास्त्राणि जानाति सुकर्मकारी रागाङ्गयुक्तः खलु विष्णुभक्तः ॥१॥

यदि पंचमेश लग्नमें हो तो पुत्रोंका सुख, विद्यामें प्रेम तथा मंत्र सिद्धि होवे, शास्त्रज्ञाता, सुकर्मकर्ता, अंगरागयुक्त, विष्णुका भक्त होता है ॥१॥

सुतेशे गते द्रव्यभावे नरः स्यात्कुलेशाप्तवित्तः कुटुम्बे विरोधी ।
भवेद्धानिकारी जनो भोगसक्तः शुभैर्जीवपुत्रो भवेद्द्रव्यनाथः ॥२॥

जो पंचमेश धनस्थानमें हो तो कुलेशसे द्रव्यकी प्राप्ति, कुटुम्बमें विरोध, हानि करनेवाला, भोगासक्त हो शुभग्रहोंसे युक्त हो तो चिरजीवी पुत्रोंवाला द्रव्याधीश होता है ॥२॥

सुतेशे गते विक्रमे विक्रमी स्यात्सुहृच्छांतियुक्तो वचोमाधुरीयुक् ।
शुभे खेटयुक्ते शुभप्राप्तिकारी मनःकार्यसिद्धिः सुखी शान्तनम्रः ॥३॥

जो सुतेश (पंचमपति) तीसरे हो तो पुरुष पराक्रमी, सुहृत्, शांति-युक्त, मधुर वचन बोलनेवाला हो, शुभग्रहोंसे युक्त शुभ लाभ करे, मनके कार्य सिद्ध हों, सुखी शांत और नम्र हो ॥३॥

सुतपतिः कुरुते सुखभावगो जनकभक्तिकरं कुशलं नरम् ।
तदनु पूर्वजकर्मकरं सदा कविजने वसुवस्त्रनिरूपणम् ॥४॥

जो पुत्रेश चौथे घरमें हो तो पिता माताकी भक्ति करनेवाला कुशल, पूर्वजोंके कर्म करनेवाला, कविजनोंको धनादिका देनेवाला होता है ॥४॥

तनयभावपतिस्तनयस्थितो मतियुतं वचनं प्रबलं जनम् ।
बहुलमानयुतं पुरुषोत्तमं प्रवरलोकवरं कुरुते नरम् ॥५॥

जो सुतेश पंचम हो तो वह पुरुष बुद्धिमान्, प्रवल वचन बोलनेवाला, बहुत मानसे युक्त, पुरुषश्रेष्ठ तथा सबसे अधिक श्रेष्ठ होता है ॥५॥

रिपुगतस्तनयाधिपतिर्यदा रिपुजनाभिरतं कुरुते नरम् ।
स्थिततनुं बहुदोषयुतं सदा धनसुतै रहितं खलखेचरैः ॥६॥

पंचमेश छठे हो तो मनुष्य शत्रुओंसे मिलनेवाला, दृढ़शरीर, अनेक दोषोंसे युक्त होवे, दुष्ट ग्रहोंसे युक्त हो तो धन पुत्रसे रहित होता है ॥६॥

मदनगस्तनयस्थलनायकः सुभगपुत्रवती दयिता सदा ।
स्वजनभक्तिरता प्रियवादिनी सुजनशीलवती तनुमध्यमा ॥७॥

जो पंचमेश सप्तम हो तो उसकी स्त्री सुंदर पुत्रवाली होती है, अपने

जनोंका भक्तिमें तत्पर प्रियवादिनी सुजना शीलवती पतली कमरवाली होती है ॥७॥

सुतपतौ निधनस्थलगे नरः कुवचनाभिरतो विगताङ्गकः ।
भवति चण्डरुचिश्चपलो नरो गतधनो विकलःशठतस्करः ॥८॥

जो सुतेश अष्टम हो तो मनुष्य कुवचन बोलनेवाला विकल अंग होता है, तथा चण्डरुचि चपल धनहीन विकल शठ और तस्कर होता है ॥८॥

सुकृतभावगतस्तनयाधिपः समावितर्कविभाजनवल्लभः ।
सकलशास्त्रकलाकुशलो भवेन्नृपतिदत्तरथाश्वयुतो नरः ॥९॥

जो सुतेश नवम हो तो मनुष्य वितर्कवाला, मनुष्योंका प्रिय, सम्पूर्ण शास्त्रोंकी कलामें कुशल, राजाके दिये रथादिसे युक्त होता है ॥९॥

दशमगः कुरुते सुतनायको नृपतिकर्मकरं सुखसंयुतम् ।
विविधलाभयुतं प्रवरं नरं प्रवरकर्मकरं वनितारतम् ॥१०॥

पुत्रेश दशम घरमें हो तो राजोंके कर्म करनेवाला, सुखसहित अनेक लाभसे युक्त, प्रबल श्रेष्ठ कर्मकर्ता, वनिताप्रिय होता है ॥१०॥

सुतपतिर्भवगः सुखसंयुतं प्रकुरुते सुतमित्रयुतं नरम् ।
प्रवरगानकलाप्रवरं विभुं नृपतितुल्यकुलं च सदैव हि ॥११॥

जो पंचमेश ग्यारहवें हो तो सुखसे युक्त पुत्र और मित्रोंसे युक्त, गानविद्यामें कुशल और सदा राजोंके तुल्य कुलवाला मनुष्य होता है ॥११॥

व्ययगतो व्ययकृत्सुतनायको विगतपुत्रसुखं खचरैः खलैः ।
सुतयुतं च शुभैः कुरुते नरं स्वपरदेशगमागमनोत्सुकम् ॥१२॥

जो पंचमेश बारहवें हो तो विशेष व्यय हो, खल ग्रह हो तो पुत्रका सुख न मिले, शुभ ग्रह हो तो पुत्रवान् स्वदेश और परदेशके जाने आनेमें उत्साही होता है ॥१२॥ इति पुत्रादिफलम् ।

अथ दृष्टिफलम्

रविदृष्टिफलम्

सुतगृहे यदि सूर्यनिरीक्षिते प्रथमसंततिनाशकरश्च हि ।
तदनुपीडितवातयुतः सदा गृहभवाल्पसुखः कथितः सदा ।।१।।

पुत्रके घरको यदि सूर्य देखता हो तो पहली सन्तानका नाश करता है, पीछे सदा वातसे पीडा और स्त्रीका सुख न्यून होता है ।।१।।

चन्द्रदृष्टिफलम्

सुतस्थानगा चंद्रदृष्टिर्यदा स्यात्प्रसूते सुखं मित्रजन्यं सदैव ।
नरेन्द्रादितुल्यः स्ववंशे प्रधानोऽप्यथैवान्यदेशे क्रयेजीवितं च ।।२।।

जो पुत्रस्थानमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो मित्रोंसे सुख, अपने वंशमें राजाकी तुल्य प्रधान, दूसरे देशमें क्रय विक्रयकी आजीविका करे ।।२।।

भौमदृष्टिफलम्

सुतगृहे यदि भौमनिरीक्षिते प्रथमसंततिनाशकरश्च हि ।
जठरगः खलु वह्निरथाधिको भोजने भ्रमति चैव गृहे गृहे ।।३।।

पुत्रगृहमें यदि मंगलकी दृष्टि हो तो पहली सन्तानका नाश करे, उदरमें तीव्र अग्नि हो, भोजनके निमित्त घर घर घूमता फिरै ।।३।।

बुधदृष्टिफलम्

संपूर्णदृष्टिर्यदि पंचमे च बुधो यदा स्यात्तनयाप्रसूतिः ।
चतुष्टयान्ते खलु पुत्रजन्म सुकीर्तिरैश्चर्ययुतो नरो हि ।।४।।

यदि पांचवें घरमें बुधकी पूर्ण दृष्टि हो तो कन्या ही उत्पन्न हो चार कन्या होनेपर पुत्र हो यश और ऐश्वर्यवान् मनुष्य होता है ।।४।।

गुरुदृष्टिफलम्

सन्तानभावे गुरुपूर्णदृष्टिः सन्तानसौख्यं प्रचुरं करोति ।
शास्त्रेषु नैपुण्यमथो च लक्ष्मीं विद्यां धनं वै चिरजीवितं च ।।५।।

जो पंचम घरमें गुरुकी पूर्णदृष्टि हो तो वह सन्तानका सुख अत्यन्त करता है और सब शास्त्रमें चातुर्य लक्ष्मी विद्या धन और आयुकी वृद्धि करता है ।।५।।

भृगुदृष्टिफलम्

सुतगृहं यदि काव्यनिरीक्षितं तनयजन्म पुनश्च सुता भवेत् ।
द्रविणवान्खलु धान्यसुसंचयीपठतिशास्त्रमथापि च सौख्यभाक् ॥६॥

जो पुत्रघरपर शुक्रकी दृष्टि हो तो पहले पुत्र फिर पुत्री हो और वह मनुष्य द्रव्यसे युक्त धनसंचय करनेवाला होता है, विद्या पढ़नेवाला तथा सुखभोगी होता है ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

सुतगृहं यदि मन्दनिरीक्षितं सुतसुखं न करोति नरस्य हि ।
स्थिरमना यशआमयवृद्धिभाक्स्वकुलधर्मरतश्च चिरं भवेत् ॥७॥

पुत्रघरको यदि शनि देखता हो तो मनुष्यको पुत्रका सुख नहीं होता और वह स्थिर मनवाला यशस्वी रोगी तथा बहुत कालतक अपने कुलके धर्ममें रत होवे ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

सुतगृहं यदि राहुनिरीक्षितं सुतसुखं न करोति नरस्य हि ।
तदनु भाग्ययुतो नृपतेर्जयः श्रमकृता विफलापि हि भारती ॥८॥

पुत्रके स्थानमें यदि राहु हो तो उस मनुष्यको पुत्रका सुख नहीं होता है पीछे भाग्ययुक्त हो और राजासे जय हो श्रम करनेसे भी उसकी विद्या निष्फल होती है ॥८॥ इति संतानभावे दृष्टिफलम् ॥

अथ वर्षसंख्या

रविर्भयं पितृमृतिर्नवमे च चन्द्रः षष्ठेऽग्निभीर्धरणिजोऽनुजहा- शराब्दे । मातुःक्षयं रसयमेपि च रिष्टमातु लोगे मातुलार्तिमुशना शरवर्षलक्ष्मीम् ॥१॥

रवि ९ वर्ष फल भय, चन्द्र ९ पितृवियोग, मंगल ६ अग्निभय, बुध ६ माताक्षय, गुरु ७ मामाको दुःख, शुक्रकी दशा पांच वर्ष लक्ष्मी मिले ॥१॥

अथ विचारः

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमे सुतः स्यात् ।
तुर्ये स्थितेऽस्मिश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वित्तयुतो नरःस्यात् ॥१॥

लग्नसे दूसरे वा तीसरे वा प्रथम लग्नपति हो तो पुत्र होता है चौथे घरमें हो तो उसके दूसरा पुत्र फिर पुत्री पुत्र हो और उसके धन भी होवे ।।१।।

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्टया सहितं विलोक्यम् ।
सन्तानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वेन विपर्ययं च ।।२।।

यदि पंचम घरको शुभग्रह देखते हों वा शुभग्रहोंसे युक्त हो तो यह संतानयोग जानना इससे विपरीतका विपरीत फल कहना ।।२।।

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः सन्तानलब्धिं शुभदृष्टियुक्तः ।
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ।।३।।

जो पंचम घरको उसका स्वामी देखता हो वा शुभग्रहकी दृष्टि हो तो सन्तानकी प्राप्ति हो और खलग्रहोंसे दृष्टि हो स्वामी न देखता हो तो विपरीत फल हो ।।३।।

व्ययं वित्तं तृतीयं वा लग्नेशः पश्यताद्यदि ।।
तुर्यलग्नं पञ्चमस्थः पुरः पुत्रस्य जन्म च ।।४।।

जो द्वादश दूसरे तीसरे और चौथे लग्नको पंचम स्थानमें स्थित लग्नेश देखे तो पहले पुत्रका जन्म होता है ।।४।।

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयन्ति नूनम् ।
गते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ।।५।।

जो शुक्र मंगल चन्द्रमा द्विस्वभाव लग्नमें स्थित हों तो पहले निश्चयसे संतान होती है और यदि धन लग्नमें स्थित होवें तो आदि अन्तमें सन्तान नहीं होती।।५।।

सन्तानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ।
स्यात्सन्ततिर्वित्तमथो वदन्ति नीचोच्च मित्रारिगृहे स्थितानाम् ।।६।।

सन्तान भावको नीच उच्च मित्र शत्रु गृहमें स्थित जितने ग्रह देखते हों उतनी सन्तति हों तथा धन होवे । यहां किसीका मत ऐसा है कि–"नीचोच्चमित्रारिगृहस्थितानां दृशः शुभानां शुभमशुभकाणाम्" इति वैष्णवतन्त्रे । शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे सन्तानको शुभ और अशुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे अशुभ होता है ।।६।।

नवांशसंख्याप्यथवांकसंख्या दृष्टया शुभानां द्विगुणा च संख्या ।
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगान्मिश्रं च मिश्रग्रहदृष्टिरत्र ।।७।।

पंचम भावमें जिसका नवांश हो अथवा पंचम भावमें जो अंक हों उस संख्याके तुल्य सन्तानोत्पत्ति होवे यदि पंचम भावमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो उक्त संख्यासे द्विगुण संख्या समझना चाहिये और यदि पापग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो तो दुःखसे संतान कहना चाहिये और जो मिश्र ग्रह हो तो मिश्र अर्थात् मिला हुआ फल होता है ॥७॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः ।
सौम्यग्रहैकेन न वीक्षितश्च सन्तानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥८॥

जो पंचम भावमें पाप ग्रहकी राशि होवे और पाप ग्रहसे युक्त हो और एक भी सौम्यग्रहकी दृष्टि न हो तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥८॥

कविः कलत्रे दशमे मृगाङ्कः पातालयाताश्च खला भवन्ति ।
प्रसूतिकाले च यदि ग्रहास्तदा सन्तानहीनं जनयन्ति नूनम् ॥९॥

यदि जन्मकालमें शुक्र सातवें चंद्रमा दशवें खल ग्रह चौथे स्थित हों तो मनुष्य संतानहीन होता है ॥९॥

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बह्वन्यपत्यानि विधोरपीदम् ।
दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंशे शिशुसंमितिः स्यात् ॥१०॥

यदि पंचम भावमें शुक्रका नवांश होय और शुक्रोंकी दृष्टि होवे तो अनेक सन्तान उत्पन्न होवे इसी प्रकार चन्द्रमाके नवांशमें भी बहुत सन्तान होते हैं और पंचम भावाधिपति यावत्संख्यक नवांशमें होय तावत्संख्यक दासीसे उत्पन्न पुत्र कहना उचित है ॥१०॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युतेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् ।
भवन्ति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने ॥११॥

शुक्र और चन्द्रमाके वर्गसे युक्त पंचम भाव हो वा शुक्र और चन्द्रमाकी पंचम भावपर दृष्टि हो और समराशिके वर्गमें हो तो कन्या और विषमराशिके वर्गमें हो तो पुत्र होते हैं ॥११॥

मन्दस्य राशिः सुतभावसंस्थो मन्देन युक्तः शशिनेक्षितश्च ।
दत्तात्मजाप्तिः शशिवद्बुधेपि क्रीतः सुतस्तस्य नरस्य वाच्यः ॥१२॥

जो मकर वा कुंभ राशि पंचम होय और शनिसे युक्त हो वा चन्द्र देखता हो तो दत्तक पुत्र उसके होता है और यदि चन्द्रमाके तुल्य बुध योगकर्त्ता होय तो क्रीतक पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥१२॥

मदस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरेणापि सुवीक्षिते च।
दिवाकरेणाथ नरस्य तस्य पुनर्भवासम्भवसूतिलब्धिः ॥१३॥

शनिवर्ग पुत्रभावमें स्थित हो चन्द्रमा देखता हो वा सूर्य देखता हो तो उस मनुष्यको पुनर्भवासे सन्तान होती है ॥१३॥

शनेर्गणे सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते वै रविभूमिजाभ्याम्।
पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोथ बौधे गणेपि गेहे रविजेन दृष्टे ॥१४॥

जिसके जन्मकालमें पुत्रभावमें शनिका षड्वर्ग होवे और बुध तथा रवि मंगलकी दृष्टि हो तो उस मनुष्यकी स्त्रीमें किसी अन्यसे संतान पैदा होवे और यदि उसी भावमें बुधका षड्वर्ग हो और वह शनिसे देखा गया हो तो भी पूर्ववत् फल कहना चाहिये ॥१४॥

नवांशकाः पञ्चमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः।
नश्यन्ति गर्भाः खलु तत्प्रमाणाश्चेदीक्षणं नो शुभखेचराणाम् ॥१५॥

जो नवांशकके ग्रह पञ्चम भावमें स्थित हों और जितने पापग्रहोंसे देखे गये हों शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो उतनेही गर्भ नष्ट होते हैं ॥१५॥

भूनन्दतो नंदनभावयातो जातं च जातं तनयं हि हन्ति।
दृष्टो यथा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमश्च जीवेत् ॥१६॥

जो मंगल पञ्चम हो तो उत्पन्न होते हुए ही पुत्रोंका नाश करता है और जो वृहस्पतिकी दृष्टि हो वा शुक्रकी दृष्टि हो तो प्रथम पुत्र जीवित रहे ॥१६॥

झषधनुर्द्धरपंचमभावगः प्रसवसौख्यफलं न हि दृश्यते।
मृतप्रजः खलु पंचमगे गुरौ तदिह दृष्टिफलं शुभमश्नुते ॥१७॥

जो मीन धनुपलग्न पंचभावमें स्थित हो तो प्रसवके सुखका फल नहीं होता प्रजा मृत्युको प्राप्त हो जो गुरु पंचम हो या उसकी दृष्टि हो तो शुभफलकी प्राप्ति होती है ॥१७॥

सुतपतिरिह केन्द्रे पापगः पापदृष्टो भवति गतिगरिष्ठः शास्त्रवेत्ता च शूरः। लिपिकरणप्रवीणः संततेश्चापि दुःखं कृतहरिशिवपूजः संततिं वै लभेत ॥१८॥

जो पंचमेश केन्द्रमें पापग्रहकी राशिमें हो पापग्रहसे दृष्ट हो तो मनुष्य गतिमें श्रेष्ठ शास्त्रज्ञाता शूर होता है, लिखनेमें चतुर हो सन्तानका दुःख रहे नारायण और शिवके पूजनसे संतान हो ॥१८॥

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापवीक्षितो वापि।
संततिबाधां कुरुते केन्द्रे पापान्विते चन्द्रे ॥१९॥

सुतेशका अस्त हो व पापग्रह युक्त वा पाप ग्रहोंसे देखा गया हो और केन्द्रमें पापग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो सन्तानकी बाधा करता है ॥१९॥

तुलामीनमेषे वृषे दैत्यपूज्ये धनी राजमानी कलाकौतुकी च।
त्रयोऽस्यात्मजा वै चिरंजीविताश्च भवेद्वत्सरे वह्निभीतिर्द्वितीये ॥२०

जिसके तुला मीन मेष और वृष लग्नमें शुक्र हो तो वह धनी राजमानी कला कौतुकवाला होता है, तीन पुत्र उसके चिरंजीवी रहें और दूसरे वर्षमें कुछ अग्निभय होता है ॥२०॥

एकः पुत्रो रवौ पुत्रस्थाने चंद्रे सुताद्वयम्।
भौमे पुत्रास्त्रयो वंश्या बुधे पुत्रीचतुष्टयम् ॥२१॥

सुतभवनमें सूर्य होनेसे एक पुत्र, चन्द्रमासे दो कन्या, मंगलसे वंशमें रहनेवाले तीन पुत्र, बुधसे चार कन्या होती हैं ॥२१॥

गुरौ गर्भे सुताः पंच षट् पुत्रा भृगुनंदने।
शनौ च गर्भपातः स्याद्राहौ गर्भो भवेन्न हि ॥२२॥

गुरु हो तो पांच पुत्र, शुक्र हो तो छः पुत्र, शनि हो तो गर्भपात हो, राहु हो तो गर्भही नहीं रहता है ॥२२॥

सौम्यदृष्टयधिके संतानसुखं पापदृष्टयधिके संतानपीडा ॥२३॥

अधिक सौम्यग्रह देखते हों तो सन्तान सुख, पाप ग्रहोंकी अधिक दृष्टिसे सन्तानपीडा होती है ॥२३॥ इति सुतभावफलं समाप्तम् ॥

अथ षष्ठं रिपुभवनम्

अमुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना
दृष्टं वा न दृष्टमन्यैः शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं युतं न वेति ॥

छठे भावमें भी देवता ग्रहदृष्टि भावस्वामी तथा शुभाशुभ ग्रहोंके संबंधसे पूर्ववत् विचार करना ॥

तत्र विलोकनीयानि

वैरिव्रातक्रूरकर्मामयानां चिन्ताशङ्कामातुलानां विचारः ।
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥१॥

ज्योतिष शास्त्रके जाननेवाले विद्वानोंको चाहिये कि, छठे घरमें अरिसमूह, क्रूरकर्म रोगोंकी चिंता, शङ्का तथा मामाका विचार करे ॥१॥

लग्नफलम्

मेषे रिपुस्थे प्रभवन्ति पुंसां चतुष्पदां सौख्ययुता प्रसिद्धिः ।
प्रसन्नचेता रिपुघातकश्च कार्ये विनाशश्च नरस्य लोके ॥१॥

जो छठे घरमें मेष लग्न हो तो पुरुषको चौपायोंसे सुख, प्रसन्न चित्त, शत्रुनाशक तथा उसके कार्यका नाश होता है ॥१॥

चतुष्पदार्थे प्रभुवेत्तु वैरं सदा नराणां वृषभे रिपुस्थे ।
अपत्यवर्गोऽपि गतोऽङ्गनानां सङ्गाभिमानं निजबन्धुवर्गे ॥२॥

जो छठे स्थानमें वृष लग्न हो तो चौपायोंके निमित्त वह सदा वैर करे, सन्तानवर्गमें प्राप्त हो तो अंगना और अपने बंधुजनोंके संगका अभिमान होता है॥२॥

तृतीयराशौ रिपुगे नराणां वैरं भवेत्स्त्रीजनितं सदैव ।
तथा नराणां सहितं च पापैर्वणिग्जनैर्नीचजनानुरक्तः ॥३॥

छठे घरमें मिथुन राशि हो तो उस मनुष्यका स्त्रीसे वैर रहे, पापग्रह साथमें हो तो वणिग्जन और नीचजनोंमें प्रेम करनेवाला होता है ॥३॥

कर्के रिपुस्थे सहजैश्च युक्तो भवेन्मनुष्यश्च सुतादियुक्तः ।
समो द्विजेन्द्रैश्च नराधिपैश्च महाजनेनैव विरोधकर्ता ॥४॥

यदि छठे कर्क लग्न हो तो वह मनुष्य अपने भाई पुत्रादिसे युक्त राजा और अच्छे ब्राह्मणोंके समान होता है और वह प्रतिष्ठित महान् मनुष्योंके साथही विरोध करनेवाला होवे ॥४॥

सिंहे रिपुस्थे प्रभुवेच्च वैरं पुत्रैः समं बन्धुजनेन नित्यम् ।
धनोत्थपार्तस्य विनिर्जितस्य यद्वा मनुष्यस्य वराङ्गनाभिः ॥५॥

सिंह लग्न छठे हो तो पुत्र और बंधुजनोंके साथ नित्य वैर हो। यद्वा वेश्याओंमें आसक्त तथा आर्त उस मनुष्यका धनके निमित्त वैर होवे ॥५॥

कन्यास्थितः शत्रुगृहे स्ववैरं कार्यं स्वधर्मस्य नरस्य साधोः।
स्वबन्धुवर्गाच्च निजालयस्थो रिपुव्रजोऽपि प्रभवेन्नराणाम् ॥६॥

छठे घरमें कन्या लग्न हो तो अपने घरमें वैर करे और वह मनुष्य धर्म तथा साधुजनोंका कार्य करनेवाला हो, अपने बन्धुवर्गसे घरमें स्थित हुआ वर्ते तथा उसके शत्रु अधिक बल करें ॥६॥

तुलाधरे शत्रुगृहे नरस्य नाथे स्थितस्य प्रभवेच्च वैरम्।
दुश्चारिणीभिश्च सुताङ्गनाभिर्वेश्याभिरेवाश्रमवर्जिताभिः ॥७॥

तुला लग्न छठे घरमें हो तो उस मनुष्यकी अपने स्वामीसे अनबन रहे तथा दुश्चरित्रसे युक्त सुत और अंगना तथा आश्रमवर्जित वेश्याजनोंसे उसका समागम हो ॥७॥

कौर्प्ये रिपुस्थे प्रभवेत्तु वैरं सार्द्धं द्विजिह्वैश्च सरीसृपैश्च।
व्यालैर्मृगैश्चोरगणैर्नराणां भवेत्स्वधान्यैश्च विलासिभिश्च ॥८॥

वृश्चिक लग्न छठे घरमें हो तो सर्प और सरीसृप टेढ़े चलनेवाले जीवोंसे वैर होता है तथा व्याल मृग चोरगण और स्त्री जनोंसे भी वैर होता है ॥८॥

चापे रिपुस्थे च भवेद्धि वैरं शरैः समेतं च सरावकैश्च।
सदा मनुष्यैश्च हयैश्च हस्तिभिः पुनस्तथान्यैः परवञ्चनैश्च ॥९॥

छठे घरमें धन लग्न हो तो शब्दयुक्त बाणोंके द्वारा मनुष्य हाथी घोड़ोंसे वैर करे तथा अन्य परवंचनसे भी वैर करनेवाला होता है ॥९॥

मृगे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं सदा नराणां धनसम्भवञ्च।
मित्रैः समं साधुमहाजनेन प्रभूतकालं गृहसम्भवेन ॥१०॥

जो छठे घरमें मकर लग्न हो तो मनुष्योंसे धनके निमित्त सदा वैर करे मित्र साधु महाजन तथा गृहवालोंसे बहुत कालतक वैर रहे ॥१०॥

कुम्भे रिपुस्थे च तथार्थहेतोर्नराधिपेनैव जलाश्रयैश्च।
वापीतडागादिभिरेव नित्यं क्षेत्रादितो वै पुरुषैः सुशीलैः ॥११॥

कुंभ लग्न छठे हो तो धनके निमित्त नराधिपति जलाशयवाले जीव बावड़ी तालाब क्षेत्र और सुशील पुरुषोंसे वैर रक्खे ॥११॥

मीने रिपुस्थे च भवेन्नराणां वैरं च नित्यं सुतवस्तुजातम् ।
स्त्रीहेतुकं स्वीयजनेषु नूनं पितुः परैः साकमथातिवैरम् ॥१२॥

जो छठे मीन लग्न हो तो पुत्र और दूसरी वस्तुके निमित्त स्त्रीके निमित्त प्रियजन तथा पिताके सिवाय अन्योंसे वैर रहे ॥१२॥

इति रिपुलग्नफलम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहन्ता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महौजाः ।
पृथ्वीभर्तुः स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंज्ञो यदि स्यात् ॥१॥

जो छठे घरमें सूर्य हो तो निरंतर सौख्य सहित शत्रुओंका मारनेवाला पराक्रमी उत्तम रथ आदि सवारियोंसे युक्त महावली राजाका मन्त्री होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

मन्दाग्निः स्यान्निर्दयः कोपयुक्तो लौल्योपेतो निष्ठुरो दुष्टचित्तः ।
रोषावेशोन्त्यंतसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥२॥

यदि छठे स्थानमें चन्द्रमा हो तो उस पुरुषके मंदाग्नि होती है तथा वह निर्दयी, क्रोधयुक्त, चंचल, निष्ठुर, दुष्टचित्त और क्रोधके आवेशसे बहुत शत्रुओंवाला होता है ॥२॥

भौमफलम्

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोषावेशः शत्रुवर्गेऽपि शांतिः ।
सद्भिः सङ्गो धर्मिभिः स्यान्नराणां गोत्रैः पुण्यस्योदयो भूमिसूनौ ॥३॥

छठे स्थानमें यदि मंगल हो तो उस मनुष्यकी जठराग्नि अत्यन्त प्रवल होती है, शत्रुवर्गमें शांति होवे, धर्मात्मा, सत्पुरुषोंसे मेल तथा अपने गोत्रके जनोंसे पुण्यका उदय होता है ॥३॥

वुधफलम्

वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः ।
नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथात्मजे स्यात् ॥४॥

यदि छठे स्थानमें बुध हो तो झगड़ेमें प्रीति करनेवाला, रोगसे युक्त निष्ठुर चित्त तथा अनेक शत्रुसमूहोंसे संतप्त चित्त, नित्य आलस्यसे व्याकुल, होवे और उसके चित्तमें शांति न हो ॥४॥

गुरुफलम्

सद्गीतनृत्यादृतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोथो निजशत्रुहन्ता ।
आरम्भकालोद्यमकृन्नरः स्यात्सुरेन्द्रमन्त्री यदि शत्रुसंस्थः ॥५॥

जो छठे स्थानमें वृहस्पति हो तो अच्छे गीत और नृत्यमें चित्त वृत्ति लगे, कीर्तिप्रिय शत्रुहंता हो और कार्यका आरंभ करनेवाला होता है ॥५॥

भृगुफलम्

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ।
विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेरिगतेरिभयान्वितः ॥६॥

जो छठे घरमें शुक्र हो तो वह स्त्रीजनोंका प्रिय नहीं होता तथा कामदेवसे हीन और निर्वलता करके सहित शत्रुओंके भयसे युक्त होता है ॥६॥

शनिफलम्

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः स्वज्ञानिजानां परिपालकश्च ।
पुष्टाङ्गयष्टि प्रबलोदराग्निर्नरोर्कपुत्रे सति शत्रु संस्थे ॥७॥

यदि छठे शनि हो तो वह मनुष्य शत्रुओंका जीतनेवाला, गुणी, अपनी जातिका पालनेवाला, पुष्ट शरीरवाला, प्रवल जठराग्निवाला वलिष्ठ होता है ॥७॥

राहुफलम्

बलोद्बुद्धिहानिर्धनं तद्वशे च स्थितो वैरभावेऽपि येषां तनूनाम् ।
रिपूणामरण्यं दहेदेकराहुः स्थिरं मातुलं मानसं नो पितृभ्यः ॥८॥

जिसके छठे घरमें राहु हो वह बल बुद्धिसे हीन हो, धन उसके वशमें हो, शत्रुओंका नाश होवे तथा मामा और पिताके मनमें स्थिरता न हो ॥८॥

केतुफलम्

शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातृपक्षाच्च तन्मानभङ्गः ।
चतुष्पात्सुखं सर्वदा तुच्छमेव निरोगो गुदे लोचने रोगयुक्तः ॥९॥

जो केतु छठे घरमें हो तो शत्रुनाश हो, मामाके पक्षसे मानभंग, चौपायोंसे तुच्छ सुख हो, निरोग हो परंतु गुदा और नेत्रोंमें रोग होता है ॥९॥

इत्यरिभावे ग्रहफलम् ।

अथ रिपुभवनेशफलम्

रिपुपतौ रिपुहा तनुगे यदा विगतवैरभयः सवलः सदा ।
स्वजनकष्टप्रदश्च पुमान्सदा बहुचतुष्पदवाहनभोगवान् ॥१॥

जो छठे घरका स्वामी शरीरस्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला हो, वैर और भयसे हीन बलवान् हो अपने जनोंको कष्ट देनेवाला, चौपाये वाहनोंका भोगनेवाला होता है ॥१॥

रिपुपतौ द्रविणे चतुरो नरः कठिनताधनसंग्रहणे क्षमः ।
निजपदप्रवरो विदितश्चलो गदयुतः कृशगात्रयुतो नरः ॥२॥

यदि रिपुपति धनस्थानमें हो तो वह मनुष्य चतुर, कठिनतासे धनसंग्रह करनेमें समर्थ हो, अपने पदमें श्रेष्ठ प्रसिद्ध चलायमान रोगी और शरीरसे कृश होता है ॥२॥

सहजगे रिपुभावपतौ क्षमी खलरतः कुरुते बहुकर्मकः ।
पितृभुजाप्तधनव्ययकारको बहुलकोपभरः सहजोज्झितः ॥३॥

जो शत्रुपति तीसरे स्थानमें हो तो वह पुरुष क्षमावान्, दुष्टोंमें प्रीतिवाला, बहुत कर्मोंका करनेवाला, पिताके उत्पन्न किये धनको खर्च करनेवाला, महाक्रोधी भाइयोंसे त्यक्त होता है ॥३॥

सुखगतेरिपतौ पितृपक्षपः कलहवान्वपुषा च रुजान्वितः ।
तदनु तातधनेन युतो बली जननिसौख्ययुतश्चपलः स्मृतः ॥४॥

जो शत्रुपति चौथे हो तो वह पुरुष पितृपक्षका पालक, कलहप्रिय, रोगी, पिताके धनसे धनी बली और माताके सुखसे युक्त चपल होता है ॥४॥

रिपुपतौ तनयस्थलगे भवेत्पितृसुताद्यतिवादकरः प्रियः ।
मृतसुतश्च खलग्रहयोगतः शुभयुतोपि धनाद्भुत एव सः ॥५॥

शत्रुपति पञ्चम हो तो पिता और पुत्रोंसे विवाद करनेवाला हो, खल ग्रहोंसे युक्त हो तो पुत्र नष्ट होवें, शुभग्रह हों तो अद्भुत धनकी प्राप्ति होती है ॥५॥

निजगृहे रिपुभावपतौ नरो रिपुगतः कृपणश्च खलोज्झितः ।
स तु निजस्थललब्धसुखः सदा भवति जन्मरतः पशुयोबितः ॥६॥

जो शत्रुपति अपने घरहीमें हो तो वह शत्रुपक्षमें प्राप्त कृपण हो

और दुष्टोंसे त्याग किया जावे तथा अपने स्थानके सुखमें लुब्ध हो पशु और स्त्रीसे अनुरक्त होता है ॥६॥

अरिपतौ मदने खलसंयुते प्रवरकामभरावनितायुतः।
बहुलवादकरो विषसेवकः शुभखगैर्बहुलाभसुतान्वितः ॥७॥

जो शत्रुपति सप्तम हो और खल ग्रहोंसे संयुक्त हो तो वह पुरुष अतिकामवाली स्त्रीसे युक्त हो, बड़ा विवादी, विषसेवी हो, यदि शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो बहुत लाभ और पुत्रसे युक्त होता है ॥७॥

ग्रहणिरुग्रिपुनाथयुतेऽष्टमे विषधरान्मरणं विषतो वधः।
मरणदो विधुरेव रविर्नृपाद्गुरुसितौ नयनेषु विपत्प्रदौ ॥८॥

जो शत्रुपति अष्टम हो तो ग्रहणी रोग होवे तथा सर्प वा विषसे मरण हो, चन्द्र रवि हो तो राजासे हो, गुरु चन्द्र हो तो नेत्रोंमें पीडा होती है ॥८॥

नवमगेरिपतौ खलसंयुते चरणभङ्गकरः सुकृतोज्झितः।
विविधवादकरश्च स वै प्रियो न च धनं न सुखं न सुतः सदा ॥९॥

जो शत्रुपति नवम खल ग्रहोंके साथ हो तो चरणभंग करनेवाला होवे, पुण्यहीन अनेक विवाद करनेवाला प्रिय होवे और वह धन पुत्र तथा सुखसे रहित होता है ॥९॥

अरिगृहाधिपतिर्दशमे यदा जननवैरकरश्चपलः खलः।
भवति पालकपुत्रयुतः शुभैर्जनकहा जगतीपरिपालकः ॥१०॥

जो शत्रुपति दशममें हो तो वह मातासे वैर करनेवाला, चपल स्वभावसे युक्त खल होता है यदि शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो पालक पुत्रोंसे युक्त होवे और पितृघाती पृथिवीका पालन करनेवाला होता है ॥१०॥

भवगतेरिपतौ खलसंगमो रिपुजनान्मरणं खलु जायते।
नृपतिचौरजनाद्धनहानिकृच्छुभखगैः सततं शुभकृद्भवेत् ॥११॥

खल ग्रहोंके साथ शत्रुपति ग्यारहवें हो तो दुष्ट मनुष्योंके साथ मेल हो तथा शत्रुसे उस पुरुषका मरण हो राजा और चोरसे धनकी हानि हो, शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो शुभ करता है ॥११॥

व्ययगते च चतुष्पदवाजिनां रिपुपतौ धनधान्यसुखक्षयः।
गमनबुद्धिनिरंतरमेव यद्दिननिशं च धनाय कृतोद्यमः ॥१२॥

शत्रुपति बारहवें हो तो चौपाये घोड़े धन धान्यके सुखका क्षय हो कहीं जानेकी सदा इच्छा रहे रात दिन धनके निमित्त उद्यम करे ।।१२।।

इति रिपुभवनेशफलम् ।

अथ ग्रहदृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

रिपुगृहेऽथ च सूर्यनिरीक्षिते रिपुविनाशकरश्च नरः सदा ।
भवति दक्षिणनेत्ररुजार्दितः खलु सुखं न भवेज्जननीजनम् ।।१।।

यदि शत्रुघरको सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य सदा शत्रुओंका नाश करनेवाला हो, दक्षिण नेत्रमें पीडा हो और माता आदिका सुख न हो ।।१।।

चन्द्रदृष्टिफलम्

अरिगृहे संति चन्द्रनिरीक्षिते रिपुविवृद्धिकरः सततं नृणाम् ।
क्षय कफार्तिरुजो मदनक्षयं गुरुयुतो बहुरोगयुतो भवेत् ।।२।।

यदि छठे घरको चन्द्रमा देखता हो तो उस पुरुषके शत्रु बहुत हों क्षय और कफका रोग हो, कामका क्षय हो, गुरुके साथ हो तो बहुत रोगोंसे युक्त होता है ।।२।।

भौमदृष्टिफलम्

भौमदृष्टिसमवेक्षिते रिपौ वैरिनाशनकरो नरस्य हि ।
मातुलीयसुखनाशनः सदा लोकशस्त्ररुधिराग्निपीडनम् ।।३।।

छठे घरमें यदि मङ्गलकी दृष्टि हो तो उस मनुष्यके शत्रुओंका नाश हो, मामाका सुख न मिले, लोहा शस्त्र रुधिर और अग्निसे पीडा होती है ।।३।।

बुधदृष्टिफलम्

षष्ठे गृहे चन्द्रसुतेन वीक्षिते विशेषतो मातुलजं च सौख्यम् ।
परापवादी परकर्मकारी नानारिपुद्वेषकरश्च सः स्यात् ।।४।।

जो छठे घरमें बुधकी दृष्टि हो तो मामाके द्वारा विशेष सुख मिले; पराया निंदक पराये कर्म करनेवाला अनेक शत्रु उस पुरुषके होते हैं ।।४।।

गुरुदृष्टिफलम्

रिपुगृहे सुरमन्त्रिनिरीक्षिते रिपुविवृद्धिमहाक्षयकारकः ।
स्थितिविनाशकरः स भवेन्नरः परिकरोति च मातुलजं सुखम् ॥५॥

शत्रु घरको यदि बृहस्पति देखे तो शत्रुवृद्धिका क्षयकारक हो स्थितिका विनाश करनेवाला तथा मातुलपक्षसे सुख होता है ॥५॥

भृगुदृष्टिफलम्

अरिगृहे सति शुक्रनिरीक्षिते भवति मातुलजं सुखमद्भुतम् ।
स्वयमपीह भवेज्जनपूजितो रिपुविवृद्धिविनाशकरोपि हि ॥६॥

जो छठे घरको शुक्र देखता हो तो मामासे अद्भुत सुख प्राप्त हो और वह स्वयं मनुष्योंसे पूजित हो तथा शत्रुओंकी उन्नतिका नाश करनेवाला होता है॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

रिपुगृहे सति मन्दनिरीक्षिते रिपुविनाशकरः स च मातुलैः ।
चरणनेत्रमुखे व्रणपीडितः परुषवाग्ज्वरमेहनिपीडितः ॥७॥

शत्रु घरको यदि शनि देखता हो तो शत्रुओंका तथा मामाका भी नाश करता है चरण नेत्र और मुखमें व्रणोंसे पीडा हो कठोर वचन बोलनेवाला हो, ज्वर और प्रमेहसे पीडित रहे ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

अरिगृहे सति राहुनिरीक्षिते रिपुविनाशकरो मनुजो भवेत् ।
खलवशाद्धनहानिकरो नरः सकलसद्गुणवान्विनयान्वितः ॥८॥

शत्रु घर पर यदि राहुकी दृष्टि हो तो मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला हो, खल ग्रह साथ हो तो धनकी हानि करे संपूर्ण उत्तम गुणोंसे युक्त विनयवान् हो ॥८॥ इत्यरिभावे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ ग्रहवर्षसंख्या

सूर्यस्त्रीणि च वत्सराणि हि सुखं षड् वै हिमांशुर्मृतिं
भौमो वै जिनसंमिते प्रददते पु ं च सप्तत्रिके ।
सौम्यः शत्रुभयं मृतिं सुरगुरुः खाब्धौ च शत्रोर्भयं
शुक्रो भूयुगवत्सरे रिपुमृतिं सौरिः सुतं वै जिने ॥१॥

सूर्यके वर्ष ३ सुख प्राप्ति, चन्द्रमा, ६ मृत्यु, मंगल २४ वर्ष पुत्रदाता; बुध ३७ शत्रुभय, बृहस्पति ४० शत्रुसे भय करे, शुक्र ४१ शत्रुमृति, शनि राहु केतु २४ वर्ष पुत्रप्राप्ति हो ॥१॥

अथ विचार:

दृष्टिर्युतिश्चेत्खलखेचराणामरातिभावे रिपुनाशनं स्यात् ।
शुभग्रहाणां प्रतिदृष्टितोऽत्र शत्रुद्गमोप्यामयसंभवः स्यात् ॥१॥

जो शत्रुभावमें क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो तो शत्रुओंका नाश होता है और जो शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो शत्रुओंकी उत्पत्ति और रोगोंकी प्राप्ति होती है ॥१॥

षष्ठे क्रूरो नरो यातः शत्रुपक्षविमर्दकः ।
षष्ठे सौम्ये सदा रोगी षष्ठे चन्द्रस्तु मृत्युदः ॥२॥

छठे स्थानमें क्रूर ग्रह हो तो शत्रुपक्षका मर्दक होता है, छठे सौम्य ग्रह हो तो सदा रोगी और छठे चन्द्रमा हो तो मृत्यु देता है ॥२॥

षष्ठे सौम्ये ग्रहे रोगी दीर्घायुर्मातुलात्सुखम् ।
पापग्रहे भवेच्चैव शत्रुमातुलनाशकृत् ॥३॥

छठे सौम्य ग्रह हो तो रोगी और दीर्घायु होवे मामासे सुख हो, पाप ग्रह हो तो शत्रु और मामाका क्षयकारक होता है ॥३॥

इत्यरिभावविवरणं संपूर्णम्

अथ सप्तमं जायाभवनम् ।

अमुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना दृष्टं
युतं वाऽन्यैरपि शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं युतं न वेति ॥

नाम देवता ग्रहोंकी युक्तता स्वामीका तथा अन्य शुभाशुभ ग्रहोंका योग वा दृष्टिके भावाभावको विचार कर देखे ॥

तत्र विलोकनीयानि ।

रणाङ्गणश्चापि वणिक्क्रिया च जायाविचारं गमनप्रमाणम् ।
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥१॥

युद्ध, व्यापार, स्त्रीविचार, यात्राका प्रमाण यह सब वार्ता शास्त्रमें चतुर पुरुषोंको सप्तम घरसे विचारना चाहिये ॥१॥

अथ लग्नफलम्

मेषेऽस्तसंस्थे हि भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां चपलस्वभावम् ।
पापानुरक्तं कुजनप्रशंसं वित्तप्रियं स्वार्थपरं सदैव ॥१॥

जिसके सप्तम घरमें मेष लग्न हो तो उस मनुष्यकी स्त्री क्रूर और चपल स्वभाववाली हो तथा पापानुरक्त कुजनोंमें प्रशंसावाली धनप्रिय और सदैव स्वार्थ में ही तत्पर रहती है ॥१॥

वृषेस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सुरूपदन्तं प्रणतं प्रशान्तम् ।
पतिव्रतं चारुगुणेन युक्तं लक्ष्म्याधिकं ब्राह्मणदेवभक्तम् ॥२॥

जिसके सातवें वृष लग्न हो उसकी स्त्री सुंदर दांतोंवाली नम्र शांत और पतिव्रता सुंदर गुणोंसे युक्त लक्ष्मी करके अधिक तथा ब्राह्मण और देवमें भक्ति करनेवाली हो ॥२॥

तृतीयराशौ सति वै कलत्रे कलत्ररत्नं सधनं सुवृत्तम् ।
रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं विनीतवेषं गुरुवर्जितं च ॥३॥

जिसके मिथुन लग्न सप्तम भावमें हो उसकी स्त्री धनसे युक्त सुंदर चरित्रवाली रूपवती सब गुणोंसे, युक्त विनीतवेष और गुरुसे रहित हो ॥३॥

कर्केऽस्तसंस्थे च मनोहराणि सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि ।
भवंति सौम्यानि कलत्रकाणि कलंकहीनानि च संमतानि ॥४॥

यदि सप्तम कर्क लग्न हो तो मनोहर सौभाग्ययुक्त गुणवती कलंक हीन सौम्य स्वभाववाली माननीय स्त्री उस पुरुषके होती है ॥४॥

सिंहेस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीव्रस्वभावं चपलं सुदुष्टम् ।
विहीनवेषं परसद्मरक्तं वक्रस्वनं स्वल्पसुतं कृशं च ॥५॥

यदि सप्तम सिंह लग्न हो तो उसकी स्त्री तीव्रस्वभाव चपला और दुष्टा होती है, विहीन वेष पराये घरमें रहनेकी इच्छावाली टेढ़े स्वरवाली थोड़ी पुत्रवाली दुबली होती है ॥५॥

कन्यास्तसंस्थे च भवन्ति दाराः स्वरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः ।
सौभाग्यभोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदाः सत्यधनाः प्रगल्भाः ॥६॥

जो कन्या लग्न सप्तम हो तो स्त्री रूपवती हों तथा पुत्रोंसे हीन हों सौभाग्य भोग अर्थ और नीतिसे युक्त हों प्रिय वचन बोलवाली सत्यवादिनी तथा धृष्ट स्वभाववाली होती हैं ॥६॥

तुलेस्तसंस्थे गुणगर्विताङ्ग्यो भवन्ति नार्यो विविधप्रकाराः ।
पुण्यप्रिया धर्मपराः सुदन्ताः प्रभूतपुत्राः पृथुलाङ्गयुक्ताः ॥७॥

जो तुलालग्न सप्तम हो तो उस पुरुषकी स्त्री गुणोंसे गर्वितांगी अनेक प्रकारकी होती हैं तथा पुण्यात्मा धर्मपरायणा सुंदर दांतोंसे युक्त बहुत पुत्रोंवाली और स्थूल अंगवाली होती हैं ॥७॥

कीटेऽस्तसंस्थे च कलासमेता भवन्ति भार्याः कृपणा नराणाम् ।
सुकुत्सिताङ्ग्यः प्रणयेन हीना दौर्भाग्यदोषैर्विविधैः समेता. ॥८॥

जो सप्तम वृश्चिक लग्न हो तो उस पुरुषकी स्त्री कृपण तथा कलाओंसे युक्त निंदित अंगोंवाली प्रणयसे हीन और अनेक दुर्भाग्य दोषोंसे युक्त होती है ॥८॥

चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सदा नराणां पुरुषाकृतिस्म ।
सुनिष्ठुरं भक्तिनयेन हीनं प्रशान्तिसौख्यं मतिवर्जितं च ॥९॥

जो सप्तम धन लग्न हो तो उस पुरुषकी स्त्री पुरुषके आकारवाली हो तथा निष्ठुर, भक्ति और नीतिसे हीन, शांतिसुखसे युक्त और बुद्धिसे हीन होती है ॥९॥

मृगेस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं धर्मध्वजं सत्सुतया समेतम् ।
पतिव्रतं चारुगुणेन युक्तं सौभाग्ययुक्तं सुगुणान्वितं च ॥१०॥

जो सप्तम मकर लग्न हो तो स्त्री धर्मवाली अच्छी पुत्रीसे युक्त हो पतिव्रता सुंदर गुणोंसे युक्त सौभाग्य और सुंदर गुणोंसे सम्पन्न हो ॥१०॥

कुंभेस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं स्थिरस्वभावं पतिकर्मरक्तम् ।
देवद्विजप्रीतियुतं प्रकृष्टं धर्मध्वजं सर्वसुखै समेतम् ॥११॥

जो सप्तम कुंभलग्न हो तो स्त्री स्थिरस्वभाव पतिनिर्दिष्ट कर्म करनेवाली देवता ब्राह्मणोंकी निरंतर सेवा करनेवाली धर्मध्वजा और सर्वसुखोंसे युक्त होती है ॥११॥

मीनेस्तसंस्थे च विकारयुतं भवेत्कलत्रं कुसुतं कुबुद्धि ।
अधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा नराणां कलहप्रियं च ॥१२॥

जिसके सप्तम घरमें मीन हो उसकी स्त्री विकारवाली कुमति और कुपुत्रवाली हो तथा अधर्म करनेवाली प्रणयसे हीन और सदा कलह करनेवाली होती है ॥१२॥ इति कलत्रे लग्नफलम् ।

[अथ ग्रहफलम्]

सूर्यफलम्

स्त्रिया विमुक्तो हृतकार्यकीर्तिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः ।
नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यः सीमन्तिनीसद्मनि पद्मिनीशे ॥१॥

जिसके सप्तम स्थानमें सूर्य हो वह पुरुष स्त्रीसे हीन हृतकार्य और कीर्तिवाला भय और रोगोंसे युक्त कुशील हो, राजाके क्रोधसे जो दुःख है उससे दुर्बल शरीर होवे ॥१॥

चन्द्रफलम्

महाभिमानी मदनातुरः स्यान्नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ।
धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे चन्द्राननास्थानविराजमाने ॥२॥

जो सप्तम चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य महा अभिमानी कामसे व्याकुल क्षीणशरीर धन और विनयसे हीन होता है ॥२॥

भौमफलम्

नानानर्थव्यर्थचित्तोपसर्गवैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम् ।
दारापत्यानन्तदुःखप्रतप्तं दारागारेङ्गारकोऽयं करोति ॥ ३ ॥

जो सप्तम मंगल हो तो अनेक प्रकारके अनर्थ रूप जो व्यर्थ चित्तके उपसर्ग हैं उनसे तथा शत्रुसमूहसे उसका देह हीन हो जाय और वह मनुष्य स्त्री तथा सन्तानके अनन्त दुःखसे प्रतप्त रहे ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्सुनिरतो नरो भवेत् ।
कामिनीकनक सूनुसंयुतः कामिनी भवननागमिनीन्दुजे ॥ ४ ॥

जो सप्तम बुध हो तो वह मनुष्य सुंदर शील तथा ऐश्वर्यसे अलंकृत हो सत्यवादी हो तथा सुंदर स्त्री और सुवर्ण पुत्र से युक्त होता है ॥ ४ ॥

गुरुफलम्

शास्त्राभ्यासे सक्तचित्तो विनीतः कान्तापित्रात्यंतसंजातसौख्यः ।
मन्त्री मर्त्यः कार्यकर्त्ता प्रसूतौ जायाभावे देवपूज्यो यदि स्यात् ॥५॥

जो सप्तम गुरु हो तो उस पुरुषका चित्त शास्त्रके अभ्यासमें रहे और विनीत हो तथा ससुरेसे अत्यन्त सुखकी प्राप्ति हो और कार्यकर्ता मन्त्री हो ॥५॥

भृगुफलम्

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ।
अधिकृतां तु नटीं बहु मन्यते सुनयनाभवने भृगुनन्दने ॥६॥

यदि सप्तम शुक्र हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकारकी कलाओंमें कुशल, जलविहार करनेवाला, रतिविलासके विधानमें चतुर नटीमें अतिशय सुहृदता करनेवाला होता है ॥६॥

शनिफलम्

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितः ।
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनौ नरः ॥७॥

जो सप्तम शनि हो तो वह पुरुष रोगसे हीनबलवाला तथा हीनवृत्तिके कारण मनुष्योंके चित्तमें स्थिति करनेवाला धान्यादिसे दुःखी रहे ॥७॥

राहुफलम्

विनाशं चरेत्सप्तमे सैंहिकेयः कलत्रादिनाशं करोत्येव नित्यम् ।
कटाहो यथा लोहजो वह्नितप्तस्तथा सोऽतिवादान्न शांतिं प्रयाति ८

जो सप्तम राहु हो तो विनाश करे, नित्य स्त्री आदिको नाश करे जैसे अग्नि से तप्त लोहका कटाह शांतिको नहीं प्राप्त होता है इसी प्रकार वह मनुष्य विवादरूपी अग्निसे तप्त शांतिको नहीं प्राप्त होता है ॥८॥

केतुफलम्

शिखी सप्तमे चाध्वनि क्लेशकारी कलत्रादिवर्गे सदा व्यग्रता च ।
निवृत्तिश्च सौख्यस्य वै चौरभीतिर्यदा कीटगः सर्वदा लाभकारी ॥९॥

जो केतु सप्तम हो तो उस पुरुषको मार्गमें क्लेश होवे और स्त्री

आदिके वर्गमें सदैव व्यग्रता हो और सुखकी निवृत्ति हो चौरसे भय हो जो कर्कका हो तो सदा लाभ करता है ॥९॥

इति सप्तमभावे ग्रहफलम्

अथ सप्तमभवनेशफलम्

मदपतिस्तनुगः कुरुते नरं सकलभोगयुतं च गतव्ययम् ।
बहुकलत्रसुखी नहि मानुषो दलितवैरिजनः प्रमदोत्सुकः ॥१॥

जिसके सप्तमेश शरीरभावमें प्राप्त हो वह मनुष्य संपूर्ण भोगोंसे युक्त खर्च रहित हो और वहुत स्त्रियोंसे सुखी न हो तथा वैरिजनोंको जीतनेवाला स्त्रीमें उत्कंठित रहता है ॥१॥

मदपतौ धनगे वनिता खला भवति वित्तवती सुखवर्जिता ।
स्वपतिवाक्यविलोपकरी मदान्मतिमती स्वयमात्मजवर्जिता ॥२॥

जो सप्तमेश धनस्थानमें प्राप्त हो तो उस पुरुषकी स्त्री दुष्टा, धनवती सुखसे वर्जित हो, मदसे अपने पतिके वचन लोप करनेवाली बुद्धिमती, और स्वयं सन्तानसे रहित होती है ॥२॥

मदपतौ सहजस्थलगे स्वयं बलयुतो निजबान्धववल्लभः ।
भवति देवरपक्षयुताऽबला स्मरमदा दयितागृहगाः खलाः ॥३॥

जो सप्तमेश तीसरे स्थानमें प्राप्त हो तो वह पुरुष स्वयं बली बांधवजनों का प्रिय हो और सप्तममें खल ग्रह हों तो उसकी स्त्री देवरका पक्ष करनेवाली कामदेवके मदवाली हो ॥ ३ ॥

स्मरपतिस्तनुते सुखभावगो विबलिनं पितृवैरकरं खलम् ।
भवति वा दयितापरिपालकः स्वपतिवाक्ययुता महिला सदा ॥४॥

जो मदनेश चतुर्थ हो तो वह बलरहित तथा पितासे वैर करनेवाला दुष्ट हो, स्त्रीका पालक हो और उसकी स्त्री सदा उसके वचन करनेवाली होती है ॥ ४ ॥

मदपतिस्तनये तनयप्रदः सुभगसौख्यकरः सुखसंयुतः ।
भवति दुष्टवधस्तनयैर्युतः खलखगैर्दयितापरिपालकः ॥५॥

जो मदनेश पञ्चम हो तो पुत्रका देनेवाला सुभग सुख करनेवाला तथा सुखसे संयुक्त हो और खलग्रहोंसे युक्त हो तो क्रूरवध हो पुत्रोंसे युक्त स्त्रीका पालन करनेवाला होता है ॥५॥

गतवया विपदां तु निषेवको रिपुगते रुचिरं हि चिरं वपुः ।
मदपतौ दयितादयितः खलु क्षयगदेन युतः खलखेचरैः ॥६॥

जो मदनेश छठे स्थानमें हो तो वह मनुष्य आयुहीन विपत्तिके आश्रित रहे और उसका शरीर मनोहर हो तथा स्त्रीका प्रिय हो यदि खल ग्रह उसके साथ हो तो क्षयरोगसे युक्त होता है ॥६॥

प्रमदभावपतौ निजमन्दिरे गतरुजं हि नरं परमायुषम् ।
परुषवाग्रहितो ह्यतिशीलवान्भवति कीर्तियुतः परदारगः ॥७॥

जो सप्तमेश अपने ही स्थानमें हो तो वह मनुष्य रोगरहित परमायु, युक्त होता है और कठोर वचनरहित अति शीलवान्, कीर्ति युक्तपरदारा-भिगामी होता है ॥७॥

निधनगे तु कलत्रपतौ नरः कलहकृद्गृहिणीसुखवर्जितः ।
दयितया निजया न समागमो यदि भवेदथवा मृतभार्यकः ॥८॥

जो सप्तमेश अष्टम हो तो वह मनुष्य कलह करनेवाला, स्त्रीसुखसे हीन, अपनी स्त्रीसे समागम करनेवाला न हो तो अथवा उसकी स्त्री मृत्युको प्राप्त होती है ॥८॥

मदपतिर्नवमे यदि शीलवान् खलखगैः कुरुते हि नपुंसकम् ।
तपसि तेजसि सुप्रथितो नरः प्रमदया निजया सह वैरकृत् ॥९॥

यदि सप्तमेश नवम हो तो वह पुरुष शीलवान् हो यदि दुष्ट ग्रह हो तो नपुंसक हो तथा तप और तेजसे प्रसिद्ध हो, स्त्रीसे वैर करनेवाला होता है ॥९॥

दशमगे मदपे नृपदोषदः कुवचनः कपटी चपलो नरः ।
श्वशुरदुष्टजनानुचरः खलैर्निजवधूजनयोर्नहि हर्षकृत् ॥१०॥

यदि सप्तमेश दशममें हो तो वह राजाको दोष देनेवाला कुवचन बोलनेवाला, कपटी चपल होता है, खल ग्रह युक्त हो तो श्वशुरे और दुष्ट-जनोंका अनुचर हो तथा अपने बन्धुजनों और कामिनीसे प्रेम न करे ॥१०॥

भगवते तु कलत्रपतौ सदा स्वदयिता प्रियकृच्च तथा सती ।
अनुचरी स्वधवस्य सुशीलिनी पशुमतिः कलया पितृसंशया ।।११।।

जो सप्तमेश एकादश घरमें हो तो उसकी स्त्री प्यार करनेवाली सभी अनुचरी और सुशीला हो तथा कलाकरके पशुमति पितामें अनेक संशयवाली होती है ।।११।।

मदपतिर्व्ययगस्तनुते व्ययं स्वदयितागृहबन्धुविवर्जितः ।
भवति लौल्यवती खलवाक्यदा व्ययपरा गृहतस्करयुक्तता ।।१२।।

जो सप्तमेश बारहवें घरमें हो तो बहुत व्यंग हो तथा वह पुरुष गृह बंधु और भार्यासे वर्जित हो, स्त्री चंचला, कटुभाषण करनेवाली खर्च करनेवाली घरमें तस्करतासे संयुक्त होती है ।।१२।।

इति सप्तम भवनेशफलम् ।

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

संपूर्णदृष्टि यदि कामभावे सूर्यश्च कुर्यान्मदनक्षयं च ।
जायाविनाशं खलु शत्रुपीडां नरो भवेत्पाण्डुरदेहवर्णः ।।१।।

यदि सातवें घरमें सूर्यकी संपूर्ण दृष्टि हो तो वह कामक्षय करता है, स्त्रीविनाश शत्रुपीडा करता है, वह मनुष्य पाण्डुवर्णवाला होता है ।। १ ।।

चन्द्रदृष्टिफलम्

जायागृहे शीतकरेण दृष्टे सौंदर्यभार्या गुणशालिनी च ।
चापल्ययुक्ता गजगामिनी च परापवादे निपुणा कुशीला ।।२।।

जो सप्तम घरमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो उसकी स्त्री सुंदर गुण- शालिनी हो, चापल्ययुक्त गजगामिनी पराये अपवादमें चतुर कुशीलवाली होती है ।।२।।

भौमदृष्टिफलम्

जायागृहे भौमनिरीक्षिते च जायाविनाशं कुरुते च पुंसाम् ।
वस्तौ तथाव्याधिनिपीडितश्च स्त्रीतो विवादो गमने महाभयम् ।।३।।

यदि सप्तम घरको मंगल देखे तो उस पुरुषकी स्त्रीका नाश करता है वस्तिव्याधिसे व्याकुल, स्त्रीसे विवाद, गमनमें महाभय होता है ।।३।।

बुधदृष्टिफलम्

जायागृहे चन्द्रसुतेन दृष्टे जायासुखं चैव करोति पुंसाम् ।
जीवेच्चिरं सोऽद्भुतगात्रधारी कलाधिशाली धनधान्यभोगी ॥४॥

जो स्त्री घरको बुध देखे तो पुरुषको नित्य स्त्रीका सुख हो और चिरजीवी । अद्भुव शरीरवाला कलाओंसे शोभित धनधान्य भोगी वह पुरुष होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

कलत्रभावे ऽमरपूजितेक्षिते जायासुखं पुत्रसुखं नरस्य ।
व्यापारलाभो महती प्रतिष्ठा धनेन धर्मेण च संयुतोऽयम् ॥५॥

जो स्त्रीघरमें गुरुदृष्टि हो तो उस पुरुषको स्त्री और पुत्रका सुख करता है, व्यापारमें लाभ बहुत प्रतिष्ठा धर्म और धनकी प्राप्ति उस पुरुषको होती है ॥५॥

भृगुदृष्टिफलम्

कलत्रभावेऽसुरपूजितेक्षिते जायासुखं पुत्रसुखं करोति ।
प्रभूतपुत्रं यदि सौम्ययुक्तो व्यापारसौख्यं विमलां च बुद्धिम् ॥६॥

जो स्त्रीके घरको शुक्र देखता हो तो स्त्री और पुत्रका सुख करता है सौम्य ग्रहोंसे युक्त होनेसे बहुत पुत्रोंकी उत्पत्ति होती है तथा व्यापारमें सुख और निर्मल बुद्धि होती है ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

जायागृहे मन्दनिरीक्षिते च जायाविनाशः खलु मृत्युतुल्यः ।
पाण्डुव्यथा चाथ तनौ च पुंसां ज्वरातिसारग्रहणीविकारः ॥७॥

यदि स्त्रीघरको शनि देखता हो तो स्त्रीका नाश करे वा उसको मृत्यु तुल्य कर देवे, शरीरमें पाण्डुरोगसे क्लेश हो तथा ज्वर, अतिसार और संग्रहणीका विकार रहै ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

यदि कलत्रगृहे तमवीक्षिते मदविवृद्धिरथो मनुजस्य वै ।
स्ववचनं हि सदैव तु साधयेत्तमदशासमये म्रियतेऽङ्गना ॥८॥

जो स्त्रीघरको राहु देखे तो दिन दिन मदकी वृद्धि हो, अपने वाक्योंका वह मनुष्य सिद्ध करनेवाला हो, राहुकी दशाके समय स्त्रीकी मृत्यु हो ॥८॥

इति सप्तमभावे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ वर्षसंख्या

स्त्रीनाशकृद्युगगुणै रविरिन्दुरेव मृत्युं च तिथ्यसृगथाग्निभयं मुनीन्दौ।
शशिजः कलत्रे स्त्रयाप्ति गुर्व्यमयमैर्मनुके ।
सितः स्त्रीवर्षे राहुशनिकेतवः स्त्रीकष्टकराः ॥१॥

रविकी दशा ३४ वर्ष स्त्रीनाश करे, चन्द्रमा १५ वर्ष मृत्यु तुल्य करे, मंगल अग्निभय दशा वर्ष १७ रहे, बुधकी दशा ७ वर्ष स्त्रीकी प्राप्ति, गुरुदशा २२ वर्ष स्त्रीप्राप्ति, शुक्र १४ वर्षमें स्त्रीप्राप्ति तथा शनि राहु केतु स्त्रीको कष्ट करते हैं ॥१॥

अथ विचारः

मूर्तौ कलत्रे च नवांशको वा द्विषट्कभागस्त्रिलवः शुभानाम् ।
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानमचिरादवाप्तिः ॥१॥

मूर्तिमें सप्तम भावमें जो शुभ ग्रहोंका नवांश द्वादशांश वा द्रेष्काण हो तो स्त्रीप्राप्तिके निमित्त शुभ होवे अर्थात् इस योगसे बहुत शीघ्र पुरुषोंको स्त्रीकी प्राप्ति होती है ॥१॥

सौम्यैर्युक्तं सौम्यभं सौम्यदृष्टं जायास्थानं देहिनामङ्गनाप्तिः ।
कुर्यान्नूनं वैपरीत्यादभावं मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥२॥

यदि सप्तम भाव शुभ ग्रहोंसे युक्त राशिवाला, तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो अवश्यही स्त्रीकी प्राप्ति हो इससे विपरीत होनेमें स्त्रीका अभाव हो और मिश्रग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो स्त्रीकी प्राप्ति होनेके समय प्रलाप अर्थात् अनर्थक वचन होवें ॥२॥

लग्नाद्व्यये वा रिपुमन्दिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् ।
शुभेक्षितौ तौ हि कलत्रगेहे भार्या तदेका प्रवदेन्नरस्य ॥३॥

लग्नसे बारहवें वा छठे स्थानमें सूर्य और चन्द्रमा स्थित हों अथवा शुभ ग्रहोंसे दृष्ट सप्तम भाव में स्थित हों तो उस पुरुषके एक ही स्त्री होती है ॥३॥

मण्डान्तकालेऽपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजाते ।
बन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ॥४॥

गंडान्त समयमें भी सप्तम भावमें शुक्र स्थित हो तथा लग्नमें शनैश्चर स्थित हो तो वह मनुष्य वंध्या (बाँझ) स्त्रीका पति होता है परंतु वह सप्तम भाव शुभग्रहोंसे दृष्ट न हो किंतु पापग्रहोंसे दृष्ट हो ॥४॥

यद्यालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ ।
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥५॥

यदि बारहवें वा सातवें स्थानमें पापग्रह स्थित हों और पञ्चमभावमें चन्द्रमा स्थित हो तो मनुष्य स्त्री और पुत्रसे हीन होता है ॥५॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापितस्या व्यभिचारकर्त्ता ॥६॥

जन्मसमय सप्तम भावमें शनि और मंगलका वर्ग हो और इनकी दृष्टि हो तो उस पुरुषकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और पुरुष भी व्यभिचार करनेवाला होता है ॥६॥

शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुते मनुष्यम् ।
शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः ॥७॥

शुक्र बुध सप्तम हों तो मनुष्य स्त्रीहीन होता है और यदि शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो अधिक अवस्थामें उसको स्त्री प्राप्त होती है ॥७॥

शुक्रेन्दुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च द्वाभ्यां युतं मदगृहं तु तथैककेन । आलोकितं विषमभैरिदमेव नूनं यद्वाङ्गना भवति नुश्च खलस्वभावा ॥८॥

शुक्र चन्द्रमा बृहस्पति बुध यह सब तीन दो वा एक सप्तम भावमें स्थित हों और विषम ग्रह देखते हों तो स्त्री क्रूरस्वभाववाली हो ॥८॥

चन्द्राद्विलग्नाच्च खलाः कलत्रे हन्युः कलत्रं बलयोगतस्ते ।
चन्द्रार्कपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ पुनश्च तौ स्त्रीपरिलब्धिदौ स्तः ॥९॥

चन्द्रमासे वा विलग्नसे जो कलत्र भावमें क्रूर ग्रह हों तो बली होनेमें

वे स्त्रीको मार डालते हैं, चन्द्रमा शनि जो सप्तम हो तो वे फिर स्त्रीकी प्राप्ति कराते हैं ॥९॥

कलत्रभावेशनवांशतुल्या नार्यो ग्रहालोकनतो भवन्ति ।
एकैव भौमार्कनवांशके च जामित्रभावे च बुधार्कयोर्वा ॥१०॥

सप्तम भावका स्वामी जितनी संख्याके नवांशमें हो, वा जितने ग्रहोंसे दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियां उस मनुष्यके होती हैं, यदि मंगल और सूर्यका नवांश हो तथा बुध और सूर्य सप्तम भावमें स्थित हों तो एक ही स्त्री होवे ॥१०॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वङ्गनाप्तिर्भृगुवीक्षणेन ।
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेऽङ्गनानां बाहुल्यमेवा शुभवीक्षणान्न ॥११॥

यदि सप्तम भावमें शुक्र ग्रहका वर्ग हो तथा शुक्रकी दृष्टि हो तो बहुतसी स्त्रियोंकी प्राप्ति हो और शुक्रसे दृष्ट सौम्यगण हो तो बहुत स्त्रियोंकी प्राप्ति हो यदि पाप ग्रह देखते हों तो उक्त फल न हो ॥११॥

महीसुते सप्तमगेहयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ।
मन्देन दृष्टे म्रियतेपि लब्ध्वा शुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन् ॥१२॥

जो सातवें घरमें मंगल हो तो पुरुष स्त्रीसे वियुक्त होता है, यदि शनि देखता हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि न हो तो स्त्री प्राप्त होकर मर जाती है ॥१२॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूत्वापि म्रियतेऽचिरात् ॥१३॥

जो सप्तम भावमें राहु हो और दो पापग्रहोंकी दृष्टि हो तो स्त्रीयोग नहीं है और यदि प्राप्ति भी हो तो शीघ्रही मर जाती है ॥१३॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसंभवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तदा भार्या न जीवति ॥१४॥

छठे मंगल सातवें राहु अष्टम शनि हो तो उसकी स्त्री न जीवे ॥१४॥

सप्तदशभावस्यैक्यं कृत्वा संख्याऽस्ति या खलु ।
तत्संख्याकैर्गतैर्वर्षैर्विवाहो भवति ध्रुवम् ॥१५॥

सातवें दशवें भावको एकत्र कर जो संख्या हो उतनेही वर्ष व्यतीत होनेपर विवाह हो इसमें सन्देह नहीं ॥१५॥

अथवा यत्र वर्षे तु गुरुदृष्टिस्तदोद्वहः ।
कुजदृष्टिस्तु यद्वर्षे तत्र कष्टं विनिर्दिशेत् ॥१६॥

अथवा जिस वर्षमें गुरुकी दृष्टि हो उस वर्षमें विवाह हो और जिस वर्षमें मंगलकी दृष्टि हो उस वर्षमें कष्टसे कहना ॥१६॥

कलत्रभावाधिपतेर्हि वाच्या मूर्तिः कलत्रस्य वयःप्रमाणम् ।
विलग्ननाथेन सखित्वमस्ति पतिव्रता भक्तियुता सदा सा ॥१७॥

कलत्र भावके अधिपतिवत् स्त्रीकी अवस्था तथा मूर्ति जाननी, यदि लग्नेश सप्तमेशका मित्र हो तो वह पतिव्रता भक्तियुक्त हो ॥१७॥

सौम्याधिक्ये स्त्रीसुखं क्राधिक्ये स्त्रीमरणं नेष्टं च ॥

सौम्यग्रह अधिक हों तो स्त्रीको सुख हो, क्रूर ग्रह अधिक हों तो स्त्रीका मरण हो वा नेष्ट जानना ॥ इति जाया भावविवरणं संपूर्णम् ॥

अथाष्टमं मृत्युभवनम्

अमुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना
दृष्टं युतं वाऽन्यैरपि शुभाशुभैर्ग्रहैर्न वेति ॥

नाम देवता ग्रहोंकी स्थिति तथा स्वामी और अन्य शुभाशुभ ग्रहोंके योग वा दृष्टिके भावाभाव को देखकर पूर्ववत् विचार करे ॥

तत्र विलोकनीयानि

नद्युत्तारात्यन्तवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः सङ्कटं चेति सर्वम् ।
रन्ध्रस्थाने सर्वथा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥१॥

नदीका पार उतरना, अति विषमदुर्ग, शस्त्र, आयु, संकट यह सब वार्ता प्राचीन आचार्योंकी आज्ञासे अष्टम स्थानसे देखना चाहिये ॥१॥

लग्नफलम्

मेषेऽष्टमस्थे निधनं नरस्य भवद्विदेश कुरुते स्थितस्य ।
पदार्थवीक्षानिकषायितत्वं महाधनित्वं त्वतिदुःखितत्वम् ॥१॥

जो अष्टम मेष लग्न हो तो उस मनुष्यका विदेशमें मरण तथा प्रत्येक वस्तुकी परीक्षामें चतुर महाधनी और अतिदुःखसे युक्त होता है ॥१॥

वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेष्मकृताद्विकारात् ।
महाशयाद्वा च चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्ट जनैर्महाभयम् ॥२॥

जो अष्टम स्थानमें वृष लग्न हो तो उस मनुष्यकी कफके विकारसे गृहमें मृत्यु हो महाशय वा चौपायोंसे तथा रात्रिमें दुष्ट जनोंसे महाभय हो ॥२॥

तृतीयराशौ हि भवेन्नराणां मृत्युस्थितेन्तश्च कनिष्ठसङ्गात् ।
प्लीहोद्भवाद्वा रससंभवाद्वै गुदस्य रोगादथवा प्रमादात् ॥३॥

जो मिथुन लग्न अष्टम स्थानमें हो तो कनिष्ठ संगसे मृत्यु हो अथवा प्लीहारोगसे वा रसभक्षणसे वा गुदरोगसे वा प्रमादसे मृत्यु होती है ॥३॥

कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात्कीटात्तथाऽतीव हि भीषणाद्वा ।
भवेद्विनाशः परहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य चैव ॥४॥

जो अष्टम स्थानमें कर्क हो तो जलसे कीटसे अति भीषण वस्तुसे वा दूसरेके हाथसे परदेशमें स्थित मनुष्यकी मृत्यु हो ॥४॥

सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाद्वै भवेद्विनाशो मनुजस्य सम्यक् ।
बालोद्भवो वापि वनाश्रितो वा चौरोद्भवो वाथ चतुष्पदोत्थः ॥५॥

जो सिंह लग्न अष्टम स्थानमें हो तो उस मनुष्यका सर्प आदि जीवोंसे नाश हो, बालकसे वा वनके आश्रयसे चोरसे वा चतुष्पदसे विनाश हो ॥५॥

कन्या यदा चाष्टमगा विलासात्सदा स्ववित्तान्मनुजस्यघातः ।
स्त्रीणां हि हन्ता विषमासनस्थः स्त्रीभिः कृतो वा स्वगृहाश्रिताभिः॥६॥

जो अष्टम कन्या लग्न हो तो उस मनुष्यका विलाससे वा निज धनसे मरण हो, स्त्री जनोंका हन्ता हो, विषम आसनमें स्थित रहे वा अपने घरमें स्थित स्त्रीजनोंसे निधन हो ॥६॥

तुलाधरे चाष्टमगे च मृत्युर्भवेन्नराणां विपदौषधाद्वै ।
निशागमे चाथ चतुष्पदाद्वा कृतोपवासादथ वा प्रलापात् ॥७॥

जो अष्टम तुला लग्न हो तो उस मनुष्यका मरण विपद औषधिसे अथवा रात्रिमें चतुष्पदसे उपवाससे प्रलापसे निधन हो ॥७॥

स्थानेऽष्टमे चाष्टमराशिसंगान्नृणां विनाशोवनोद्भवेन ।
रोगेण वा कीटसमुद्भवेन स्वस्थानसंस्थेन कुलोद्भवेन वा ॥८॥

जो अष्टम वृश्चिक लग्न हो तो उस मनुष्यका विनाश मुखरोग व कीटसे उत्पन्न रोगसे अपने स्थानमें स्थित मनुष्यसे व वंशोद्भव मनुष्यसे होता है ॥८॥

चापेष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्निजस्थाननिवासिना ध्रुवम् ।
गुह्योद्भवेनोपगुदोद्भवेन रोगेण वा कीटचतुष्पदैश्च ॥९॥

जो अष्टम धनुपलग्न हो तो उस मनुष्यकी मृत्यु निज स्थानमें स्थित मनुष्यसे वा गुह्यरोगसे वा गुदाके पास होनेवाले रोगसे अथवा कीट और चौपायोंसे होती है ॥९॥

मृगोष्टमस्थश्च नरस्य यस्य विद्यान्वितो मानगुणैरुपेतः ।
कामी च शूरोऽथ विशालवक्षाः शास्त्रार्थवित्सर्वकलासु दक्षः ॥१०॥

जिस मनुष्यके अष्टम मकर लग्न हो तो वह मनुष्य विद्यासे युक्त, मान-गुणोंसे युक्त, कामी, शूर, विशाल छातीवाला, शास्त्रार्थज्ञाता, सब कलाओंमें चतुर होता है ॥१०॥

घटेऽष्टमस्थे तु भवेद्विनाशो वैश्वानरात्संगमजाच्च रोगात् ।
नानाव्रणैर्वा जलजैर्विकारैः श्रमैः कृतैर्वाऽपरसंश्रयाद्वा ॥११॥

जो अष्टम कुंभ हो तो अग्नि से वा संगमसे उत्पन्न हुए रोगसे अनेक प्रकारके व्रण, जलविकार, श्रम, वा दूसरेके आश्रयसे मृत्यु हो ॥११॥

मीनेऽष्टमस्थे तु जनस्य मृत्युर्भवेदतीसारकृताच्च कष्टात् ॥
पित्तज्वराद्वाथ मरुज्ज्वराद्वै पित्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् ॥१२॥

मीन लग्न अष्टम हो तो उस मनुष्यको अतिसारकृत कष्ट, पित्तज्वर, वातज्वर, पित्तप्रकोप इनसे वा शस्त्रसे मृत्यु होती है ॥१२॥

इत्यष्टमे लग्नफलम्

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः ।
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमङ्गे विशेषादायुःस्थाने पद्मनीप्राणनाथे ॥१॥

जो अष्टम सूर्य हो तो उस पुरुषकी छोटी आंखें हों, शत्रुवर्गकी वृद्धि हो बुद्धिभ्रष्ट हो वड़ा क्रोधी थोड़ा धनी और दुर्बल शरीरवाला हो ॥१॥

चन्द्रफलम्

ननारोगैः क्षीणदेहोतिनिस्वश्चौरारातिक्षोणिपालाभितप्तः ।
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवःस्यादायुः स्थाने वर्तमाने हिमांशौ ॥२॥

जिसके अष्टम चन्द्रमा हो वह रोगोंसे क्षीण शरीर तथा धनसे हीन हो, चोर शत्रु और राजासे संताप हो, चित्तके उद्वेगसे उस मनुष्यका मन व्याकुल होता है ।२॥

भौमफलम्

वैकल्यं स्यान्नेत्रोर्दुर्भगत्वहं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः ।
बुद्धेरान्ध्यं सज्जनानां च निन्दा रंध्रस्थाने मेदिनीनंदनश्चेत् ॥३॥

जो अष्टम मंगल हो तो नेत्रोंमें विकलता दुर्भगता रक्तसे पीडा नीच कर्ममें प्रवृत्ति वुद्धिका अंधा तथा सज्जनोंकी निन्दा करनेवाला हो ॥३॥

बुधफलम्

भूपप्रसादाप्तसमस्तसिद्धिर्नरो विरोधी सुतरां स्ववर्गे ।
सर्वप्रयत्नैः परतापहन्ता रंध्रे भवेच्चंद्रसुतः प्रसूतौ ॥४॥

जो रन्ध्रस्थानमें बुध हो तो उस मनुष्यको राजाके प्रसादसे सब सिद्धि हो तथा वह अपने वर्गमें विरोध करनेवाला हो सब प्रयत्नसे पराये तापका हन्ता हो ॥४॥

गुरुफलम्

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च ।
नित्यालसः क्षीणकलेवरश्चेदायुर्निशेषे वचसामधीशः ॥५॥

जो अष्टम स्थानमें गुरु हो तो वह मनुष्य मलिन, अति दीन, विवेक और नम्रतासे हीन, नित्य आलसी और क्षीणशरीरवाला होता है ॥५॥

भृगुफलम्

प्रसन्नमूर्तिर्नृपलब्धमानः सदा हि शंकारहितः सगर्वः ।
स्त्रीपुत्रचिंतासहितःकदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सिताख्ये ॥६॥

जो अष्टम शुक्र हो तो वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति, राजासे मान प्राप्त करनेवाला, सदा निश्शंक, गर्वयुक्त तथा स्त्री और पुत्रकी चिन्ता करनेवाला होता है ॥६॥

शनिफलम्

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिको विभवतोद्भवदोषविवर्जितः ।
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते स्थिते ॥७॥

जो अष्टम शनि हो तो वह कृशशरीर दाद और पामासे युक्त, विभवताके दोषसे रहित तथा आलस्यसे युक्त होता है ॥७॥

राहुफलम्

नृपैः पण्डितैर्वंदितोऽनिंदितश्च सकृद्भाग्यलाभः सकृद्भ्रंश एव ।
धनं जातकं तज्जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रंथिरुग्रंध्रगश्चेद्धि राहुः ॥८॥

जो अष्टम राहु हो तो वह मनुष्य राजाओं और पंडितोंसे तथा अनिंदित हो एक साथ उसको लाभ एकसाथ ही भ्रष्टता हो, जातक धन मनुष्य उसको त्याग करे श्रमसे युक्त हो ग्रन्थि रोग हो ॥८॥

केतुफलम्

गुदं पीडयते वा जनैर्द्रव्यरोधो यदा कीटके कन्यके युग्मके वा ।
भवेच्चाष्टमे राहुछावात्मजेऽपि वृषं चाभियाते सुतार्थस्यलाभः ।९॥

जो अष्टम केतु हो तो गुदामें पीडा हो और जो वृश्चिक कन्या वा मिथुन राशिका हो तो मनुष्योंसे द्रव्यका अवरोध हो और जो मेष वा वृष राशिका हो तो पुत्र और धनकालाभ करता है ॥९॥

इत्यष्टमें ग्रहफलम्

अथाष्टमभवनेशफलम्

मृतिपतिस्तनुगो बहुदुःखकृद्भवति वा बहुरुष्टविवादकृत् ।
यदि नरो नृपतेर्लभते धनं मदयुतो बहुदुःखसमन्वितः ॥१॥

जो अष्टमेश जन्मलग्नमें हो तो बहुत दुःखका करनेवाला, बहुत रुष्ट तथा विवाद करनेवाला होता है तथा राजासे धनकी प्राप्ति और रोग तथा दुःखसे युक्त होता है ॥१॥

निधतपे धनगे चलजीवितो बहुलशास्त्रयुतोऽपि च तस्करः ।
खलखगैश्च शुभं न गदान्वितो नृपतितो मरणं हि सुनिश्चितम् ॥२॥

जो अष्टमेश दूसरेमें हो तो चलजीवित हो बहुत शास्त्र युक्त होकर भी तस्कर होता है, दुष्ट ग्रह होनेसे शुभ न हो, उसका राजासे मरण हो और वह रोगी होता है ॥२॥

सहजगेऽष्टमपे सहजैः स्वयं स च विरोधकरोथ सुहृज्जनैः ।
कठिनवाक्यपरश्चपलः खलो भवति बन्धुजनेन विवर्जितः ॥३॥

जो अष्टमेश तीसरे हो तो वह भाइयोंसे तथा सुहृज्जनोंसे स्वयं विरोध करे, कठिन वाक्य बोलनेवाला, चञ्चल स्वभाव, दुष्ट बंधुजनोंसे हीन होता है ॥३॥

मृतिपतौ सुखभावगते नरो जनकसंचितवैभवनाशकृत् ।
गदयुतश्च सुते जनकेथवा कलह एवमिथश्च सदैव हि ॥४॥

जो अष्टमेश चौथे हो तो वह मनुष्य पिताके संचित धनको नष्ट करता है तथा रोगी रहे और पिता पुत्रमें परस्पर सदा क्लेश होता रहे। ॥४॥

मरणभावपतिस्तनये स्थितस्तनयनाशकरश्च सदैव हि ।
यदि खलैरशुभं स च धूर्तराट् शुभखगैश्च शुभं सुतवृद्धिभाक् ॥५॥

जो अष्टमेश पंचम हो तो पुत्रका नाश होता है जो खल ग्रह हो तो अशुभफल और छली पुरुषोंमें मुख्य हो और शुभग्रहोंसे युक्त हो तो शुभ फल तथा पुत्रादिकी वृद्धि हो ॥५॥

मृतिपतौ रिपुभावगतो यदा रविमहीतनयौ च विरोधकृत् ।
विधुयुतश्च विरोधकरो बुधे भृगुशनी बहुरोगकराबुभौ ॥६॥

जो अष्टमेश छठे हो और सूर्य या मंगल हो तो विरोध करनेवाला हो, चन्द्रयुक्त बुध भी विरोध करे भृगु शनि हों तो बहुत रोग करें ॥६॥

मदनगेऽष्टमपेऽपि च गुह्यरुक्कृपणदुष्टकुशीलजनप्रियः ।
खलखगैर्बहुपापविरोधकृत्प्रमदया क्षितिजेन च शाम्यति ॥७॥

जो अष्टमेश सप्तम हो तो गुह्यस्थानमें रोग, कृपण, दुष्ट, कुशील जनोंका प्रिय होता है, दुष्ट ग्रहोंके साथ हो तो वह पुरुष बहुत पाप और विरोध करे। मंगलके साथ होनेसे प्रमदाद्वारा शांति होती है ॥७॥

मृतिपतौ मृतिगे व्यवसायकृद्गदगणेन युतः शुभवाक्छुचिः।
कितवकर्मकरः कपटी नरः कितवकर्मणि ना विदितः कुले ॥८॥

जो अष्टमेश अष्टम हो तो वह पुरुष व्यापार करनेवाला, रोगोंसे युक्त शुभवाक, पवित्र, धूर्त, कर्मकारी कपटी, कुलमें धूर्ततासे विदित हो ॥८॥

सुकृतगेऽष्टमभावपतौ जनो भवति पापरतः खलु हिंसकः।
खलु सुहृन्मुखपूज्य इतस्ततो भवति मित्रगणेन विवर्जितः ॥९॥

जो अष्टमेश नवम हो तो वह मनुष्य पापकारी हिंसक होता है इधर उधरसे सुहृदोंके मुखसे पूजित और बंधुगणसे हीन होता है ॥९॥

मृतिपतौ दशमस्थलमाश्रिते नृपतिकर्मकरोपिऽसमः खलैः।
भवति कर्मकृरश्च नरः सदा प्रियजनै रहितः खलु दुःखितः ॥१०॥

जो अष्टमेश दशम स्थानमें स्थित हो तो नृपकेसे कर्म करता हुआ भी वह दुष्ट होता है और प्रियजनोंसे रहित एवं दुःखित होता है ॥१०॥

भवमतोऽष्टमपः खलु चाल्पतो भवति पुष्टियुक्तः परतः सुखी।
शुभखगैर्बहुजीवति युक्खलैर्भवति नीचजनैश्च समन्वितः ॥११॥

जो अष्टमेश एकादश स्थानमें प्राप्त हो तो वह पुरुष अल्प पुष्टियुक्त सुखी होता है। शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो चिरजीवी हो, दुष्ट ग्रहोंसे युक्त हो तो वह मनुष्य नीच पुरुषोंकी संगति करता है ॥११॥

व्ययगते मृतिपे च कठोरवाग्भवति तस्करकर्मकरः शठः।
विकलकर्मकरो निपुणः खलो मृतिमितश्च मृगाङ्कसुभक्षणात् ॥१२॥

जो अष्टमेश बारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष कटुभाषी तथा चोरोंके कर्म करनेवाला और शठ होता है, विकलकर्म करनेवाला, चतुर और खल होता है तथा कपूरके भक्षणसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥१२॥

इत्यष्टमभवनेशफलम्

अथ ग्रहदृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

द्युमणिवीक्षितमष्टमकं गृहं गुदरुजार्तिकरं च नरस्य हि ।
पितृपरेण व्रतेन विवर्जितो नृपतिपीडित अन्यरतः स्त्रियाः ॥१॥

जो अष्टम स्थानको सूर्य देखता हो तो उस मनुष्यकी गुदा में पीडा हो पिताके आचारणोंसे हीन राजासे पीडित और अन्य स्त्रियोंमें प्रीति करे ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

संपूर्णदृष्टिर्यदि रंध्रगेहे विधोस्तु कुर्यात्खलु मृत्युतुल्यम् ।
व्याधिर्भयं चैव जलादिकष्टं तथात्यरिष्टं धनधान्यनाशनम् ॥२॥

यदि अष्टम स्थानमें चन्द्रमाकी पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्यको मृत्यु की तुल्य करता है व्याधिका भय जलादिसे कष्ट महा अरिष्ट तथा धन धान्य का नाश करता है ॥२॥

भौमफलम्

रन्ध्रं गृहं भौमनिरीक्षितं च हर्षस्तथा वस्तिविशेषपीडा ।
लोहाद्भयं वा धनधान्यनाशो मार्गे भयं तस्करतो धनव्ययः ॥३॥

यदि अष्टम स्थानमें मंगलकी दृष्टि हो तो हर्ष हो वस्तिमें विशेष पीडा लोहसे भय, धनधान्यका नाश मार्गमें भय तस्करसे धन नष्ट हो ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

अष्टमं हि भवनं बुधेक्षितं मृत्युनाशनकरो नरः सदा ।
राजवृत्तिकृषिकर्मजीवितश्चान्यदेशगमनं च तस्य हि ॥४॥

जो बुधकी दृष्टि अष्टम स्थानमें हो तो वह मनुष्य मृत्युका नाश करनेवाला हो, वह राजवृत्ति तथा कृषिकर्मसे जीविका करे तथा उसका अन्य देशमें गमन हो ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

रन्ध्रवेश्म सुरपूजितेक्षितं मृत्युतुल्यरुक्छर्दि चाष्टमे ।
राजतो भयमथान्यतो भवेद्द्रव्यहीनपुरुषो मतिक्षयः ॥५॥

जो अष्टम घरपर गुरुकी दृष्टि हो तो उस मनुष्यके अष्टम वर्षमें

मृत्युकी तुल्य रोग हो, राजा वा अन्य पुरुषसे भय हो द्रव्यहीन हो और मतिहीन होता है ॥५॥

भृगुदृष्टिफलम्

रन्ध्रे गृहे शुक्रनिरीक्षिते च रन्ध्रे सदा व्याधिविवर्द्धनं च ।
कष्टेन साध्यो भवतीह चार्थः कुबुद्धितोऽनर्थकरः सदा नरः ॥६॥

जो अष्टमम शुक्रकी दृष्टि हो तो उस पुरुषके रंध्रमें सदा व्याधिकी वृद्धि हो उसका अर्थ सदा कष्टसाध्य हो और कुबुद्धिके कारण सदा अनर्थ करे ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

मृत्युभावगतमन्ददर्शनं वारितो भवति लोहतो भयम् ।
जन्मतो हि नखवत्सरे भवेन्मृत्युतुल्यमथवा रुजो भयम् ॥७॥

जो अष्टम शनिकी दृष्टि हो तो जल और लोहेसे उस पुरुषको भय हो, अथवा जन्मसे वीसवें वर्ष मृत्यु तुल्य रोग भय होता है ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

निधनवेश्मनि राहुनिरीक्षिते वंशहानिबहुदुःखितो नरः ।
व्याधिदुःखपरिपीडितोऽथवा नीचकर्म कुरुतेऽत्र जीवितः ॥८॥

अष्टम यदि राहुकी दृष्टि हो तो वंशहानि और वह पुरुष बहुत दुःखी होता है। व्याधिके दुःखसे पीडित हो और अपने जीवनमें नीच कर्म करनेवाला होता है ॥८॥ इति दृष्टिफलम्।

अथ ग्रहवर्षसंख्या

छिद्रे त्रयो मृतिभितो हिमगुः षडब्दे नाशं कुजस्तु विपदाक्षियमेऽथ सौम्यः । मन्वब्दके हि धनधान्यविनाशकारी गुरुरिन्दुरामैः रोगं सितो दशागमे स्वपराक्रमं च ॥१॥

अष्टम सूर्यकी दशा ३ वर्ष मृत्युभय, चन्द्रमाकी छः वर्ष मृत्यु भय मंगलकी २२ वर्ष विपत्ति, वुध १४ वर्ष धन धान्यनाश, गुरु रोग ३१ वर्ष शुक्र १० वर्ष पराक्रम करे ॥१॥

अथ विचारः

चतुर्थस्थो यदा भानुः शशिना च विलोकितः ।
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणं तस्य निर्दिशेत् ।।१।।

जो चौथे स्थानमें सूर्य हो उसको चन्द्रमा देखता हो और सौम्य ग्रहकी दृष्टि न हो तो उस पुरुषका मरण होता है ।।१।।

अष्टमाधिपतिर्यत्र तदङ्कं त्रिगुणीकृतम् ।
अष्टमाङ्केन संयुक्तं चोदयेत्स्फुटमायुषः ।।२।।

जहां अष्टमेश हो उस अंकको तिगुना कर अष्टम अंकको जोड़कर अवस्था कहे ।।२।।

दिनकर प्रमुखैर्निधनाश्रितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ।
अनलतो जलतः करवालतो ज्वरबलेन रुजा क्षुधया तृषा ।।३।।

जो सूर्यादिग्रह अष्टमस्थानमें हों तो मृत्यु क्रमसे इस प्रकारज जाननी–अग्नि, जल, तलवार, ज्वरबल, रोग, क्षुधा और तृषा इनकी बाधासे मृत्यु होती है ।।३।।
इत्यष्टमभावविवरणं समाप्तम् ।

अथ भाग्यभावो नवमः

अमुकाख्यममुकदैवतममुकग्रहयुतं च स्वस्वामिना दृष्टं युतं वाऽन्यैः शुभाशुभैर्ग्रहैर्न वेति ।।

अमुक नाम, अमुक देवता, अमुक ग्रहका योग स्वामीकी दृष्टि तथा शुभाशुभ ग्रहोंसे देखा गया है या नहीं यह विचारना चाहिये ।।

तत्र विलोकनीयानि

धर्मक्रियायां मनसः प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ।
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ।।१।।

धर्मकी क्रियामें मनकी प्रवृत्ति, भाग्यका उदय, निर्मल शील, तीर्थयात्रा, पुराणोंसे प्रणय यह नवम घरसे देखना चाहिये ।।१।।

तत्रादौ लग्नफलम्

धर्मस्थितं चैव हि मेषलग्नं चतुष्पदोऽर्थं प्रकरोति धर्मम् ।
तेषां प्रदानेन तु पोषणेन दयाविवेकेन च पालनेन ।।१।।

जो धर्मस्थानमें मेषलग्न हो तो वह पुरुष चौपायोंसे प्राप्त धर्म करे अर्थात् उनके दान पोषण दया विवेक और पशुपालन यह उस पुरुषको होते हैं ॥१॥

वृषे च धर्मे तु गते मनुष्यो धनी च कुर्याद्वचनं प्रभूतम् ।
विचित्रदानैर्बहुलप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनैश्च ॥२॥

जो धर्मस्थानमें वृष लग्न हो तो वह मनुष्य धनी बड़े वचन बोलनेवाला, विचित्र दान भूषण वस्त्र भोजन प्रदान करनेवाला होता है ॥२॥

तृतीयराशौ प्रकरोति धर्मं धर्ममतिं तस्य नरस्य चैव ।
अभ्यागताद्वै द्विजभोजनाच्च दीनानुकंपाश्रयणाच्च नित्यम् ॥ ३ ॥

जो मिथुन राशि नवम हो तो उस मनुष्यकी वुद्धि अभ्यागतसेवा, ब्राह्मण भोजन और दीनोंपर दयाके आश्रयसे सदा धर्म करनेमें तत्पर होता है ॥३॥

वृतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैर्धर्मं नरः संकुरुते सदैव ।
धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा वनसेवया च ॥४॥

जिसके धर्मस्थानमें कर्क लग्न हो तो वह मनुष्य सदा विचित्र व्रत उपावासोंसे धर्म करे तथा तीर्थ आश्रय वा वनकी सेवा करे ॥४॥

आसंस्थितेऽङ्के खलु सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मर्त्यः ।
स्वधर्महीनश्च क्रियाभिरेव सुतीर्थसंपद्विनयैर्विहीनः ॥५॥

जिसके नवम सिंह राशि हो वह मनुष्य दूसरेका धर्मानुष्ठान करे, स्वयं धर्म क्रियासे हीन हो और तीर्थ सम्पत् विनय इनसे विहीन होता है ॥५॥

धर्मस्थितः स्याद्यदि षष्ठराशिः स्त्रीधर्मसेवी मनुजो भवेद्वै ।
विहीनभक्तिर्बहुजिष्णुता च पाखण्डमाश्रित्य तथान्यपक्षम् ॥६॥

जिसके नवम कन्या लग्न हो वह मनुष्य स्त्री धर्मसेवी होता है तथा भक्तिसे हीन, अधिक जयशील हो, पाखण्डके आश्रित होकर दूसरेका पक्ष स्वीकार करे ॥६॥

तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा प्रसिद्धः ।
देवद्विजानां परितोषणाच्च जनानुरागेण तथाद्भुतः सः ॥७॥

जो नवम तुला लग्न हो तो वह मनुष्य सदा धर्मसे प्रसिद्ध हो, देवता ब्राह्मणोंका सदा संतोष करे, मनुष्योंसे प्रेम करे, अद्भुत हो ॥७॥

धर्माश्रितोऽलिश्च भवेद्यदा वै पाखण्डधर्मं कुरुते मनुष्यः ।
पीडाकरश्चैव तथा जनानां भक्त्या विनीतः परितोषणेन ॥८॥

जो धर्मस्थानमें वृश्चिक राशि हो तो वह मनुष्य पाखण्ड धर्म करे मनुष्योंको पीडाकारक हो, भक्तिसे और परितोषसे नम्र होता है ॥८॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यः करोति धर्मं द्विजपोषणं च ।
स्वेच्छान्वितोऽथो सविनिर्मिता च प्रभूततोषः प्रथितस्त्रिलोके ॥९॥

धन लग्न नवम हो तो मनुष्य द्विजपोषणके धर्म करे तथा स्वेच्छाचारी दूसरोंको संतोष करनेवाला सब लोकोंमें विख्यात होता है ॥९॥

धर्माश्रितेवै मकरे मनुष्यो धर्मात्प्रतापी खलु जायते च ।
पश्चाद्विरक्तिःखलु कामिनीषु कौल्यं समाश्रित्य सदा च पक्षम् ॥१०॥

नवम मकर लग्न हो तो मनुष्य धर्मसे प्रतापी होता है और वह कुलके पक्षको आश्रय करके पीछे स्त्रियोंमें विरक्त होता है ॥१०॥

कुम्भे च धर्मं प्रगते हि धर्मं पुंसां विधत्ते सुरसङ्गजातम् ।
वृक्षाश्रयोत्थं च तथाशिषं च आरामवापीप्रियता सदैव ॥११॥

कुंभ लग्न नवम स्थानमें हो तो वह मनुष्य देव निर्दिष्ट धर्म करे, वृक्ष आरोपण वाग बावड़ी तालावादिके निर्माणमें उसकी उत्कृष्ट इच्छा रहे ॥११॥

धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्मं विविधं नृलोके ।
देवालयारामतडागजातं तीर्थाटनैश्चाथ मखैर्विचित्रैः ॥१२॥

जो नवम मीन राशि हो तो वह मनुष्य लोकमें अनेक प्रकारसे धर्म करनेवाला होता है, देवालय वगीचे तालाव तीर्थाटन यज्ञादि करनेवाला होता है ॥१२॥ इति धर्मभावे लग्नफलम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

धर्मकर्मनिरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा ।
मातृवर्गविषमो भवेन्नरो धर्मगे सति दिवाकरे खलु ॥१॥

जो नवम सूर्य हो तो वह पुरुष धर्मकर्ममें प्रीति करनेवाला श्रेष्ठ मति, पुत्र और मित्रोंसे उत्पन्न जो सुख उससे युक्त तथा मातृपक्षके मनुष्यों से वैर करनेवाला होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ।
सुकर्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ॥२॥

जिसके नवम चन्द्रमा हो वह स्त्री पुत्र और धनसे युक्त पुराणवार्ता श्रवणमें अनुरक्त, श्रेष्ठ कर्म तथा श्रेष्ठ तीर्थ करनेवाला होता है ॥२॥

भौमफलम्

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं धरापतेर्गौरवतोपलब्धिम् ।
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ॥३॥

जो नवम मङ्गल हो तो उस मनुष्यके मनमें हिंसाका उदय, राजासे गौरवकी प्राप्ति क्षीण पुण्य और थोड़ा धन होता है ॥३॥

बुधफलम्

बुध उपकृतिधाता चारुजातादरो योऽनुचरधनसुपुत्रैर्हर्षयुक्तो विशेषात्
विकृतियुतमनस्को धर्मपुण्यैकनिष्ठो ह्यमृतकिरणजन्मा पुण्यभावे यदा स्यात् ॥४॥

जो नवम बुध हो तो वह मनुष्य ज्ञानी उपकारी आदर करनेवाला, सेवक धन और पुत्रोंसे युक्त, विशेष हर्षवाला, कभी उन्माद युक्त होता है तथा उसकी वुद्धि पुण्य और धर्ममें तत्पर होती है ॥४॥

गुरुफलम्

नरपतेः सचिवः सुकृती पुमान्सकलशास्त्रकलाकलनादरः ।
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै नवमस्थिते ॥५॥

जो नवम गुरु हो तो वह पुरुष राजाका मंत्री, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला संपूर्ण शास्त्र कलामें प्रेमी तथा व्रत करनेवाला द्विजोंमें तत्पर होता है ॥५॥

भृगुफलम्

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रोत्सवेषु
पितृकृतधनसंघात्यन्तसंजाततोषः।
मुनिजनसमवेषो जातिमान्यः कृशश्च
भवति नवमभावे संस्थिते भार्गवेऽस्मिन् ॥६॥

जो नवम शुक्र हो तो अतिथि गुरु और देवताओंका पूजन, तीर्थयात्रा, उत्सवोंमें पिताका संचित किया धन व्यय कर संतोष माननेवाला, मुनिजनोंके समान वेषवाला, जातिमान्य कृश शरीर होता है ॥६॥

शनिफलम्

धर्मकर्मरहितो विकलाङ्गो दुर्मतिर्हि मनुजो विमनाः सः।
संभवस्य समये हि नरस्य भाग्यसद्मनि शनौ स्थिरचित्तः ॥७॥

जिसके नवम शनि हो वह मनुष्य धर्म कर्मसे रहित, विकल अंग, दुर्मति, विमन और स्थिरचित्त होता है ॥७॥

राहुफलम्

तमोऽङ्गीकृतं न त्यजेद्वा व्रतानि त्यजेत्सोदरान्नैव चातिप्रियत्वात्।
रतिः कौतुके यस्य तस्यास्ति भाग्ये शयानं सुखं वन्दिनो बोधयन्ति ॥८॥

जो नवम राहु हो तो वह मनुष्य जो अंगीकार करे उसको वा व्रतोंको त्याग न करे और अतिप्रिय होनेके कारण भ्राताओंको नहीं त्यागता है, रतिमें कौतुकवाला होता है, शयनसे बंदीजन उसको जगाते हैं॥८॥

केतुफलम्।

यदा धर्मगाः केतवो धर्मनाशं सुतीर्थे मतिं म्लेच्छतो लाभवृद्धिम्।
शरीरे व्यथा बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं करोति ॥९॥

जो धर्मस्थानमें केतु हो तो धर्म नाश, तीर्थमें मति म्लेच्छसे लाभवृद्धि हो, देहमें व्यथा, बाहुमें रोग तप वा दानसे हास्यवृद्धि हो ॥९॥

इति ग्रहफल

अथ नवमभवनेशफलम्

तनुगते नवमाधिपतौ गुरौ सुरविनायकपूजनतत्परः ।
सुकृतवान्कृपणो नृपकर्मकृत्स्मृतियुतो मितभुक्स नरः शुचिः ॥१॥

जो धर्म स्थानका अधिपति तनु स्थानमें स्थित हो तो वह मनुष्य देवता विनायकके पूजनमें तत्पर सुकृत युक्त, कृपण नृप कर्म करनेवाला, स्मृतियुक्त, परिमित भोजन करनेवाला, पवित्र होता है ॥१॥

नवमपे धनभावगते व्रती स तु सुशीलसुतश्च नरः शुचिः ।
गतियुतश्च चतुष्पदपीडितो व्ययुतः शमसाधनतत्परः ॥२॥

जो नवमेश धनस्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य व्रतयुक्त सुशील पुत्रवाला पवित्र होता है, गतिमान् चौपायोंसे पीडित, व्ययुक्त शांति साधनमें तत्पर होता है॥२॥

सुकृतपे सहजस्थलगे तथा भवति रूपयुतो जनवल्लभः ।
स्वजनबन्धुजनप्रतिपालको विदितकर्मकरो यदि जीवितः ॥३॥

जो नवमेश सहजस्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य रूपवान्, जनोंका प्रिय होता है तथा स्वजन बंधुजनका प्रतिपालक और जीवित रहे तो विदित कर्म करनेवाला होता है ॥३॥

हिबुकभावगते सुकृतेश्वरे बुधसुहृत्पितृपूजनतत्परः ।
भवति तीर्थरतः सुरभक्तिमान्निखिलमित्रपरः स समृद्धिमान् ॥४॥

जो नवमेश चौथे स्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य पंडित, सुहृद और पिताके पूजनमें तत्पर होता है तथा तीर्थोंमें रत, देवताओंकी भक्ति करनेवाला संपूर्ण मित्रोंमें तत्पर, समृद्धिमान् होता है ॥४॥

सुकृतपे तनयस्थलगे यदा सुरमहीसुरभावयुतो नरः ।
प्रकृतिसुंदरताप्रतिमान्नरो मधुरवाक्तनयाश्च भवन्ति हि ॥५॥

जो धर्मपति पञ्चमस्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंमें भाव रक्खे तथा स्वभावसे सुंदर और बुद्धिमान् हो मधुरवाणीवाले पुत्रोंसे युक्त होता है ॥५॥

नवमपे रिपुगे रिपुसंयुतः प्रणयकृद्विकलः कथितः शुचिः ।
विकृतदर्शनभाक्स तथा खलो भवति निन्दितकीर्तियुतो नरः ॥६॥

जो नवमस्थानका पति षष्ठस्थानमें प्राप्त हो तो वह पुरुष शत्रुओंसे युक्त, प्रणय करनेवाला, विकल तथा पवित्र हो, विकृत दर्शनवाला, दुष्ट, निंदित कीर्तिवाला होता है ।।६।।

नवमप मदगे वनितासुखं वचनकृच्चतुरा धनसंयुता ।
भवति रागवती किल सुंदरी सुकृतकर्मरता बहुशीलिनी ।।७।।

जो नवमेश सप्तम हो तो उस पुरुषको स्त्रीका सुख हो, वचन रचने वाला हो और उसकी स्त्री चतुरा धनवती रागवती सुकृत कर्ममें तत्पर बहुत शीलवाली होती है ।।७।।

भवति दुष्टतनुर्जनवञ्चको मृतिगते सुकृताधिपतौ यदा ।
खलजनः सुकृतै रहितः शठो विट्सखश्च तथैव नपुंसकः ।।८।।

जो धर्मपति अष्टम हो तो वह पुरुष दुष्ट शरीर, जनवंचक तथा खल होता है। अच्छे पुरुष सज्जनोंकी संगतिसे रहित, शठ, कामियोंकी संगतिवाला नपुंसक होता है ।।८।।

सुकृतभावपतिर्नवमे स्थितौ भवति बन्धुजनैः सहितः शुचिः ।
अरुचितश्च विवादकरो जनो गुरुसुहृत्स्वजनेषु रतः सदा ।।९।।

जो धर्मेश धर्मस्थान में ही स्थित हो तो वह पुरुष वंधुजनयुक्त पवित्र होता है, अरुचिसे विवाद करनेवाला, गुरु, सुहृद और अपने जनोंसे प्रीति करनेवाला होता है ।।९।।

नृपतिकर्मकरो नृपवित्तयुक्सुकृतकर्मकरो जननीपरः ।
विदितकर्मकरः सुकृताधिपो न गगनगे पुरुषो भवति ध्रुवम् ।।१०।।

जिसके धर्मपति दशम भवनमें हो वह पुरुष राजाका कर्म करनेवाला और राजाके धनसे युक्त हो तथा श्रेष्ठ कर्म और माताकी सेवामें तत्पर विख्यात कर्म करनेवाला होता है ।।१०।।

भवति कर्मकरो बहुनायकः सुकृतवान्बहुदानपरः पुमान् ।
धनपतिर्नृपतेर्बहुवित्तभुक्सुकृतपे भवगेहगते सदा ।।११।।

जो धर्मेश ग्यारहवें घरमें हो तो कर्म करनेवाला बहुतोंका स्वामी पुण्यवान्, बहुत दान देनेवाला, धनपति राजासे बहुत धन पानेवाला होता है ।।११।।

व्ययगतः सुकृताधिपतिर्यदा भवति मानयुतः परदेशगः ।
मतियुतस्त्वतिसुंदरदेहयुग्यदि खलाश्च स्वगादिह धूर्तकः ।।१२।।

जो धर्मपति बारहवें हो तो वह मनुष्य मानयुक्त परदेशमें रहनेवाला हो, मतिमान् अतिसुंदर देहवाला होता है खलग्रह हो तो धूर्त होता है ॥१२॥

इति नवमभावाधिपतिफलम्

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

नवमभाव इहैव निरीक्षिते दिनकरेण सुखं न भवेस्त्रियाः ।
तदनु पापरतो न तपो यदा तदनु वृद्धतनौ सकलं सुखम् ॥१॥

जो नवम भावको सूर्य देखता हो तो वह पुरुष स्त्रीसुखसे रहित हो युवावस्थामें कुछ पापरत हो और तप न करे पीछे वृद्ध शरीर होनेपर संपूर्ण सुख होते हैं ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

धर्मसद्मनि तु चन्द्रवीक्षिते चान्यदेशगतराजपुत्रकः ।
बन्धुसौख्यमपि चार्थतो दयाद्रव्यहीनपुरुषो यशः क्वचित् ॥२॥

जो धर्मभावको चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष अन्य देशोंमें विचरता हुआ राजपुत्र हो, बंधुजनोंसे सुख पावे, वह पुरुष दया द्रव्यसे हीन हो कुछ यश मिले॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

भाग्यनामभवने कुजेक्षिते भाग्यवृद्धिरपि वै नरस्य हि ।
शालकेन सह सत्यनाशनं धर्मयुक्तमपि चोग्रतासुखम् ॥३॥

जो भाग्यस्थानको मंगल देखता हो तो उस मनुष्यके भाग्यकी वृद्धि हो, साला सहित सत्य नाश हो, धर्मयुक्त सुखमें अति उग्रता हो, पश्चात् सुख होवे ॥३॥

वुधदृष्टिफलम्

भाग्यसद्म यदि चेन्दुजेक्षिते पुत्रसौख्ययुगथो च भाग्यवान् ।
अन्यदेशगतराजपूजितो मानुषो भवति सन्ततं सुखी ॥ ४ ॥

जो वुधकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य पुत्रके सुखसे युक्त भाग्यवान् होता है, दूसरे देशमें जाकर राजासे मान पानेवाला तथा धर्ममें रत निरंतर सुखी होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

भाग्ये यथा देवपुरोहितेक्षिते धर्मप्रवृद्धिः सुखराज्यकामः ।
शास्त्रेषु नैपुण्यमथो सदा भवेत्स निर्गुणो राजधनान्वितः सदा ।।५।।

जो भाग्यस्थानको देवगुरु देखता हो तो उस पुरुषकी धर्मवृद्धि, सुख राज्यकी प्राप्ति हो, संपूर्ण शास्त्रमें निपुणता, निर्गुणता, सदा राजा वा पिताके धनसे युक्त होता है ।।५।।

भृगुदृष्टिफलम्

भाग्यसद्म यदि भार्गवेक्षितं भाग्यवृद्धिमथवा करोति हि ।
अन्यदेशगतजीविकायुतश्चान्यदेशनृपतेर्जयः सदा ।।६।।

जो भाग्यस्थानको शुक्र देखे तो उस मनुष्यके भाग्यकी वृद्धि करनेवाला होता है, दूसरे देशमें जानेसे उस मनुष्यको जीविका प्राप्त हो, दूसरे राजासे सदा जय मिले ।।६।।

शनिदृष्टिफलम्

भाग्यभाव इनसूनुवीक्षिते तस्य भाग्यवशतो यशो भवेत् ।
बन्धुहीनः परदेशतः सुखी धर्महीनः पुरुषः पराक्रमी ।।७।।

भाग्यस्थानको शनि देखता हो तो उस पुरुषके भाग्यवशसे यश होता है और पुरुष बंधुहीन परदेशमें सुखी, धर्महीन और पराक्रमी होता है ।।७।।

राहुदृष्टिफलम्

नवमसद्म हि राहुनिरीक्षितं नववधूषु विलासयुतः सदा ।
निजसहोदरतोऽतिनिपीडनं सुतसुतार्थयुतश्च नरः सुखी ।।८।।

जो नवमस्थानको राहु देखता हो तो वह पुरुष नववधुओंमें विलास करनेवाला होता है अपने भाइयोंसे अति पीडा हो और पुत्रादिसे युक्त होकर मनुष्य सुखी होता है ।।८।। इति दृष्टिफलम् ।

अथ वर्षसंख्या

तीर्थञ्च धर्मकृदिनो नवमेथ चन्द्रस्तीर्थं नखेसृगिह वातभयं च चक्रे गोक्ष्यब्दमातृमृतिमिन्दुसुतोऽथजीवस्तिथ्यब्दके पितृमृतिं च सितोऽत्र लक्ष्मीम् । शनिराहुकेतुभिर्वर्षतातभयम् ।।१।।

सूर्यदशा वर्ष ९ तीर्थ व धर्म करे, चन्द्रमाकी २० वर्ष तीर्थ करे, मंगलकी १४ वर्ष वातरोगसे भय हो, बुध २९ वर्ष मातृकष्ट वा मृति हो, गुरु १५ वर्ष पिताको अरिष्ट वा मृति, शुक्र २ वर्ष लक्ष्मीकी प्राप्ति हो शनि राहु केतु १४ वर्ष तातभय करें ॥१॥

अथ विचारः

मूर्त्तेश्चापि निशापतेश्च नवमो भाग्यालयः कीर्तितः
नत्स्वस्वामियुतेक्षितः प्रकुरते भाग्यं स्वदेशोद्भवम् ।
चेदन्यैर्विषयांतरेऽत्र शुभदाः स्वोच्चादिगाः सर्वदा
कुर्युर्भाग्यविवर्धनन्तु विबला दुःखोपलब्धि परम् ॥१॥

जन्मलग्नसे वा चन्द्रमासे जो नवम स्थान है वह भाग्यभाव कहाता है यदि वह अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो तो निज देशमें भाग्यका उदय हो और यदि अन्य ग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो परदेशमें भाग्यका उदय हो यदि योगकारक ग्रह अपने उच्च वा मूलत्रिकोण आदिमें हों तो सर्वदा भाग्योदय रहे और यदि वलहीन हों तो अत्यन्त दुःख हो ॥१॥

भाग्येश्वरो भाग्यगतो ग्रहश्चेद्योवाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् ।
यस्य प्रसूतौ स च भाग्यशाली विलासयुक्तो बहुलार्थयुक्तः ॥२॥

जिसके जन्मकालमें भाग्यपति भाग्यस्थानमें स्थित हो या अधिक बलवान् होकर नवम घरको देखता हो तो वह मनुष्य भाग्यशाली हो, विलासयुक्त वहुतसे अर्थोंसे युक्त होता है ॥२॥

चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ।
भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥३॥

जिसके जन्मकालमें भाग्येश अपने घरमें हो और शुभ ग्रहोंकी उसपर दृष्टि हो तो वह पुरुष भाग्यशाली तथा अपने कुलमें प्रतिष्ठित होता है, जैसे मानस सरोवरमें हंस ॥३॥

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च ।
वंशानुमानात्सचिवं नृपं च कुर्वंति ते सौम्यदृशा विशेषात् ॥४॥

जो सूर्य मंगल पूर्ण चंद्रमासे युक्त हों और वे वली होकर भाग्य स्थानमें स्थित हों तो वह वंशके अनुमानसे राजाका मंत्री हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो विशेषतासे हो ॥४॥

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगं कुरुते स लक्ष्म्या ।
सौम्येक्षितोऽसौ यदि भूमिपालं दन्तावलोत्कृष्टविलासशीलम् ॥५॥

जो भाग्यस्थानमें अपनी उच्च राशिका कोई ग्रह हो तो उस मनुष्यको लक्ष्मीका योग करता है और वह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट हो तो राजा हो तथा हाथियोंमें अधिक विलास करनेवाला होता है ॥५॥

द्वाविंशे रविणा फलं हि कथितं चन्द्रे चतुर्विंशतिरष्टाविंशति भूमिनंदनसमा दन्ताश्च सौम्ये स्मृताः । जीवे षोडश पञ्चविंशति भृगौ षट्त्रिंश सौरौ स्मृताः कर्मेशो यदि कर्मगः फलमिदं लाभोदये संस्मृतम् ॥६॥

सूर्यके २२ वर्ष, चन्द्रके २४ वर्ष, मंगलके २८ वर्ष, बुधके ३२वर्ष वृहस्पतिके १६ वर्ष शुक्रके २५ वर्ष शनिके ३६ वर्ष हैं कर्मेश जैसे स्थानमें प्राप्त होता है वैसा लाभादिफल करता है ॥६॥

इति भाग्यभावविवरणं समाप्तम् ।

अथ दशमभावविचारः

अथ दशमं कर्मभवनममुकाख्यममुकदैवतममुकग्रहयुतं स्वस्वामिना युतं दृष्टं च वाऽन्यैः शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं युतं न वेति ॥१॥

दशम कर्मभवन है इसमें अमुक देवता ग्रहयोग निज स्वामीसे देखा गया है या नहीं या शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि है या नहीं पूर्ववत् देखना चाहिये ॥१॥

तत्र विलोकनीयानि

व्यापार मुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥१॥

व्यापार, मुद्रा, राजासे मान, राज्य, प्रयोजन, पिता, बड़े पदकी प्राप्ति यह सब दशम घरसे विचारना चाहिये ॥१॥

तत्र लग्नफलम्

मेषाभिधः कर्मगृहे यदि स्यात्करोति कर्मप्रवरं सुहृष्टम् ।
पैशुन्यरूपं च नृपानुरक्तं सुनिन्दितं साधुजनस्य लोके ॥१॥

कर्मस्थानमें मेष लग्न हो तो वह पुरुष सदा श्रेष्ठ कर्म करे हर्षवान्, चुगली करनेवाला तथा राजोंमें अनुरक्त हो, निंदित हो, साधुजनोंका मान्य करे ॥१॥

वृषेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म व्ययात्मकं साधुजनानुकम्पम् ।
द्विजेन्द्रदेवातिथिपूजकं च ज्ञानात्मकं प्रीतिकरं सतां च ॥२॥

जो कर्मस्थानमें वृष लग्न हो तो वह मनुष्य खर्चके कार्य और साधुजनोंमें दया करे, ब्राह्मण, देवता, अतिथियोंका प्रेमी ज्ञानात्मक सत्पुरुषोंसे प्रीति करनेवाला होता है ॥२॥

युग्मेऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः कर्म प्रधानं गुरुभिः प्रदिष्टम् ।
कीर्त्यान्वितं प्रीतिकरं जनानां प्रभासमेतं कृषिजं सदैव ॥३॥

जो कर्मस्थानमें मिथुन लग्न हो तो वह मनुष्य गुरुजनोंके कहे प्रधान कर्म करे, कीर्तिसे युक्त मनुष्योंके प्रीतिदायक कांतियुक्त तथा कृषिव्यापार भी करे ॥३॥

कर्केऽम्बरस्थं प्रकरोति मर्त्यः कर्म प्रपारामतडागजातम् ।
विचित्रवापीतरुवृन्दजं च कूपादिधर्मैकपरं सदैव ॥४॥

जो कर्मस्थानमें कर्क लग्न हो तो वह मनुष्य वापी वगीचे तालाव संवंधी कर्म करे, अनेक विचित्र वावड़ी वृक्ष स्थापित करे और निरंतर इन्हीं कर्मोंमें रत रहे ॥४॥

सिंहेऽम्बरस्थे कुरुते मनुष्यो रौद्रं सपापं विकृतं च कर्म ।
सपौरुषं प्रापणमेव नित्यं वधात्मकं निन्दितमेव पुंसाम् ॥५॥

कर्मस्थानमें सिंह लग्न हो तो वह मनुष्य रौद्र तथा पापयुक्त विकृत कर्म करे और पुरुषार्थसे प्राप्ति करे तथा वध वंधनके निन्दित कर्म नित्य करे ॥५॥

नभःस्थलस्थस्त्वथ षष्ठराशिःकरोति कर्मज्ञमितो मनुष्यम् ।
स्त्रीराजभारो जववान्निरुक्च सुरूपयोषिन्नितरां धनी च ॥६॥

जो कर्ममें कन्या राशि हो तो वह मनुष्य कर्मोंका करनेवाला हो, स्त्री राजका भार माननेवाला, वेगवान् रोगरहित हो, स्त्री उसकी सुंदर हो और वह अत्यन्त धनवान् होता है ॥६॥

तुलाधरे व्योमगते मनुष्यो वाणिज्यकर्मप्रचुरं करोति ।
धर्मात्मकं चापि नयेन युक्तं सतामभीष्टं परमं पदं च ॥७॥

जो तुला लग्न दशम घरमें हो तो वह मनुष्य अनेक वाणिज्य कर्म करता है और धर्मात्मक नीतिसे युक्त, सत्पुरुषोंसे अभीष्टकी प्राप्ति तथा परम पदकी प्राप्ति होती है ॥७॥

कीटेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म पुमान्सुदुष्टैः पुरुषैः समानम् ।
पीडाकरं देवगुरुद्विजानां सुनिर्दयं नीतिविवर्जितं च ॥८॥

जो दशम भवनमें वृश्चिक लग्न हो तो वह पुरुष दुष्ट पुरुषोंकी समान कर्म करे तथा देव गुरु और ब्राह्मणोंको पीडा देनेवाले दया और नीतिसे रहित कर्मोंको करे ॥८॥

चापेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म सेवात्मकं चौर्ययुतं मनुष्यः ।
परोपकारात्मकमोजसाढ्यं नृपात्मकं भूरियशः समेतम् ॥९॥

जो दशम स्थानमें धनुष लग्न हो तो वह मनुष्य सेवा और चौर्य कर्म करे तथा परोपकार पराक्रम नृपात्मक और बड़े यशसे युक्त कर्मोंका करनेवाला होता है ॥९॥

मृगेऽम्बरस्थे प्रचुरप्रतापं कर्मप्रधानं कुरुते मनुष्यम् ।
सुनिर्दयं बन्धुवधैः समेतं धर्मेण हीनं खलसम्मतं च ॥१०॥

जो दशम स्थानमें मकर लग्न हो तो वह पुरुष अधिक प्रतापी, कर्मप्रधान होता है और वह दयाहीन बंधुओंके वधसे युक्त, धर्महीन, खल पुरुषोंको सम्मत कर्म करता है ॥१०॥

घटेऽम्बरस्थे च करोति कर्म प्रयाणसक्तं परवञ्चनार्थम् ।
पाखण्डधर्मान्वितमिष्टलोभाद्विश्वासहीनं जनताविरुद्धम् ॥ ११ ॥

जो दशसस्थानमें कुंभ लग्न हो तो वह मनुष्य गमनागमनकर्म दूसरोंके वंचन करनेके निमित्त करे तथा इष्टके लोभसे पाखण्ड धर्म युक्त, विश्वासहीन, जनता विरुद्ध कर्म करे ॥११॥

मीनेऽम्बरस्थे च करोति मर्त्यः कुलोचितं कर्म गुरुप्रदिष्टम् ।
कीर्त्यान्वितं सुस्थिरमादरेण नानाद्विजाराधनसंस्थितं च ॥१२॥

जो दशमस्थानमें मीन लग्न हो तो वह पुरुष कुलधर्मानुसारी गुरुप्रदिष्ट कर्म करे तथा कीर्ति और स्थिरतासे युक्त, आदरपूर्वक अनेक ब्राह्मणोंकी आराधनासे युक्त कर्म करे ॥१२॥

इतिकर्मभावे लग्नफलम् ।

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि ।
साधूपकारकरणं मणिभूषणानि मेषूरणे दिनमणिः कुरुते नराणाम् ॥१

जिसके कर्मस्थानमें सूर्य हो तो वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धि, वाहन और धनके आगमसे सदा युक्त रहे, तथा राजाको प्रसन्नता और पुत्रोंके सुखसे युक्त हो, साधुओंका उपकार करनेवाला, मणियोंसे युक्त आभूषणवाला होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्तिर्मूर्तिः सत्त्वसन्तोषयुक्ता ।
चञ्चल्लक्ष्मीः शीलसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् २

जो कर्मस्थानमें चन्द्रमा हो तो राजोंसे विशेष धनकी प्राप्ति हो और उसकी विशाल कीर्ति हो, तथा सत्त्व और सन्तोषसे युक्त हो और उसके शीलसंपन्न शोभायमान लक्ष्मी होती है ॥२॥

भौमफलम्

विश्वंभराप्राप्तिमथो धनित्वं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ।
विश्वंभराप्राप्तिमथो धनित्वं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ।
चञ्चद्विभूषणमणिद्रविणागमांश्च मेषूरणे धरणिजः१ कुरुते नराणाम् ॥३॥

जिसके कर्मस्थानमें मंगल स्थित हो तो उस मनुष्यको पृथ्वीकी प्राप्ति हो, धनी हो, श्रेष्ठ साहससे युक्त हो दूसरे जनोंके उपकारमें प्रयत्न करनेवाला तथा सुंदर भूषण मणि और द्रव्यके आगमसे युक्त होता है ॥३॥

बुधफलम्

ज्ञाताऽत्यन्तश्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासंपत्संयुतो राजमान्यः ॥
चञ्चल्लीलावाग्विलासाधिशाली मानस्थाने बोधने वर्त्तमाने ॥४॥

जो दशमभावमें बुध हो तो वह मनुष्य ज्ञाता, अत्यन्त श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, अनेक संपत्तिसे युक्त, राजमान्य सुंदर लीलासे युक्त, वाणीके विलासमें चतुर होता है ॥४॥

गुरुफलम्

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ।
यशोविवृद्धिर्बहुधा जगत्यां राज्ये सुरेज्ये विजयं नराणाम् ॥५॥

दशम भवनमें गुरु हो तो श्रेष्ठ राजाके चिह्न, उत्तम वाहन, मित्र, पुत्र लक्ष्मी स्त्रीसुखकी प्राप्ति जगत्में यशकी वृद्धि बहुत होती है और विजय प्राप्त होता है॥५॥

भृगुफलम्

सौभाग्यसन्मानविराजमानः कान्तासुतप्रीतिरतीव नित्यम् ।
भृगोः सुते राज्यगते नरः स्यात्स्नानार्चनध्यानविराजमानः ॥६॥

जो दशम स्थानमें शुक्र हो तो वह पुरुष सौभाग्य और सन्मानसे विराजमान स्त्री पुत्रमें अत्यन्त प्रीतिमान्, स्नान अर्चन और ध्यानसे युक्त होता है ॥६॥

शनिफलम्

राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं संग्राम चन्दनपुराद्यधिकारयुक्तम् ।
कुर्यान्नरं सुखवरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति ॥७॥

जो कर्म स्थानमें शनि हो तो वह पुरुष राजाका मंत्री, नीति युक्त, विनीत, संग्राममें चतुर, चन्दनचर्चित, पुरके अधिकारमें युक्त, सुखी और धनसे पूर्ण होता है ॥७॥

राहुफलम्

धनाद्यूनता न्यूनता च प्रतापे जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नातिशेते ।
सुहृद्दुःखदग्धो जलाच्छीतलत्वं पुनः खे तमो यस्य स क्रूरकर्मा॥८॥

जो पुरुषके दशम भावमें राहु हो तो वह पुरुष धनादिमें न्यून, प्रताप-हीन और जनोंमें व्याकुल हो, सुखसे शयन न कर सके, मित्रोंके दुःखसे दग्ध रहे, क्रूर कर्मोंका करनेवाला हो, जलसे अति शीतलता माने ॥८॥

केतुफलम्

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगो मातृनाशं करोति ।
तथा वाहनैः पीडितोरुर्भवेत्स यदा नैणिकः कन्यकास्थोऽसितेष्टः ॥९॥

जिसके कर्मस्थानमें केतु हो उस पुरुषको पितासे सुख न मिले, स्वयं दुर्भागी होकर माताका नाश करता है, वाहनसे उसकी जंघा पीडित रहें,

जो कन्याका हो तो वीणा बजानेवाला और कृष्ण पदार्थोंमें रुचि करनेवाला होता है ।।९।। इति कर्मभावे ग्रहफलम् ।

अथवा दशमभवनेशफलम्

दशमपे तनुगे जननीसुखं पितरि भक्तिपरः सुखसंयुतः ।
खलखगैर्बहुदुःखपरः खलो जनकवञ्चनकृच्च सुखान्वितः ।।१।।

जो दशमपति तनुस्थानमें हो तो उस पुरुषको मातासे सुख हों, पिताकी भक्तिमें तत्पर और सुखसे युक्त होता है और क्रूर ग्रह हों तो बहुत दुःख युक्त, दुष्ट तथा मनुष्योंका वंचक और सुखी होता है ।।१।।

भवति वित्तगते गगनाधिपे जनकमातृसुखं शुभखेचरैः ।
कठिनदुष्टवचस्तनुभुङ्नरः सुतनुकर्मकरो धनवान्भवेत् ।।२।।

जो कर्मेश धनस्थानमें हो और वह शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो वह पुरुष माता पिताको सुखदायक होता है, कठिन दुष्ट वचन बोलनेवाला सुंदर शरीर अच्छे कर्म करनेवाला धनी होता है ।।२।।

स्वजनमातृविरोधकरः सदा बहुलसेवककर्मकरो भवेत् ।
तदनु मातुलपुत्रसुखोल्पको न हि समर्थवपुः पृथुकर्मणि ।।३।।

यदि कर्मेश तीसरे घरमें हो तो वह पुरुष स्वजन और मातासे विरोध करनेवाला, सेवकोंके अनेक कर्म करनेवाला, मामाके पुत्रसे थोड़ा सुख पाने-वाला, वड़े कर्म करनेमें असमर्थ होता है ।।३।।

दशमपेऽम्बुगते नितरां सुखी पितरि मातरि पोषणतत्परः ।
सकललोकदशामपि तापकृन्नृपतिसंभवलाभविभूषितः ।।४।।

जो दशमपति चतुर्थस्थानमें हो तो वह पुरुष अत्यन्त सुखी, पिता माताका पोषण करनेवाला होता है, सब लोककी दशासे तप्त होनेवाला, राजाके पक्षसे लाभ प्राप्त करनेवाला होता है ।।४।।

भवति सुंदरकर्मकरो नरो नृपतिलाभयुतोऽप्यतिभोगवान् ।
विमलगानकलाकुशलः स्मृतो गगनपे सुतगेऽल्पसुखी नरः ।।५।।

जो कर्मेश पञ्चम हो तो वह मनुष्य सुंदर कर्म करनेवाला, राजासे लाभ प्राप्त कचनेवाला, अति भोगवान्, श्रेष्ठ गीतगानकी कलामें कुशल और थोड़े सुखसे युक्त होता है ।।५।।

रिपुगृहे दशमाधिपतौ गदी नृपतिवैरकरश्च विवादकृत् ।
प्रबलकामपरोऽप्यथ भाग्यतो रिपुगणाद्यदि जीवति जीवति ।।६।।

जो कर्मेश छठे हो तो वह पुरुष रोगी, राजोंसे वैर तथा विवाद करनेवाला हो और वह अत्यन्त कामासक्त होकर भी दैववश यदि शत्रुसमूहसे नष्ट जीवन न हो तो जीवित रहे ।।६।।

सुतवती बहुरूपसमन्विता रमणमातरि भक्तिसमन्विता ।
भवति तस्य जनस्य निरंतरं प्रियतमाऽम्बरपे दयितां गते ।।७।।

जो कर्मेश दशमपति सप्तम स्थानमें हो तो उस पुरुषकी स्त्री रूपवती, पुत्रवती होती है तथा पति और सासमें भक्ति करनेवाली, अत्यन्त प्रिय होती है ।।७।।

अतिखलोऽनृतवाक्कपटी नरस्तदनु चोरकलाकुशलः सदा ।
जननिपीडनतापकरः सदा दशमपे निधने तनुजीवितः ।।८।।

जो कर्मेश अष्टम हो तो वह पुरुष अत्यन्त दुष्ट, झूंठा, कपटी, चोर कलामें कुशल, माताके क्लेशमें दुःख करनेवाला और लघुजीवी होता है ।।८।।

भवति ना सुभगस्तनुजः सदा शुभसहोदरमित्रपराक्रमी ।
दशमप नवमस्थलगे नरः सततसत्यवचा वसुशालितः ।।९।।

जो कर्मेश नवम हो तो वह मनुष्य सुंदर शरीर, सहोदर मित्रोंसे युक्त पराक्रमी होता है, वह निरन्तर सत्यवचन बोलनेवाला तथा धनसे युक्त होता है।।९।।

जननिसौख्यकरः शुभदः शुभो भवति मातृकुलेषु रतः सुधीः ।
अतिपटुः प्रबलो दशमाधिपे स्वगृहगे नृपमानधनान्वितः ।।१०।।

जो कर्मेश दशमस्थानमें प्राप्त हो तो वह मनुष्य माताको सुख दायक शुभ, मातृकुलमें प्रीति करनेवाला बुद्धिमान् होता है, अतिचतुर और बलिष्ठ हो, अपने घरका हो तो राजासे मान और धनकी प्राप्तिवाला होता है ।।१०।।

विजयलाभयुतः प्रमदान्वितः परपराजयतो वसुलाभवान् ।
सुतसुतानुगतो भवगे गृहे दशमपे बहुभृत्ययुतो नरः ।।११।।

जो कर्मेश ग्यारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष विजयलाभसे युक्त, स्त्रीमान्, दूसरेका पराजय करनेसे धनकी प्राप्ति तथा पुत्र कन्या और भृत्योंसे युक्त होता है ।।११।।

नृपतिकर्मकरो निजवीर्ययुग्जननिसौख्यविवर्जितवक्रधीः ।
दशमपे व्ययगे परदेशवान्व्ययपरश्च तथा सुभगः स्वयम् ॥१२॥

जो वारहवें कर्मेश हो तो वह पुरुष अपने पराक्रमसे नृपतिके समान कर्म करे, माताके सुखसे रहित, कुटिलवुद्धि, परदेशमें रहनेवाला, खर्चीला और सुभग होता है ॥१२॥

इति दशमाधिपफलम् ।

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

कर्मसद्मनि रवेर्यदि दृष्टिः कर्मसिद्धिसहितः स नरः स्यात् ।
आद्य एव वयसि म्रियतेऽम्बिका स्वीयसद्मनि तथोच्चगते सुखम् ॥१॥

सूर्यदृष्टिफलम्

जो कर्म स्थानमें सूर्यकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य सदा कर्मोंकी सिद्धिसे युक्त होता है आदि अवस्थामें माताका मरण हो, यदि अपनी राशि वा उच्चका हो तो सुख मिले ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

कर्मसद्मनि सतीन्दुवीक्षिते स्याच्चतुष्पदकुलोपजीवकः ।
पुत्रदारधनसौख्यदो नृणां पितृबन्धुसुखधर्मवर्जितः ॥२॥

जो कर्मभावमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो वह मनुष्य चौपायोंके कर्मसे जीविका करे उस मनुष्यको पुत्र, स्त्री, धनका सुख, पिता वंधुका सुख हो, धर्मसे हीन होता है ॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

कर्मभावभवने क्षके कुजे सर्वसिद्धिसमुपस्थितिः सुखम् ।
आत्मविक्रमदशागमे नृणां जायते खलु महोदयो नरः ॥३॥

जो कर्मभावको मंगल देखता हो तो वह मनुष्य सव सिद्धियोंसे युक्त सुखी, पराक्रमी, श्रेष्ठ प्रतापी हो अपनी दशामें भाग्योदयसे युक्त करता है ॥३॥

वुधदृष्टिफलम्

दशमभावगृहे बुधवीक्षिते कर्मजीविकविताकरो नरः ।
राजमान्यनृपपूजितः सदा सौख्यदः पितृधनान्वितोद्यमी ॥४॥

जो कर्मस्थानको बुध देखता हो तो वह पुरुष कर्मजीवी, कविता करनेवाला, पण्डित, राजमान्य, नृपपूजित सदा सुख देनेवाला, पिताके धनसे युक्त और उद्यमी होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

कर्मसद्मनि सुरेज्यवीक्षिते कर्मसिद्धिरथराजमंदिरे ।
पुत्रदानधनवर्जितः सुखी दिव्यहर्म्य सुखपूर्वजाधिकः ॥५॥

जो कर्म स्थानको गुरु देखता हो तो वह पुरुष राजमंदिरसे अवश्य कर्मसिद्धिको प्राप्त हो, पुत्र दान धनसे रहित, सुखी, दिव्य महलमें रहनेवाला, पूर्वजोंसे अधिक सुख पावे ॥५॥

भृगुदृष्टिफलम्

कर्मसद्मनि भृगुप्रतिवीक्षिते जीविका निजपुरे नृपालये ।
उत्तमाङ्गपरिपीडितो जनः पु बन्धुसुखमद्भुतं सदा ॥६॥

कर्मस्थानको यदि शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य अपने पुर वा राजमंदिरसे कर्मसिद्धिको प्राप्त हो, उत्तमांगसे पीडित, पुत्र वंधुका अद्भुत सुख पावे ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

दशमसद्मनि सौरिविलोकिते पितृविनाश करो हि नरस्य तु ।
प्रतनुमातृसुखं न च जीवति यदपि जीवति भाग्ययुतो नरः ॥७॥

दशम भावको यदि शनि देखता हो तो उस मनुष्यके पिताका नाश करता है माताका थोडा सुख हो, अल्प जीवन हो यदि जीवे तो भाग्यवान् होता है ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

सिंहीसुतः कर्मगृहं च पश्यति कर्मसिद्धिमतुलां करोति च ।
बाल्यभावसमये पितुर्मृतिर्मातृसौख्यमपि चाल्पमेव हि ॥८॥

यदि राहुकी दृष्टि दशम घरमें हो तो वह मनुष्य अत्यन्त कर्मसिद्धि करता है वालभावमें ही पिताका मरण हो, मातासे थोड़ा सुख होता है ॥८॥

इति दृष्टिफलम् ।

अथ वर्षफलम्

एकोनविंशति वियोगमिनोऽम्बरस्थश्चन्द्रस्त्रिवेदधनकृत् क्षितिजो भवर्षे । शस्त्राद्भयं विदि हि गोकुशरद्धनं च जीवोऽर्क के धनमथो भृगुजोऽत्र सौख्यम् ॥१॥

शनिराहुकेतुभिः शस्त्रभयं चास्ति ॥२॥

सूर्यदशा १९ वर्ष वियोग करे, चन्द्रमा ४३ वर्ष धनकी प्राप्ति करे, मंगल २७ वर्ष शस्त्रसे भय, बुध १९ वर्ष धन प्राप्ति, गुरु १२ वर्ष धन प्राप्ति, शुक्र १२ वर्ष सुखकी प्राप्ति, शनि राहु केतु २७ वर्ष शस्त्रभय करते हैं ॥१॥२॥

अथ विचार :

तनोः सकाशाद्दशमे शशाङ्के वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ।
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥१॥

जिसके लग्नसे दशम स्थानमें चन्द्रमा हो उस पुरुषकी नित्य वृत्ति हो अनेक कलाओंमें कुशलता, वाग्विलास, सब प्रकार उद्यम और साहसयुक्त कर्मोंके करनेसे नित्य जीविका होती है ॥१॥

तनोः सकाशाद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवितं तस्य खगस्य वृत्त्या ।
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥२॥

जन्मलग्नसे दशमस्थानमें बलिष्ठ ग्रह हो तो उस ग्रहकी वृत्तिसे मनुष्य का जीवन हो अथवा बलवान् वर्गपतिकी वृत्तिसे उसकी दशामें उसका जीवन होवे ॥२॥

दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात् ।
सत्त्वाधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमङ्गे मनसः प्रमोदः ॥३॥

यदि लग्न वा चन्द्रमासे दशमस्थानमें सूर्य स्थित हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकारके उद्यमोंसे द्रव्यकी प्राप्ति करता है तथा बलकी अधिकता, मनुष्योंका अधिपतित्व, अंगमें पुष्टता और मनमें आनंद होता है ॥३॥

लग्नेन्दुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसक्रौर्यनिषादवृत्तिः ।
नूनं नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥४॥

लग्नसे वा चन्द्रमासे कर्म स्थानमें मंगल हो तो वह मनुष्य साहसी क्रूरकर्मा, निषादोंकीसी वृत्ति करे तथा विषयोंमें आसक्त और दूर निवास करनेवाला होता है ॥४॥

लग्नेन्दुतः कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् ।
शिल्पेऽभ्यासः साहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवनं मानवानाम् ॥५॥

लग्न वा चन्द्रमासे कर्मस्थानमें बुध स्थित हो तो उस मनुष्यको द्रव्यकी प्राप्ति और बहुत पुरुषोंका स्वामी हो, शिल्पविद्यामें अभ्यास करनेवाला, सब कार्योंमें साहसी, विद्वानोंकी वृत्तिसे जीविका करनेवाला होता है ॥५॥

विलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यदा स्यात् ।
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥६॥

लग्नसे अथवा चन्द्रमासे वृहस्पति यदि दशम भावमें हो तो उस पुरुषोंको विचित्र वृत्तिसे अनेक प्रकारके धनकी प्राप्ति और राजासे गौरव होता है ॥६॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो
नानाशास्त्र कलाविलासविलसद्वृत्त्यादिशेज्जीवनम् ।
दाने साधुमतिं जयं विनयतां कामं धनाभ्यागमं मानं
मानवनायकादविरलं शीलं विशालं यशः ॥७॥

होरासे चन्द्रमासे शुक्र यदि दशमस्थानमें हो तो वह पुरुष अनेक शास्त्र कला विलास वृत्तिसे जीवन करनेवाला, दानमें श्रेष्ठमति, जय, नम्रता, यथेष्ट धनकी प्राप्ति, राजासे प्रतिष्ठा पानेवाला, उत्तम शीलसे युक्त और विशाल यशवाला होवे ॥७॥

होरायाश्च निशाकराद्रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितो
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ।
खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चिन्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥८॥

होरासे चन्द्रमासे शनैश्चर दशम भावमें स्थित हो तो आजीविकाकी हीनता तथा शरीरमें कृशता हो, दुःख हो, विवादका भय हो, धन और धान्यकी हीनता हो और मानसिक चिन्ताओंके उद्वेगसे चपल हो तथा शील निर्मल न हो ॥८॥

सूर्यादिभिर्व्योमखगैर्विलग्नादिन्दोः स्वापाके क्रमशो विकल्प्या ।
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ॥९॥

लग्न वा चन्द्रमासे दशमस्थानमें सूर्यादि सात ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह स्थित हो तो उस मनुष्यको क्रमसे पिता, माता, शत्रु, मित्र, भ्राता, स्त्री और भृत्यसे अपनी २ दशामें अर्थकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥९॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशे पतेस्तु वृत्त्या परिकल्पनीयम् ।
सदौषधोर्णादितृणैः सुवर्णादिवामणिवृत्तिर्विधिविदध्यात् ॥१०॥

यदि लग्न और चन्द्रमासे कोई ग्रह दशम न हो तो लग्न चन्द्र और सूर्यसे दशमस्थानका स्वामी जिस नवमांशमें हो उस नवमांशका स्वामी जो ग्रह है उसके तुल्य वृत्ति कहना अर्थात् लग्न चन्द्र और सूर्य इनसे दशम-स्थानका स्वामी यदि सूर्यके नवमांशमें हो तो श्रेष्ठ औषध, ऊन, तृण और सुवर्ण आदिसे उस मनुष्यकी आजीविका होती है ॥१०॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृशिक्रियादेः ।
कुजोऽग्निसात्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः ॥११॥

यदि चन्द्रमाके नवमांशमें हो तो उस मनुष्यकी स्त्रीके संबंधसे और जलाशयसे उत्पन्न शंख मोती आदिसे तथा खेती आदिके कर्मसे और मंगलके नवांशमें हो तो अग्निकर्म साहस धातु (चांदी, सोना आदि) और शस्त्रकर्मसे, बुध हो तो काव्यकलासमूहसे जीविका होती है ॥११॥

जीवो द्विजन्माकरदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ।
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥१२॥

यदि वृहस्पति के नवमांश में हो तो उस पुरुषकी ब्राह्मण, खान और देवताओंके धर्मसे वृत्ति होती है और शुक्रके नवमांशमें हो तो महिषी अदिसे तथा चांदी और रत्नोंसे जीविका होवे, यदि शनैश्चरके नवामांशमें हो तो नीच कर्मोंसे जीविका होती है ॥१२॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्तते ।
तत्तुल्यकर्मणा वृत्ति निर्दिशन्ति मनीषिणः ॥१३॥

दशमभावका स्वामी जिसके नवांशकमें हो उसीके तुल्य कर्मोंसे अपनी आजीविका करता है ऐसा बुद्धिमान् कहते हैं ॥१३॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः ।
तुङ्गे त्रिकोणे स्वगृहे पतङ्गे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥१४॥

जो पूर्वोक्त योगकारक ग्रह मित्र और शत्रुके घरमें स्थित हों तो उनसे वैसेही अर्थकी कल्पना करनी और सूर्य उच्च स्वक्षेत्र वा अपने मूल-त्रिकोणमें हो तो वह मनुष्य निज बाहुवलसे धनकी प्राप्ति करता है ॥१४॥

लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्भूधनसौख्यमुच्चैः ।
उदीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुसारात्परिचिन्तनीयम् ॥१५॥

जो लग्न धन और लाभ स्थानमें बलयुक्त शुभग्रह प्राप्त हो तो भूवनकी प्राप्ति होवे ऐसा पूर्व मुनिजनोंने कहा है बलके अनुसार सब ग्रहोंसे वस्तुओंका विचार करना चाहिये ॥१५॥

इति दशमभावविवरणं समाप्तम् ।

अथैकादशभावफलम्

अथैकादश लाभभवनममुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं न वा ।
स्वामिना दृष्टं युतं न वाऽन्यैश्शुभाशुभैर्ग्रहैर्दृष्टं व वेति ॥

ग्यारहवां लाभस्थान है उसमें भी देवता ग्रह स्वामीकी दृष्टि अदृष्टि तथा शुभाशुभ ग्रहोंका योग पूर्ववत् देखे ॥

तत्र विलोकनीयानि

गजाश्वहेमाम्बररत्नजातमान्दोलिकामङ्गलमण्डलानि ।
लाभः किलास्मिन्नखिलैर्विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः ॥१॥

हाथी घोड़ा सुवर्ण वस्त्र रत्न सवारी मंगल मण्डल और लाभ यह सब कुछ विद्वानोंको ग्यारहवें घरसे विचारना चाहिये ॥१॥

तत्रादौ लग्नफलम्

लाभाश्रिते सत्यथ मेषराशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति लाभम् ।
तथा नराणां नृपसेवया च देशांतराराधितसत्प्रभुत्वम् ॥१॥

जो ग्यारहवें स्थानमें मेष लग्न हो तो उस पुरुषको चौपायोंसे लाभ हो तथा राजसेवा और देशांतरोंसे प्रभुत्वकी प्राप्ति और धन मिले ॥१॥

आयस्थिते वै वृषभे प्रलाभो भवेन्मनुष्यस्य विशिष्टजातः ।
स्त्रीणां सकाशादथ सज्जनानां कुसीदतोऽग्र्यात्क्षितितस्तथैव ॥२॥

जो ग्यारहवें स्थानमें वृष लग्न हो तो उस मनुष्यको श्रेष्ठ लाभ हो स्त्रियोंसे वा सज्जनोंसे व्याज से अग्रजसे और क्षितिसे लाभ हो तथा धर्म करनेवाला होता है ॥२॥

तृतीयराशौ कुरुतेऽतिलाभं लाभाश्रिते स्त्रीदयितं सदैव ।
वस्त्रार्थमुख्यासनयानजातं सदा नराणां विविधप्रसिद्धः ॥३॥

जो एकादशस्थानमें मिथुनराशि हो तो उस मनुष्यको लाभ हो, स्त्री प्यारी हो, वस्त्र मुख्यासन यानकी प्राप्ति और अनेक प्रसिद्धि होती हैं ॥३॥

लाभो भवेल्लाभगते च राशौ नृणां चतुर्थे च वराङ्गनानाम् ।
सेवाकृषिभ्यां जनितः प्रभूतशास्त्रेण वा साधुजनोपकारात् ॥४॥

जो ग्यारहवें स्थानमें कर्क हो तो उस मनुष्यको स्त्रीपक्षसे लाभ हो तथा सेवा कृषि शास्त्र साधुजनोंसे उपकारसे लाभ होता है ॥४॥

लाभाश्रिते पञ्चमके च राशौ भवेन्मनुष्यस्य च गर्हणाभिः ।
नानाजनानां वधबंधनैश्च व्यायामदेशान्तरसंश्रयाच्च ॥५॥

जो ग्यारहवें स्थानमें सिंह हो तो उस मनुष्यको गर्हित कर्म, अनेक मनुष्योंके वध बंधन व्यायाम तथा अन्य देशके आश्रयसे लाभ होता है ॥५॥

कन्यात्मके लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं विविधैरुपायैः ।
छलेन पापेन सुभाषणेन परस्परैः शून्यकृतैर्विकारैः ॥६॥

जो ग्यारहवें कन्या लग्न हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकारके उपायोंसे लाभको प्राप्त करे, छल पाप सुभाषण वा परस्पर शून्य विकारोंसे धन संचय करे ।६।

तुलाधरे लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं वनजैर्विचित्रैः ।
सुसाधुसेवाविनयेन नित्यं सुसंस्तुतं मुख्यतया प्रभुत्वम् ॥७॥

जो ग्यारहवें तुला लग्न हो तो उस मनुष्यको अनेक प्रकारके वनमें उत्पन्न पदार्थोंसे लाभ हो, अच्छी साधुसेवा, विनय, स्तुति और मुख्य प्रभुपनको प्राप्त होता है ७

लाभाश्रिते चाष्टमके हि राशौ प्राप्नोति लाभं मनुजोऽतिमुख्यम् ।
शास्त्रागमाभ्यां विनयेन पुंसां नित्यं विवेकेन तथाऽद्भुतेन ॥८॥

जो लाभमें वृश्चिक राशि हो तो वह मनुष्य मुख्य लाभको प्राप्त है, वेदशास्त्र विनय तथा नित्यज्ञानसे भी धन प्राप्त करता है ॥८॥

लाभाश्रिते चैव धनुर्द्धरे च नृपाद्धि मानं भजते मनुष्यः ।
सुसेवया वा निजपौरुषेण मनुष्यकाराधनतोऽश्वतोऽपि ॥९॥

जो लाभमें धनुष लग्न हो तो उस मनुष्यको राजाके स्थानसे सुसेवासे अपने पुरुषार्थसे वा दूसरे मनुष्यकी आराधनासे वा अश्वकृत्यसे धनकी प्राप्ति होती है ।९।

लाभाश्रिते वै मकरेऽर्थलाभो भवेन्नराणां जलयानयोगात् ।
विदेशवासान्नृपसेवया च व्ययात्मको भूरितरः सदैव ॥१०॥

जो ग्यारहवें मकर लग्न हो तो मनुष्यको जलयान अर्थात् जहाज नौका आदिसे तथा विदेशमें वास वा राजसेवासे लाभ हो और वह सदा अनेक व्ययकार्य करे १०

आयस्थिते कुम्भधरे च लाभो भवेन्नराणां जलयानयोगात् ।
त्यागेन धर्मेण पराक्रमेण विद्याप्रभावात्सुसमागमेन ॥११॥

जो ग्यारहवें कुंभ लग्न हो तो जहाज नौकासे उस मनुष्यको लाभ हो त्याग धर्म पराक्रम विद्याके प्रभाव और अच्छे समागमसे धन मिले ॥११॥

लाभाश्रिते चान्तिमगे च राशौ प्राप्नोति लाभं विविधं मनुष्यः ।
मित्रोद्भवं पार्थिवमानजातं विचित्रवाक्यैः प्रणयेन नित्यम् ॥१२॥

जो ग्यारहवें मीन लग्न हो तो उस मनुष्यको अनेक प्रकारके लाभकी प्राप्ति हो, मित्रसे वा राजाके सत्कारसे, विचित्र वाक्य और प्रणयसे लाभ होता है ॥१२॥

इति लाभभावे लग्नफलम् ॥

अथ ग्रहफलम्

सूर्यफलम्

गीतिप्रीतिं चारुकर्मप्रवृत्तिं शश्वत्कीर्तिं वित्तपूर्तिं नितान्तम् ।
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ॥१॥

जो ग्यारहवें सूर्य हो तो गानविद्यामें प्रीति, अच्छे कर्ममें प्रवृत्ति निरंतर कीर्ति और धनसे पूर्ण हो तथा राजासे नित्यही धनकी प्राप्ति करनेवाला होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

सन्माननानाधनवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ।
प्रसन्नता लाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥२॥

जो ग्यारहवें चन्द्रमा हो तो मनुष्यको आदर अनेक प्रकारके और वाहनकी प्राप्ति और कीर्ति अच्छे भोग तथा गुणोंकी प्राप्ति और प्रसन्नतासे युक्त होता है ॥२॥

भौमफलम्

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि ।
भूपप्रसादसुकुतूहलमङ्गलानि दद्यादवाप्तिभवने हि सदाऽवनेयः ॥३॥

जिसके मंगल ग्यारहवें हो वह मनुष्य तांबा, मूंगा, सोना, रक्त वस्त्र तथा सुंदर सवारीसे युक्त होता है और राजाकी प्रसन्नतासे श्रेष्ठ कौतुक मंगलोंकी प्राप्ति होती है ॥३॥

बुधफलम्

भोगासक्तोऽत्यन्तवित्तो विनीतो नित्यानन्दश्चारुशीलो बलिष्ठः ।
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नन्दने शीतभानोः ॥४॥

जो ग्यारहवें बुध हो तो वह पुरुष भोगमें आसक्त, अत्यन्त धनवान, नम्रस्वभाव, नित्यही आनन्दसे युक्त, सुशील, बलवान् और अनेक विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है ॥४॥

गुरुफलम्

सामर्थ्यमर्थागमनं च नूनं सद्रत्नवस्त्रोत्तमवाहनानि ।
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः ॥५॥

जो बृहस्पति ग्यारहवें स्थानमें हो तो उस पुरुषको बल अर्थकी प्राप्ति, सद्रत्न वस्त्र उत्तम वाहनकी प्राप्ति और राजाकी प्रसन्नतासे युक्त होता है ॥५॥

भृगुफलम्

सद्गीतनृत्यादिरतो नितान्तं नित्यं च वित्तागमनानि नूनम् ।
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥६॥

जो ग्यारहवें शुक्र हो तो वह पुरुष श्रेष्ठ गीत और नृत्यमें अत्यन्त प्रीति करनेवाला हो, धनकी प्राप्ति हो तथा सत्कर्म और धर्ममें चित्तकी वृत्ति होती है ॥६॥

शनिफलम्

कृष्णाभानामिन्द्रनीलादिकानां नाना चञ्चद्धस्तुदन्तावलानाम् ।
प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां प्रकृष्टां प्राप्तिस्थाने वर्त्तमानोऽर्कसूनुः ॥७॥

जो शनि ग्यारहवें हो तो वह मनुष्य इंद्रनीलमणि तथा और भी हाथीदांतादि अनेक प्रकारके वस्तुओंकी प्राप्तिको करता है ॥७॥

राहुफलम्

लभेद्वाक्यतोऽर्थं चरेत्किंकरेण व्रजेत्कि च देशं लभेत प्रतिष्ठाम् ।
द्वयोःपक्षयोर्विश्रुतः सत्प्रजावान्नताः शत्रवः स्युस्तमो लाभगश्चेत् ॥८

जो राहु ग्यारहवें हो तो उस मनुष्यको अच्छे वचनोंसे लाभ हो, सेवकों सहित देशांतरयात्रामें प्रतिष्ठा हो, दोनों पक्षोंमें प्रसिद्ध हो, उत्तम प्रजासे युक्त हो और शत्रुगण उससे दबे हुए रहें ॥८॥

केतुफलम्

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोऽपि यस्य ।
भवेदौदरार्तिः सुता दुर्भगाश्च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥९॥

जो ग्यारहवें केतु हो तो वह पुरुष अच्छा भाषण करनेवाला, सुंदर विद्यावान्, दर्शनीयमूर्ति, श्रेष्ठ भोगोंसे युक्त, तेजस्वी और सुंदर वस्त्रों सहित होता है तथा उदरमें पीडा, अभागी सन्तानवाला, सब प्रकारके लाभोंसे युक्त होता है ॥९॥ इति ग्रहफलम् ॥

अथ लाभभवनेशफलम्

भवति ना सुभगः स्वजनप्रियः कलित एव वदान्य कुपुत्रवान् ।
भवपतौ तनुगे च सुकृत्तमो नृपतितो धनलाभकरः सदा ॥१॥

जो लाभेश तनु स्थानमें प्राप्त हो तो वह पुरुष सुभग, स्वजनप्रिय बहुत दान करनेवाला, पुत्रवान् और राजासे धनप्राप्ति करनेवाला होता है ॥१॥

चपलजीवितमल्पसुखं तथा भवपतिर्धनभावयुतो यदि ।
खलखगे त्वतितस्करतायुतः शुभखगे धनवानतिजीवति ॥२॥

यदि लाभेश धनस्थानमें प्राप्त हो तो उस पुरुषका चपल जीवन, और थोडा सुख होता है, क्रूर ग्रह हो तो तस्कर और शुभग्रह हो तो धनवान् होकर दीर्घजीवी होता है ॥२॥

सहजवित्तयुतश्च सुबान्धवः सहजवत्सल एव नरः सदा ।
सहजगे भवभावपतौ शुचिः स्वजनमित्रजनातिलाभदः ॥३॥

जो तीसरे स्थानमें लाभेश हो तो वह पुरुष भाइयोंके धनसे युक्त, बंधुओंसे सहित भाइयोंका प्रिय, पवित्र तथा स्वजन मित्रजनोंको लाभ देनेवाला होता है ॥३॥

अमितजीवनयुक् पितृपंक्तियुक्तनयकर्मरतः सुभगः शुभः ।
सुकृतकर्मवशादतिलाभवान्सुखगते भवभावपतौ भवेत् ॥४॥

जो लाभेश चौथे स्थानमें हो तो वह पुरुष दीर्घजीवी, पितासे युक्त, पुत्रके कर्ममें प्रीति करनेवाला, सुभग सुंदर और पुण्य कर्मवशसे अति लाभवाला होता है ॥४॥

जनकसंयुतमातृजनप्रियः सुतगते भवभावपतौ नरः ।
शुभखगैर्भितभुक्सुखसंयुतः खलखगैर्विपरीतफलं लभेत् ॥५॥

जो लाभेश पंचम हो तो वह पुरुष माता पिताका प्यारा होता है शुभ ग्रह हो तो थोड़ा भोजन करनेवाला सुखी होता है, क्रूर ग्रह हो तो इससे विपरीत फल कहना ॥५॥

रिपुयुतोऽपि हि दीर्घगदी कृशश्चतुरताचतुरः सह सम्मतः ।
रिपुगते भवपे च विदेशगो मरणमेव च तस्करजं भयम् ॥६॥

जो लाभेश छठे हो तो वह पुरुष शत्रुओंसे युक्त, अधिक रोगी, दुर्बल शरीर, चतुरतामें भी चतुर, मनुष्योंसे आदरको प्राप्त हो और विदेशगामी हो तथा विदेशमें मरण वा तस्करसे भय होता है ॥६॥

प्रकृतिजोग्रतनुर्बहुसम्पदो बहुलजीवियुतं बहुशीलयुक् ।
खलखगैर्बहुरोगयुतो नरः शुभखगैर्बहुसौख्यसमन्वितः ॥७॥

जो लाभेश सप्तम हो तो वह पुरुष स्वभावसेही उग्र शरीर, बहुत संपत्तिमान् दीर्घजीवी शीलवान् होता है, क्रूर ग्रह हो तो बहुत रोगसे युक्त हो, शुभ ग्रहोंसे सुख युक्त होता है ॥७॥

बहुलरोगयुतश्च तथा शुभः खचर एवमिदं ददते फलम् ।
भवपतौ मृतिगे रिपुवृन्दतो विपुलवैरकरश्च नरः सदा ॥८॥

जो लाभेश अष्टम हो और शुभ ग्रह हो तो उस पुरुषको अनेक प्रकारके रोग करता है तथा शत्रुओंसे वैर करनेवाला होता है ॥८॥

एकादशेशः सुकृते स्थितश्चेद्बहुश्रुतः शास्त्रविशारदश्च ।
धर्मप्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बंधुव्रजवर्जितश्च ॥९॥

यदि लाभेश नवम स्थानमें हो तो वह पुरुष प्रसिद्ध और बहुत प्रकारसे वेदशास्त्रके विचारमें चतुर हो, धर्ममें प्रसिद्ध, देव गुरुका भक्त हो, क्रूरग्रह हो तो बंधुजनोंसे रहित होता है ॥९॥

पितरि वैरयुतो जननीप्रियो बहुलसद्धनकीर्तियुतो नरः ।
जननिपालनकर्मरतः सदा भवपतिर्दशमस्थलगो यदा ॥१०॥

जो लाभेश दशम हो तो वह मनुष्य पिताका विरोधी, माताका प्रिय, बहुतसे धन और यशसे पूर्ण, मातृपालन कर्ममें तत्पर होता है ॥१०॥

बहुलजीवितमुग्धजनान्वितः शुभवपुः खलु पुष्टियुतः सदा ।
अतिसुरूपसुवाहनवस्त्रयुक्स्वगृहगे भवभावपतौ नरः ॥११॥

जो लाभेश ग्यारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष बहूजीवी, मुग्धजनोंसे युक्त; सुंदरशरीर पुष्टियुक्त, अति स्वरूपवान् सुंदर वाहन वस्त्रसे युक्त होता है ॥११॥

भवपतौ व्ययगे च खलो नरश्चपलजीवितवित्तयुतो नरः।
भवति मानयुतो बहुकष्टदः स्थितधनो बहुदुष्टमतिः खलः ॥१२॥

जो लाभेश बारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष खल चपलजीवित थोड़े द्रव्यवाला होता है, मानसे युक्त, बहुत कष्ट देनेवाला, धनवान्, दुष्टमति होता है ॥१२॥ इति लाभभवनेशफलम्।

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

लाभसद्मनि रवीक्षिते सति प्राप्यते सकलवस्तु निश्चितम्।
आधियुक्त सुतनाशकृत्सदा कर्मजीवकसुबुद्धिमान्सदा ॥१॥

जो लाभस्थानमें सूर्यकी दृष्टि हो तो उस पुरुषको सब वस्तुकी प्राप्ति हो, आधि व्याधिसे युक्त, सुतनाशकारक, कर्मजीवी, सुबुद्धिमान् होता है ॥१॥

चन्द्रदृष्टिफलम्

लाभलये स्याद्यदि चन्द्रदृष्टिर्लाभार्थदो व्याधिविनाशनं च।
चतुष्पदानां कनकस्य वृद्धिः सर्वत्र लाभश्च न संशयोऽत्र ॥२॥

जो ग्यारहवें स्थानमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो उस पुरुषको धनकी प्राप्ति और रोगका नाश हो, चौपायोंकी और सुवर्णकी वृद्धि तथा सर्वत्र लाभ होता है इसमें सन्देह नहीं है ॥२॥

भौमदृष्टिफलम्

सत्यायभावे कुजवीक्षिते च आयुर्विवृद्धिः स्त्रिया गर्भनाशः।
वृद्धिकायसमये तृतीयके पुत्रसौख्यमपि चतुष्पदात्सुखम् ॥३॥

जो ग्यारहवें मंगलकी दृष्टि हो तो उस पुरुषकी आयुकी वृद्धि और स्त्रीका गर्भनाश हो तथा शरीरकी वृद्धि पुत्र और चौपायोंसे सुख होता है ॥३॥

बुधदृष्टिफलम्

लाभालये चन्द्रजवीक्षिते सति भाग्यवांश्च सकलार्थसौख्यभाक्।
बुद्धिशास्त्रनिपुणोऽतिविश्रुतः पुत्रिका भवन्ति तस्य पुष्कलाः ॥४॥

जो ग्यारहवें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो वह पुरुष भाग्यवान् संपूर्ण अर्थ और सुखका भोगी होता है, बुद्धिमान्, शास्त्रमें पंडित और प्रसिद्ध हो तथा अनेक पुत्रियोंसे युक्त होता है ॥४॥

गुरुदृष्टिफलम्

गुरोर्दृष्टिः पूर्णतरायभावे आयुश्च पूर्णश्च नरः सदा स्यात् ।
पुत्रदारधनसौख्यतः सुखं व्याधिहीनमपि कान्तिमाञ्जयी ॥५॥

जो गुरु पूर्ण दृष्टिसे ग्यारहवें स्थानको देखता हो तो वह मनुष्य पूर्ण आयुवाला हो, पुत्र स्त्रीधनसे सुख हो, व्याधिहीन, कांतिमान् जयशील होता है ।५।

भृगुदृष्टिफलम्

लाभसद्मनि च शुक्रवीक्षिते लाभवृद्धिसुखवित्तसंयुतः ।
ग्रामणीर्निजजनादिपालकः पूर्ववृत्तिपरिपालने रतः ॥६॥

जो ग्यारहवें स्थानको शुक्र देखता हो तो उस पुरुषको लाभ वृद्धि सुख और धनकी प्राप्ति हो, ग्रामाधिपति, अपने जनोंका पालक तथा पूर्व वृत्तिके परिपालनमें रत होता है ॥६॥

शनिदृष्टिफलम्

यदायभावे रविसूनुदृष्टे लाभस्तदा दुष्टखलाद्भवेच्च ।
पुत्रतश्च सुखमल्पकं भवेद्धान्यलाभयुगथापि पण्डितः। ।७॥

जो ग्यारहवें स्थानको शनि देखता हो तो उस पुरुषको अति दुष्टसे लाभ हो, पुत्रसे थोडा सुख, धान्य लाभ और पंडित भी होता है ॥७॥

राहुदृष्टिफलम्

आयसद्म यदि राहुवीक्षितमायुपूरणकरं नरस्य हि ।
द्रव्यलाभमथ भूपवर्गतः सुखमात्मवृद्धिनिरतो नरः सदा ॥८॥

जो ग्यारहवें स्थानको राहु देखता हो तो उस मनुष्यकी आयु पूर्ण होती है, द्रव्य लाभ, राजोंके वर्गसे सुख और सदा अपनी उन्नतिमें तत्पर होता है ॥८॥ इति दृष्टिफलम् ।

अथ वर्षसंख्या

लाभे रविर्जिनसमामितलाभमिन्दौ भूपाच्च लाभमसृजो जिनवर्षलक्ष्मीम् ज्ञः पञ्चवेदधनमीज्य इनाब्दलक्ष्मीम् । शुक्रः करोति धनमर्किफलं कुजोक्तम् ॥१॥ शनिराहुकेतुभिर्जिनवर्षलाभः । इति लाभभवनम् ॥

सूर्यके २४ वर्ष लाभ हो, चन्द्रमाके १६ वर्ष लाभ हो, मंगलके २४ वर्ष लक्ष्मी प्राप्ति, बुध ४५ धनप्राप्ति, गुरु १२ वर्ष लक्ष्मी लाभ, शुक्र १२ वर्ष धनलाभ, शनि राहु केतु २४ वर्ष धनलाभ करते हैं ।।१।।

इति लाभभवनं संपूर्णम्

अथ भावविचार :

सूर्येण युक्तोऽथ विलोकितो वा लाभालयस्तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात् ।
भूपालतश्चौरकुलादथो वा चतुष्पदाद्वा बहुधा धनाप्तिः ।।१।।

जो ग्यारहवां घर सूर्यसे युक्त हो वा सूर्यकी दृष्टि हो अथवा सूर्यका षडवर्ग हो तो उस पुरुषको राजासे चोरकुलसे और चौपायोंसे अनेक प्रकारसे धनकी प्राप्ति होती है ।।१।।

चन्द्रेण युक्तः प्रविलोकितो वा लाभालयश्चन्द्रगणाश्रितश्चेत् ।
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत् क्षीणतरे विनाशः ।।२।।

जो ग्यारहवां स्थान चन्द्रमासे युक्त हो वा चन्द्रमाकी दृष्टि हो वा चन्द्रमा षड्वर्गमें हो तो उस मनुष्यको जलाशय, स्त्री, हाथी और घोडोंकी वृद्धि हो और यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो विनाश होता है ।।२।।

लाभालये मङ्गलयुक्तदृष्टे प्रभूतभूषामणिहेमवृद्धिः ।
विचित्रयात्रा बहुसाहसैः स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ।।३।।

जो ग्यारहवें मंगलकी दृष्टि वा योग हो तो उस मनुष्यको अनेक भूषण, मणि, सुवर्णवृद्धि और अनेक कलाओंमें निपुण बुद्धिसे विचित्र यात्रा तथा बहुत साहससे युक्त होता है ।।३।।

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजश्रितोत्कृष्टकृशो नरः स्यात् ।
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्ता लाभे गुरोर्वर्गयुतेक्षणं चेत् ।।४।।

जो ग्यारहवें गुरु हो या गुरुकी दृष्टि हो वा गुरुका वर्ग हो तो वह पुरुष यज्ञकर्ममें रत, सज्जनोंके साथ समागम करनेवाला, राजाश्रयवाला उत्कृष्ट तथा शरीरसे कृश और अधिकतर सुवर्णके द्रव्योंसे युक्त होता है ।।४।।

लाभालये भार्गववर्गजाते युक्तेक्षिते वा यदि भार्गवेण ।
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्वलब्धिः ।।५।।

जो ग्यारहवें भावमें शुक्रका वर्ग हो अथवा शुक्रका योग वा दृष्टि हो तो उस मनुष्यको वेश्याजनोंसे वा गमनागमनसे उत्तम चांदी और मोती आदि धनकी प्राप्ति होती है ।।५।।

लाभवेश्म शनिवीक्षितयुक्तः तद्गणेन सहितं यदि पुंसाम् ।
नीलगोमहिषहस्तिहयाढयो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रः ॥६॥

जो ग्यारहवें भावमें शनिका योग वा दृष्टि हो वा शनिका वर्ग हो तो उस मनुष्यको नील गौ, महिषी, हाथी घोडोंका लाभ हो तथा ग्राम समूह पुरमें गुरुतासे युक्त होता है ॥६॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे शुभैश्चेद्वर्गे शुभानां समवस्थितेऽपि ।
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन्सर्वग्रहैरेव निरीक्षमाणे ॥७॥

यदि लाभभाव शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा शुभग्रहोंके षड् वर्गमें हो तो उस मनुष्यको अनेक प्रकारसे लाभ हो और सब ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो बहुधा लाभ होता है ॥७॥

इत्येकादशभावविवरणं समाप्तम् ।

अथ द्वादशभावफलम्

द्वादशभावव्ययभवनममुकाख्यममुकदैवत्यममुकग्रहयुतं ।
स्वस्वामिदृष्टं न वाऽन्यैः सर्वग्रहैश्शुभाशुभैर्दृष्टं युतं न वेति ॥

बारहवें घरके विचारमें ग्रहप्राप्ति स्वामीकी दृष्टि शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि है वा नहीं पूर्ववत् विचार करे ॥

तत्र विलोकनीयानि

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो बन्धनमेव च ।
सर्वमेतव्द्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥१॥

हानि दान व्यय दण्ड बंधन यह सब बारहवें स्थानसे विचारना चाहिये।१॥

लग्नफलम्

मेषे व्ययस्थे स्यात्पुंसां व्ययश्च तनुपीडनम् ।
स्वप्नशीलो नरो नित्यं लाभयुक्छुभसंयुते ॥१॥

जो बारहवें स्थानमें मेषलग्न होवे तो उस पुरुषके द्रव्यका खर्च हो, शरीरमें पीड़ा हो, स्वप्न बहुत देखे और यदि शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो लाभ होता है ॥१॥

वृषे व्ययस्थे व्यय एव पुंसां भवेद्विचित्रो वरयोषितागमः ।
लाभो भवेत्तस्य सदैव पुंसां सुधातुवादे विबुधैश्च सङ्गः ॥२॥

जो वारहवें स्थानमें वृषलग्न हो तो उस मनुष्यके धनका खर्च हो,विचित्र स्त्रीकी प्राप्ति हो तथा धातुवादमें लाभ हो और ज्ञानी मनुष्योंका समागम होता है ॥२॥

तृतीयराशौ व्ययगे नराणां व्ययो भवेत्स्त्रीव्यसनात्मकैश्च ।
भूतोद्भवो वा सततं प्रभूतः कुशीलता पापजनाश्रयाच्च ॥३॥

जो मिथुन लग्न बारहवें हो तो उस पुरुषका स्त्रीव्यसनके कार्योंमें व्यय हो वा निरन्तर भूतोद्भव कृत्य करे तथा कुशीलता और पाप युक्त जनोंके आश्रयसे व्यय होता है ॥३॥

कर्के व्ययस्थे द्विजदेवतानां व्ययो भवेद्यज्ञसमुद्भवश्च ।
धर्मक्रियाभिर्विविधाभिरेव प्रशस्यते साधुजनेन लोके ॥४॥

जो वारहवें कर्कलग्न हो तो द्विज देवता और यज्ञादिके विषयमें व्यय हो, अनेक प्रकारकी धर्मक्रियासे युक्त लोकमें साधुजनोंसे प्रशंसा पावे ॥४॥

सिंहे व्ययस्थे तु भवेन्नराणामसद्व्ययो भूरितरः सदैव ।
रुगादिपीडा च कुकर्मसङ्गो विद्याव्ययः पार्थिव चौरता च ॥५॥

जो सिह लग्न वारहवें हो तो उस पुरुपका दुष्ट कर्मोंमें अधिक व्यय हो तथा रोगादिसे पीड़ा हो कुकर्ममें तत्पर रहे विद्यामें व्यय हो और राज-धनकी चोरी करनेमें प्रवृत्त होता है ॥५॥

कन्याभिधे चान्त्यगते व्ययश्च भवेन्मनुष्यस्य हि चाङ्गनोत्सवैः ।
विवाहमाङ्गल्यमखैर्विचित्रैः सत्रैः सभाभिर्बहुसाधुसंगात् ॥६॥

जो वारहवें कन्यालग्न हो तो वह पुरुष अंगनाओंके उत्सव विवाह, मंगल कार्य, यज्ञ, निरंतर अन्नादि दान और सभामें साधु समागमसे व्यय करनेवाला होता है ॥६॥

तुले व्ययस्थे सुरविप्रबन्धुश्रुतिस्मृतिभ्यश्च करो व्यवस्था ।
भवेन्नरोऽसौ नियमैर्यमैश्च सुतीर्थसेवाभिरिति प्रसिद्धः ॥७॥

जो बारहवें तुलालग्न हो तो वह पुरुष देवता, विप्र, बंधु, श्रुति और स्मृतिमें द्रव्य व्यय करे तथा यम नियम और तीर्थसेवामें व्यय करे ॥७॥

अलौ व्ययस्थे च भवेद्व्ययस्तु पुंसां प्रमादेन विडम्बनाभिः ।
कुमित्रसेवाजनिता सुनिन्दा धनव्ययश्चौरकृताधिकारात् ॥८॥

यदि वृश्चिक लग्न वारहवें हो तो वह पुरुष प्रमादसे वा दूसरे पुरुषोंके

वंचनसे धनका व्यय करे तथा कुमित्रसेवासे निन्दा हो और चोरोंके किये अधिकारसे उसका धन व्यय होता है ॥८॥

चापे व्ययस्थे बहुवञ्चनाभिर्व्ययो भवेत्पापजनप्रसङ्गात् ।
सेवाकृताद्वित्तधिया च पुंसां कृषिप्रसंगात्परवञ्चनाद्वा ॥९॥

जो बारहवें धनुपलग्न हो तो उस पुरुषका पापी जनोंके प्रसंगसे अनेक प्रकारकी वंचनाओंसे धनका व्यय हो और धनलाभार्थ की हुई सेवा तथा कृषिके प्रसंगसे वा दूसरोंकी वंचनासे धनका व्यय होता है ॥९॥

मृगे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययस्तु पानासवसस्यजातः ।
स्ववर्गपूजाजनितोऽन्यतस्तथा कृषिक्रियाभिश्चधनव्ययोव्यय ॥१०॥

जो बारहवें मकर लग्न हो तो वह पुरुप पान, आसव और अन्नमें व्यय करे अपने वर्गके सत्कारमें और खेतीके कार्यमें व्यय करे ॥१०॥

घटे व्ययस्थे सुरसिद्धविप्रतपस्विवंदिव्रजतो व्ययस्तु ।
पुंसां भवेत्साधुजनानुरोधाच्छस्त्रप्रदिष्टागतितश्च भूरि ॥११॥

जो कुंभलग्न बारहवें हो तो देवता सिद्ध ब्राह्मण तपस्वी और वंदी जनोंमें उस पुरुषका धन व्यय हो तथा साधुजनोंके अनुरोधसे शास्त्र कथित कार्यसे उसका धन व्यय होता है ॥११॥

मीने व्ययस्थे जलयानतो वा कुसङ्गमाद्वा प्रभवेद्व्ययश्च ।
पुंसां कुमित्रासनतोऽपि जातस्तथा विवादेन निरतरेण ॥१२॥

जो बारहवें मीन लग्न हो तो उस पुरुषका जलयान, दुष्टसंगति कुमित्रके साथ बैठनेसे तथा निरन्तर विवादमें व्यय होता है ॥१२॥

इति व्ययभावे लग्नफलम् ।

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यफलम्

तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं गतचित्तवृत्तिः ।
विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयाते कान्ते नलिन्याः फलमुक्तमार्यैः ॥१॥

जो बारहवें सूर्य हो तो उस मनुष्यके नेत्रोंमें न्यून तेज हो पिताके साथ गतचित्तवृत्ति और विरुद्ध बुद्धिसे युक्त होता है ॥१॥

चन्द्रफलम्

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ।
रोषावशः पूरुषाणां विशेषाच्छीतांशुश्चेद्द्वादशे वेश्मनिस्यात् ॥२॥

जिसके चन्द्रमा बारहवें हो तो वह मनुष्य मित्रोंके द्वारा सुंदर शीलसे रहित हो, नेत्रोंमें विकलता हो और वह शत्रुओंकी वृद्धिसे युक्त अत्यन्त क्रोधी होता है ॥२॥

भौमफलम्

स्वमित्रवैरं नयनातिबाधां क्रोधाभिभूतं विकलत्वमङ्गे ।
धनव्ययं बंधनमल्पतेजो व्ययस्थभौमो विदधाति नूनम् ॥३॥

जो बारहवें मङ्गल हो तो वह मनुष्य अपने मित्रोंसे वैर करे, नेत्रोंमें बाधा, क्रोधसे युक्त, अंगमें विकलता धनका व्यय बंधन और अल्पतेजसे युक्त होता है॥३॥

बुधफलम्

दयाविहीनः स्वजनैर्विभक्तः सत्कार्यदक्षो विजितारिपक्षः ।
धूर्तो नितान्तं मलिनो नरः स्याद्व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ ॥४॥

जो बारहवें बुध हो तो वह पुरुष दयासे हीन, अपने जनोंसे विभक्त, शुभ कार्यमें चतुर, शत्रुओंका जीतनेवाला, अत्यन्त धूर्त और मलीन होता है ॥४॥

गुरुफलम्

नानाचित्तोद्वेगसञ्जातकोपं पापात्मानं सालसंत्यक्तलज्जम् ।
बुद्धया हीनं मानवं मानहीनं वागीशोऽयं द्वादशस्थः करोति ॥५॥

जिसके बारहवें शुक्र हो तो वह पुरुष अनेक प्रकारके चित्तके उद्वेगोंसे उत्पन्न क्रोधसे युक्त, पापात्मा, आलसी, निर्लज्ज तथा बुद्धि और मानसे हीन होता है ॥५॥

भृगुफलम्

सन्त्यक्तसत्कर्मविधिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ।
दयालुतासत्यविवर्जितः स्यात्काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥६॥

जिसके बारहवें शुक्र हो तो वह मनुष्य शुभ कर्मोंके विधानका त्यागने वाला तथा मनुष्योंसे विरोध रखनेवाला, मनोभवके आराधनमें दत्तचित्त, दयालुता और सत्यसे रहित होता है ॥६॥

शनिफलम्

दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुरक्तः ।
नरोऽङ्गभङ्गोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ ॥७॥

जिसके जन्मकालमें बारहवें शनि हो तो वह पुरुष दयाहीन, धनहीन, खर्चसे दुःखी हो, सदा आलसी, नीच मनुष्योंमें अनुरागी तथा अंगोंके भंग होनेके कारण सर्व सौख्यसे रहित होता है ॥७॥

राहुफलम्

तमो द्वादशे विग्रहे संग्रहेऽपि प्रपातात्प्रपातोऽथ सञ्जायते हि। नरो भ्राम्यतीतस्ततो नार्थसिद्धिर्विरामे मनोवाञ्छितस्य प्रवृद्धिः ॥८॥

जो बारहवें राहु हो तो वह पुरुष संग्रहमें विग्रह करनेमें रत प्रपात (गिरनेके स्थान) पर्वतादिसे गिरनेवाला तथा इधर उधर भ्रमण करनेपर भी अर्थ सिद्धिसे रहित होता है और विराममें मनोवांछितकी वृद्धि होती है ॥८॥

केतुफलम्

शिखी रिष्फगश्चारुनेत्रः सुशिक्षः स्वयं राजतुल्यो व्ययं सत्करोति।
रिपोर्नाशनं मातुलान्नैव शर्म रुजा पीडचते वस्तिगुह्यं सदैव ॥९॥

जो केतु बारहवें हो तो वह पुरुष सुंदर नेत्र, शिक्षावान् राजोंकी तुल्य श्रेष्ठ व्यय करनेवाला हो, शत्रुका नाश हो मामाके पक्षसे सुख न हो और उसकी वस्ति गुह्यस्थान रोगसे सदा पीडित रहे ॥९॥

इति व्ययभावे ग्रहफलम्।

अथ व्ययभावेशफलम्

तनुगते व्ययभावपतौ नरः सुवचनः स्वसरूपविदेशगः।
खलजनानुरतश्च विवादयुग्युवतिभिः सहितोऽपि नपुंसकः ॥१॥

जो बारहवें स्थानका पति तनु स्थानमें हो तो वह पुरुष सुवचन-बोलनेवाला, स्वरूपवान्, विदेशगामी, खल पुरुषोंमें अनुरक्त, विवाद करने वाला, स्त्रियोंके सहित होकर भी नपुंसक होता है ॥१॥

कृपणता कटुवाग्धनभावगे व्ययपतौ विकलश्च विनष्टधीः।
धरणिजे विधनं नृपतस्करादपि च पापकरश्च चतुष्पदे ॥२॥

जो व्ययपति धनस्थानमें हो तो वह पुरुष कृपण, कटुभाषी, विकल, नष्टबुद्धि होता है, मङ्गल हो तो राजा वा चोरसे धनका व्यय हो, चतुष्पदोंमें पाप करनेवाला होता है २।

विगतबन्धुजनः खलपूजितो व्ययपतौ सहजस्थलगे सति।
धनयुतोऽपि भवेन्मनुजः क्षितौ कृपणबन्धुजनानुरतः सदा ॥३॥

जो व्ययपति तीसरे हो तो वह पुरुष बंधुजनोंसे हीन, खलोंसे सत्कृत होता है, धनसे युक्त होकर भी कृपणता युक्त, बंधुजनोंसे अनुरक्त, सुभग शरीरवाला होता है ॥३॥

कठिनकर्मयुतः शुभकर्मकृद्व्ययपतौ सुखगे च सुखान्वितः ।
सुतजनान्मरणं च दृढव्रती दिविचरे स भवेदुपकारकः ॥४॥

जो व्ययेश चौथे हो तो वह पुरुष कठिन कर्मसे युक्त, अच्छे कर्मोंका करनेवाला सुखी होता है तथा सुतजनोंसे मरण पानेवाला, दृढ़ संकल्पवाला होता है ॥४॥

तनयगेऽपि खलस्तनयो भवेद्व्ययपतौ तनुतेऽथ खलान्विते ।
शुभखगेतिशुभं पितृकं धनं भवति चापि समर्थतयाऽन्वितः ॥५॥

जो व्ययेश पंचम हो तो उसका पुत्र दुष्ट होता है जब कि अशुभ ग्रह हो तो और शुभ ग्रह हो तो शुभ पुत्र सामर्थ्य युक्त पिताके धनको भोगता है ॥५॥

व्ययपतौ रिपुगे कृपणः खलः खलखगे नियतं नयनामयम् ।
परगृहाश्रयिणो भृगुपुत्रतो गतसुतः शुभबुद्धियुतो भवेत् ॥६॥

यदि बारहवें स्थानका अधिपति छठे हो तो वह पुरुष कृपण खल होता है क्रूर ग्रह हो तो नेत्रोंमें रोग हो पराये घरमें रहनेवाला हो, जो शुक्र हो तो पुत्रहीन आप बुद्धिमान् होता है ॥६॥

भवति दुष्टमतिश्च गृहाग्रणीः कपटदुष्टदुराचरणः खलः ।
खलखगे मदगे व्ययभावपे खलखगे गणिकाधनवान्कुधीः ॥७॥

जिसके बारहवें स्थानका अधिपति सप्तम हो तो वह मनुष्य दुष्टमति और अपने गृहमें प्रधान हो तथा कपटी दुष्ट और दुराचारी हो यदि खल ग्रह हो तो वेश्यासे धन मिले और क्रूर बुद्धिसे युक्त होता है ॥७॥

निधनपे व्ययपेष्टकपालकः सकलकार्यविवेकविवर्जितः ।
भवति निन्दित एव तथा शुभे दिविचरे धनसंग्रहतत्परः ॥८॥

जो व्ययपति अष्टम हो तो वह पुरुष अष्टकपाल हो तथा संपूर्ण कार्य और विवेकसे रहित हो जो खल ग्रह हो तो यह फल कहना और शुभ ग्रह हो तो वह पुरुष धनके संग्रहमें तत्पर होता है ॥८॥

सुकृतकृद्व्ययपे नवमाश्रिते वृषभगोमहिषीद्रविणः सुधीः ।
भवति तीर्थविचक्षणपुण्ययुक्खलखगेपि च पापरतो नरः ॥९॥

जो व्ययपति नवमस्थानमें स्थित हो तो वह पुरुष वृषभ गौ महिषी धनसे युक्त सुबुद्धिमान् तीर्थविचक्षण पुण्य युक्त होता है, दुष्ट ग्रह हो तो पापमें रत होता है।९॥

सुतयुतो धन संग्रहतत्परः परजनानुरतः परकार्यकृत् ।
व्ययपतौ दशमे जननीखलो भवति दुर्वचनानुरतः सदा ॥१०॥

जो व्ययपति दशवें स्थानमें हो तो वह पुरुष पुत्र युक्त, धनके संग्रहमें तत्पर, अन्य मनुष्योंमें अनुरक्त तथा उनके कार्य करनेवाला, मातामें दुष्ट और दुर्वचनमें अनुरक्त होता है ॥१०॥

धनयुतो बहुजीवितयुक्पुमान्गतखलः प्रमदश्च उदारधीः ।
व्ययपतौ भवगे सति सत्यवावसकलकार्यकरः प्रियवाग्भवेत् ॥११॥

जो व्ययपति बारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष बहुजीवी, हर्ष युक्त उदार बुद्धि तथा खल हो, और सत्यवाक् संपूर्ण कार्यकर्ता, प्रियवाणी बोलनेवाला होता है ॥११॥

भवति बुद्धियुतः कृपणः खलः परनिवासरतः स्थिरकार्यकृत् ।
पशुजनैश्च रतो बहुभोजनो व्ययपतौ व्ययगे सति मानवः ॥१२॥

जो बारहवें स्थानका पति बारहवें स्थानमें हो तो वह पुरुष कृपण तथा दुष्ट स्वभाव, पराये स्थानमें रहनेवाला, स्थिर कार्यकर्ता, पशुजनोंमें रत तथा बहुत भोजन करनेवाला होता है ॥१२॥ इति व्ययभावेश फलम् ॥

अथ दृष्टिफलम्

सूर्यदृष्टिफलम्

द्वादशे दिनकृता निरीक्षिते स्थानभङ्गमपि चान्यवाहनम् ।
वाहनाच्च खलु शृङ्गितो भयं द्वादशाब्दमथ कष्टजीवितम् ॥१॥

बारहवें स्थानमें सूर्यकी दृष्टि हो तो उस पुरुषका स्थानभंग हो औरके वाहनपर चढनेवाला हो. सवारीसे भय, सींगवाले जीवोंसे भय हो बारहवें वर्षमें कष्टसे जीवे १

चन्द्रदृष्टिफलम्

व्ययगृहे सति चन्द्रनिरीक्षिते पितृसुखं न करोति नरस्य हि ।
नयनचंचलता पटुता धनव्ययकरश्च सदानृतभाषकः ॥२॥

जो वारहवें घरमें चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो उस मनुष्यको पिताका सुख नहीं होता, नेत्र चञ्चल हों, चतुर हो तथा धनका व्यय करनेवाला और झूंठ बोलनेवाला होता है ।।२।।

भौमदृष्टिफलम्

व्ययगृहे सति भौमनिरीक्षिते पितृसुखं न करोति नरस्य हि ।
सकलशत्रुविनाशकरः सदा तदपि चान्यजनाद्धि सुखक्षयम् ।।३।।

जो वारहवें स्थानको मंगल देखता हो तो उस मनुष्य को पिताका सुख न हो, सब शत्रुओंका नाश हो और अन्य जनोंके सुखका क्षय हो ।।३।।

वुधदृष्टि फलम्

व्ययगृहे शशिपुत्रनिरीक्षिते व्ययकरश्च सदैव विवाहतः ।
स्वजनबन्धुविरोधमहर्निशं हृदयदुष्टरुजा व्रणवातजा ।।४।।

जो वारहवें स्थानको वुध देखे तो उस पुरुषके विवाहके कृत्योंमें सदा व्यय हो स्वजन और बंधुओंमें प्रतिदिन विरोध रहे, व्रण वातसे उत्पन्न हृदयमें दुष्ट पीडा होती है ।।४।।

गुरुदृष्टि फलम्

व्ययगृहे सुरराजनिरीक्षिते व्ययकरः सुरभूसुरकार्यकृत् ।
सकलकष्टकरो रिपुपीडितः सकलस्वार्थपरः स च बुद्धिमान् ।।५।।

जो वारहवें स्थानको वृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष सदा देव ब्राह्मणोंके कार्यमें व्यय करे सब कष्ट हो शत्रुसे पीडा संपूर्ण स्वार्थपरायण और वुद्धिमान् हो। यह फल शुक्रकाभी जानना ।।५।।

शनि दृष्टिफलम्

व्ययगृहे सति मंदनिरीक्षिते धनविनाशकरो हि धनव्ययम् ।
सुतकलत्रसुखाल्पतयान्वितः समरतो विजयी स भवेन्नरः ।।६।।

वारहवें स्थानको यदि शनि देखे तो उस मनुष्यका धन नष्ट हो जाय, उसको सुतकलत्रका सुख थोड़ा मिले, समरमें विजयी होता है ।।६।।

राहुदृष्टिफलम्

व्ययगृहे सति राहुनिरीक्षिते व्ययविवर्जितदानविवर्जितः ।
समरशत्रुविनाशकरः सदा विकलता च सुखं प्रचुरं भवेत् ॥७॥

जो बारहवें स्थानको राहु देखता हो तो वह पुरुष व्ययरहित हो, दान न करे और समरमें सदा शत्रुका नाश करनेवाला, विकलता और अधिक सुखवाला होता है। यही फल केतुका भी जानना ॥७॥ इति दृष्टिफलम् ॥

अथ वर्षसंख्या

त्रिंशदष्टयुतं धनव्ययरविश्चन्द्रो जलपीडनं पञ्चवेदमितकुंजो धनहरं बाणे व्ययं चन्द्रजः । द्वाविंशत्पंचविंशे धनव्ययगुरुः शुक्रो धनं द्वादशे चत्वारिंशत्पञ्चसंयुततमः केतुः शनिर्हानिदः ॥१॥

सूर्यके ३८ वर्ष धन व्यय हो, चन्द्रमा ४५ वर्ष जलपीडा हो, मंगल ५ वर्ष धन हरण, हो, बुध २२ वर्ष व्यय हो, गुरु २५ वर्ष धन व्यय, शुक्र १२ वर्ष धन हो, केतु शनि राहु ४५ वर्ष हानि देते हैं ॥१॥

अथ व्ययभावविचारः

व्ययालये क्षीणबलः कलावान्सूर्योऽथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ।
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टयुक्ते ॥१॥

जो बारहवें भावमें क्षीण चन्द्रमा वा सूर्य अथवा दोनों ही स्थित हों वा मंगलसे दृष्ट वा युक्त हो तो उसका धन राजा हरण करे ॥१॥

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिता व्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्थां धनसंचयस्य ।
प्रांत्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥२॥

जो बारहवें भावमें पूर्ण चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र स्थित हो तो वह पुरुष धनका संचय करनेवाला होता है। यदि प्रान्त्यमें शनैश्चर स्थित हो और वह मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तो धनका नाश करता है ॥२॥

दोहा—उन्निससौ चौअन सुभग, सम्वत आश्विन मास ।
कृष्ण पक्ष शनि सप्तमी, ग्रंथ पूर्ण सुखरास ।।१।।

गौरिगिरा गणपति शिवा, शम्भु गिरीश मनाय ।
वुध ज्वालाप्रसादने, टीका लिख्यो वनाय ।।२।।

जन्म पत्रको फल सकल, भाख्यो यवन महान ।
सौ मैं भाषामें कियौ, देखहिं सन्त सुजान ।।३।।

खेमराज श्रीसेठजी, विदित सकल संसार ।
तिनके यह अर्पण कियौ, छापहिं करहिं प्रचार ।।४।।

नित प्रति भजिये राम कहु, जै जै सीताराम ।
जिनके सुमिरण ध्यानसे, सिद्ध होत सब काम ।।५।।

इति श्रीमत्पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतहिन्दीटीकायुते बृहद्यवनजातके द्वादशभावविवरणं संपूर्णम् ।